ISSN 2349-6614

सितम्बर, 2018

मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

अजर अमर अटल !

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 16 अंक 7 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

मनमोहक एवं सुगन्धित खुशबु जो आपके जीवन में लायें खुशहाली

250 Products Available

चेतक घोड़ा ® CHETAK HORSE

ISO 9001:2008 CERTIFIED

Archana®

Agarbatti

EXPORT QUALITY Since 1947 AGARBATTI

Registered Office :

ARCHANA AGARBATTI
NAVBHARAT INDUSTRIES

N.H. 76, Airport Road, Glass Factory Choraha,
UDAIPUR - 313001 (Rajasthan)
Customer Care Number : 0294-2492161, 2490899

Mob. : +91-77268 51913

E-mail : sales@archanaagarbatti.com
Website : www.archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

सितम्बर
2018
वर्ष 16, अंक 7

प्रत्यूष

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs
कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुहालका

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 2410659

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

अन्दर के पृष्ठों पर...

6 आपदा

केरल में कुदरत का कहर

8 अनाचार

बच्चियों के घरौंदे बने शोषण के केन्द्र

14 पड़ोस

फौज की पिच पर इमरान का बल्ला

32 चुनावी तैयारी

चुनावी वैतरणी पार करने निकला 'गौरव रथ'

39 व्यंजन

गजानन को लगाएं लड्डूअन का भोग

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

VNP
vijeta
Namkeen

Perfect rising snacks.

VIJETA NAMKEEN PRODUCTS
Main Road Bhupalpura, Udaipur-313001, Rajasthan INDIA,
Contact No. : 0294-2415817, Mob. : 09828555227
E-mail ID. : vijetanamkeen@gmail.com

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

MOUNT VIEW SCHOOL

A Co- Educational English Medium School

1-Shreenath Nagar,
Near Transport Nagar,
Airport Road, Bedwas,
Udaipur-313001
Rajasthan, INDIA.

Web: www.mountviewschool.com
e-mail: mountviewschool2539@gmail.com
Contact Us: 0294 2493599, 098285 89099

यादों में सदैव रहेंगे अटल !

ज़िंदगी भर काल के कपाल पर लिखते-मिटाते, देश की राजनीति के सबसे करिश्माई और लोकप्रिय नेता अटल बिहारी वाजपेयी अब हमारे बीच नहीं हैं। 16 अगस्त की संध्या 5 बजे उन्होंने दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान(एम्स) में अन्तिम सांस ली। अटलजी पिछले एक दशक से मौन थे। काल के कुचक्र ने देश की प्रखरतम वाणी को हमसे छीन लिया था और वे चलने-फिरने में भी लाचार थे। लेकिन उनकी मृत्यु के तुरन्त बाद उनकी लिखी कविताएं देश की जुबान गुनगुनाने लगी। रेडियो-टेलीविजन पर वे जीवन्त हो उठे उनकी हृदयस्पर्शी वाणी को आंखों में आंसू लिए जहां-तहां, सब तरफ जनमानस सुन रहा था। राजनीति को जिम्मेदारी मानने वाले वाजपेयी भारतीय परिदृश्य में उस रामराज्य वाली राजनीति के दूत थे, जिससे भारत का जन-जन जुड़ा है। उदार व्यक्तित्व और प्रखर वाक्शैली के धनी वाजपेयीजी ने अपना राजनैतिक जीवन पण्डित जवाहर लाल नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल में आरंभ किया था। सन् 1957 में उन्होंने पहली बार देश के लोकतंत्र-मंदिर(संसद) में चौखट को नमन कर प्रवेश किया और रचनात्मक विपक्ष के नेता की भूमिका को स्वीकार किया। नेहरू और वाजपेयी विपरीत विचारधारा के बावजूद दोनों ही एक-दूसरे से काफी प्रभावित थे। नेहरू ने तो एक बार यह तक कह दिया था कि - 'यह युवा सांसद देश के प्रधानमंत्री की योग्यता रखता है।' वह दिन भी आया जब नेहरू का कथन सार्थक होते हुए हमने देखा भी और वाजपेयी जी के प्रधानमंत्रित्व काल में देश को मिली दिशा और दृष्टि पर हम गर्व भी कर सकते हैं। वाजपेयी जब जनसंघ के सांसद थे, तब वे नेहरू की विदेश नीति के खासे आलोचक थे, श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा आपातकाल लगाने के बाद हुए चुनाव में देश ने कांग्रेस को सत्ता से बाहर कर दिया और 1977 में मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सत्ता में अटल जी विदेश मंत्री बने तब उनका रूख विदेश नीति को लेकर बदल गया। जिसका जवाब उन्होंने यह कह कर दिया कि - 'तब विपक्ष में था, लेकिन अब नेहरू की कुर्सी पर बैठा हूँ।' विपक्षी दलों का गठबंधन बनाकर देश में पूरे पांच साल तक गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री बनने का श्रेय भी उन्हें दिया जाता है। इससे साफ होता है कि वे अपनी जिम्मेदारी को बखूबी समझते थे और दूसरों को जोड़े रखने की कला में माहिर थे। यहां तक कि विपक्ष को अपनी बात रखने के लिए पूरा मौका ही नहीं देते बल्कि उसे तल्लीनता से सुनते भी थे। एक प्रसंग याद आता है, जब वाजपेयी जी को राज्यसभा में किसी मुद्दे पर चर्चा का जवाब देना था। उस वक्त भैरोंसिंह शेखावत सदन के सभापति थे। यह वह समय था जब सार्वजनिक क्षेत्र की तेल कम्पनियों के कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर हड़ताल पर थे और सदन में वामपंथी पार्टियां वाजपेयी के बोलने से पहले इस मुद्दे को सदन में उठाने को अड़ी थीं। लेकिन सभापति का कहना था कि प्रधानमंत्री जो बात कहने के लिए सदन में आए हैं, पहले वे अपनी बात रखें। इस पर वाजपेयी उठे और बोले - 'पहले श्रमिकों के मामले को लिया जाए और यदि समय बचे तो ही उन्हें अपनी बात कहने का मौका दिया जाए।'

उनमें यह योग्यता थी कि वे विरोधाभासों में भी सामंजस्य बिठा लेते थे। उनके व्यक्तित्व की यह ऐसी खूबी थी, जो उन्हें अपने समकालीन राजनेताओं की भीड़ से अलग करती थी। वाजपेयी जी के लम्बे राजनैतिक जीवन में हम अनोखी निरन्तरता पाते हैं, जो उन्हें जय-पराजय से कहीं ऊंचा उठा देती है। वे आलोचनाओं की ओर नहीं, अपने लक्ष्य की ओर देखते थे। वह जब चाहते, विपक्ष का इस्तेमाल कर लेते। विपक्षियों को भी उनके दरवाजे पर दस्तक देने में संकोच नहीं होता था। राजनीति और सत्ता जहां अनेक सौगातें लाती हैं, वहीं इन्सान को तमाम सीमाओं में भी बांध देती हैं। उसके मानवीय गुण इस चकाचौंध में दब जाते हैं। अटलजी की कविताएं उनके अन्दर के संवेदनशील इन्सान का सही दिग्दर्शन कराती हैं। इनमें कभी वह शिखर के सूनेपन की बात करते हैं, तो कभी यह अरदास करते नजर आते हैं कि उन्हें ऊंचाई कितनी भी नसीब हो जाए, पर वह अपनी नम्रता कभी न छोड़ें। कवि होने के कारण वे विशाल हृदय रहे। जब प्रधानमंत्री बने, स्वयं को सरकार का ट्रस्टी कहा। राष्ट्र के गौरव और सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। सन् 1971 के भारत-पाक युद्ध (बंगलादेश मुक्ति संग्राम) के दौरान उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के कदम की न सिर्फ खुलकर सराहना की, उनका समर्थन भी किया। न किसी दबाव में आए और न कोई प्रलोभन उन्हें अपने दायित्व से डिगा सका। न संकट से विचलित हुए और न अपनों के किसी स्वार्थ का माध्यम बने। जो भी किया, राष्ट्र के हित को ध्यान में रखकर किया। उन्होंने युक्तिपूर्वक कश्मीर को देश की मुख्यधारा में जोड़ने में कामयाबी हासिल कर ली थी। वह जानते थे कि पाकिस्तान से संबंध सुधारना जरूरी है, हालांकि उन्हें मालूम था कि पड़ौसी प्रेम की भाषा नहीं समझता, उसे परोक्ष रूप से समझाने के लिए परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों के दबाव की चिन्ता किए बिना पोकरण में परमाणु व अग्नि-2 जैसे सफल परीक्षण किए गए। कावेरी विवाद हो या कोंकण रेलवे लाइन मसला, सरंचनात्मक ढांचे का विकास हो या सॉफ्टवेयर के लिए सूचना और प्रौद्योगिकी कार्यदल की स्थापना, केन्द्रीय बिजली नियंत्रण आयोग का गठन हो या राष्ट्रीय राजमार्गों और हवाई अड्डों का विकास, टेलीकॉम नीति हो या आवास निर्माण को प्रोत्साहन देने का सवाल, ग्रामीणों के लिए रोजगार के अवसर जुटाना हो या विदेशों में बसे भारतीयों के लिए बीमा योजना। वाजपेयीजी ने पहल कर देश के विकास और गरिमा को नई गति दी। जिस संयम और दृढता से उन्होंने करगिल संकट का सामना किया, उसने उन्हें दुनिया के शीर्ष राजनेताओं की श्रेणी में शुमार कर दिया। युगपुरूष वाजपेयी को देश युगों-युगों तक याद करेगा।

केरल में कुदरत का कहर

-सुनील पंडित

357	07	6.33	3026	40000	1000	26000	21000
से अधिक मौतें	लाख से अधिक लोग बेघर	लाख लोग पीड़ित	राहत शिविर	हेक्टेयर क्षेत्र में फसलें बर्बाद	से ज्यादा घर तबाह	घरों को बारिश के कारण नुकसान	करोड़ का नुकसान राज्य में

केरल में बारिश, बाढ़ और भूस्खलन से 357 से अधिक लोगों की मौत हो गई। पानी से गिरे घरों में लोग फंसे हुए हैं। यहां चारों ओर फैले पानी ही पानी ने विकराल रूप में भयंकर तबाही मचाई। ये हालात इसलिए बने क्योंकि यहां सामान्य से 30 फीसदी अधिक बारिश हुई। राज्य में तकरीबन 2200 मिमी बारिश दर्ज की गई। 1924 के बाद से राज्य में पहली बार इस तरह की भारी बारिश और बाढ़ देखने को मिली। यहां के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि राज्य के 39 डैम में से 35 डैम खोले गए। स्थिति का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि केरल अपना सबसे बड़ा त्योहार 'ओणम' धूमधाम से मनाने में पूरी तरह से असक्षम हो चुका है। फिलहाल वैशाखियों पर टिके केरल की मदद को देश के कोने-कोने से सहायता पहुंच रही है। 3026 राहत शिविर 6.33 लाख बाढ़ पीड़ितों की पनाह स्थली बने है। एक अनुमान के मुताबिक वहां करीब 21 हजार करोड़ का नुकसान हुआ है।

जिम्मेदार कौन?

बड़ा सवाल ये है कि केरल में इस बाढ़ आपदा के लिए किसे उत्तरदायी माना जाए? क्या हम इसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं? क्या जलवायु परिवर्तन इसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं? क्या ग्लोबल वार्मिंग इसके लिए जिम्मेदार नहीं है? केरल उन राज्यों में से एक है जहां मानसून के दौरान सबसे ज्यादा बारिश होती है। लेकिन इस साल भारत के पश्चिमी तट पर निरंतर कम दबाव की स्थिति के चलते राज्य को बाढ़ का सामना करना पड़ा। हाल के विभिन्न अध्ययनों में पाया गया है कि जलवायु परिवर्तन और वनों की कटाई के कारण बारिश में अत्यधिक वृद्धि हुई और इसका परिणाम बाढ़ के रूप में जबरदस्त तबाही के रूप में हुआ। पश्चिमी घाट विशेषज्ञ पैनल के एक सदस्य पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ. वीएस विजयन ने कहा कि केरल मानव निर्मित आपदा से गुजर रहा है। उन्होंने कहा कि यदि गाडगिल समिति की रिपोर्ट को लागू किया जाता तो पारिस्थितिक रूप से नाजुक पर्वत श्रृंखलाओं में इसका प्रभाव सीमित हो सकता था। उन्होंने मानव गतिविधियों और पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में अवैज्ञानिक गतिविधियों को बाढ़ के लिए जिम्मेदार ठहराया। पश्चिमी घाट पर्वतीय श्रृंखला को विश्व में जैव विविधता के 8 सर्वाधिक संपन्न क्षेत्रों में से एक माना जाता है। गुजरात और महाराष्ट्र की सीमा से शुरू होने वाली पश्चिमी घाट श्रृंखला महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, तमिलनाडू और केरल से होकर गुजरती है तथा कन्याकुमारी में खत्म होती है। इस श्रृंखला के वन भारतीय मानसून की स्थिति को प्रभावित करते है। लेकिन केरल में व्यापक

मानवीय दखलंदाजी जलवायु परिवर्तन का कारण बनी और इस तरह की त्रासदी की जन्मदाता बनी। 2010 में केंद्र सरकार ने गाडगिल के नेतृत्व में एक विशेषज्ञ समिति गठित की थी। गाडगिल समिति ने पूरे पश्चिमी घाट के आस-पास खनन, कारखानों और बस्तियों पर प्रतिबंध लगाने का सुझाव दिया था। जब घाट क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले सभी छह राज्यों (केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, गोवा, महाराष्ट्र और गुजरात) ने इस समिति के सिफारिशों का विरोध किया, तो इसरो के पूर्व प्रमुख के कस्तूरीरंगन के तहत एक और समिति गठित की गई थी। कस्तुरीरंगन ने जोनल वर्गीकरण में कुछ बदलाव किए थे और पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों को घटाकर 64 प्रतिशत से 37 प्रतिशत कर दिया। लेकिन उसके बाद भी कई राज्यों ने इसका विरोध किया कि अगर रिपोर्ट लागू हुई तो घाट के किनारे वाले इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए समस्या उत्पन्न हो जाएगी। जाहिर है पर्यावरण से छेड़छाड़ के कारण ही पारिस्थितिक असंतुलन देखने को मिल रही हैं। केरल में बाढ़ का जो भयावह रूप देखने को मिल रहा है उसका कहीं न कहीं संबंध पश्चिमी घाट में हाल के वर्षो में आए बदलाव से जरूर हैं। समय रहते अगर हम इससे सबक नहीं लेते हैं तो इसका खामियाजा बहुत दुखदायी हो सकता है।

500 करोड़ की मदद का ऐलान

राज्य में राहत और बचाव के लिए नौसेना की 42, थल सेना की 16, तटरक्षक बल की 28 और राष्ट्रीय आपदा राहत बल (एनडीआरएफ) की 39 टीमें पूरी शिद्दत के साथ काम जुटी रही। राहत कार्यों में तेजी लाने के लिए केंद्र की तरफ से एनडीआरएफ की 14 अतिरिक्त टीमें केरल भेजी गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बाढ़ प्रभावित इलाकों का हवाई दौरा किया। हालांकि मौसम बिगड़ जाने से उन्हें यह दौरा बीच में ही रद्द करना पड़ा। इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री राहत कोष से राहत और बचाव के लिए 500 करोड़ रुपये की तत्काल वित्तीय सहायता देने की घोषणा की। बाढ़ से मारे जाने वालों के परिजनों के लिए दो लाख रुपये जबकि गंभीर रूप से घायलों के लिए 50 हजार रुपये की मदद करने का ऐलान भी किया है। इधर, इससे पूर्व केंद्रीय गृह मंत्री राजनाथ सिंह ने भी केरल के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का हवाई दौरा किया था। तब उन्होंने राज्य के लिए 100 करोड़ रुपये की वित्तीय मदद की घोषणा की।

मदद को बढ़ाएं हाथ

देश-दुनिया से आर्थिक मदद के साथ-साथ राहत सामग्री भी केरल को पहुंचाई जा रही है। सीएम पिनारायी विजयन ने भी मदद की अपील की है, और कहा है कि जितनी आर्थिक सहायता की जाए कम है। आप भी केरलवासियों की मदद कर सकते हैं। जो लोग केरलवासियों की मदद के रूप में सामान भेजना चाहते है, वे जिलाधिकारियों के इमरजेंसी ऑपरेशन सेंटरों से संपर्क कर सकते है। इसके अलावा सीएम आपदा राहत कोष के जरिये आर्थिक सहायता भी दी जा सकती है। जो कि पूरी तरह इनकम टैक्स से मुक्त होगी। इस रकम को विदेशी योगदान नियंत्रण अधिनियम (2010) से भी छूट मिलेगी।

निःशुल्क नेत्र सेवा प्रकल्प

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई

सोमवार से शनिवार

तारा संस्थान

के नेत्र चिकित्सालय तारा नेत्रालय में निःशुल्क

PHACO पद्धति द्वारा मोतियाबिन्द ऑपरेशन,

नेत्र परीक्षण एवं लेन्स प्रत्यारोपण तथा चश्मे के नम्बर

236, सेक्टर 6, हिरण मगरी (जे.बी. हॉस्पीटल के पास वाली गली),

उदयपुर-313002 (राज.) भारत (+91) 9549399993, 9649399993

बिहार के मुजफ्फरपुर और यूपी के देवरिया में बालिका गृह में बच्चियों से यौन शौषण का मामला

बच्चियों के घरौंदे बने शोषण के केंद्र

-जगदीश सालवी

बिहार के मुजफ्फरपुर और यूपी के देवरिया में बालिका गृह में बच्चियों से यौन शौषण के मामले हमें यह दिखाने के लिए काफी हैं कि असुरक्षित जगहों पर तो लड़कियां असुरक्षित हैं ही, अब सुरक्षित जगहों पर भी वे सुरक्षित नहीं हैं। नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाले खुद अनैतिकता की सारी हदें तोड़ते दिखाई दे रहे हैं, जिनसे चरित्रवान होने की उम्मीद हुआ करती थी, वही चरित्रहीनता के पर्याय बन रहे हैं।

मुजफ्फरपुर में सरकार द्वारा संचालित बालिका गृह (नारी निकेतन) में रहने वाली बालिकाओं के साथ जो कुछ हुआ देश उससे शर्मसार है। यौन शोषण का यह मामला तब प्रकाश में आया जब टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस की सोशल ऑडिट रिपोर्ट में बालिका गृह की कार्य प्रणाली पर गंभीर सवाल उठाए गए। इसके बाद जब बालिकाओं को स्वास्थ्य परीक्षण के लिए ले जाया गया तो डरी-सहमी बालिकाओं में से एक ने इस चौंकाने वाले घिनौने कृत्य का पर्दाफाश किया। खबरों के मुताबिक बालिकाओं ने जो बयान दिए, उनमें बताया कि उन्हें नेताओं और अधिकारियों के घर भेजा जाता रहा है। डरा धमकाकर उनका यौन शोषण किया जाता है। मुंह खोलने पर मारपीट कर हत्या तक कर दी जाती है।

सवाल उठना लाजमी है कि जिन सरकारी संस्थाओं में बालिकाओं को सुरक्षा और सुधार के लिए लाया जाता है, यदि वहीं वे सुरक्षित नहीं हैं और उनके साथ इस तरह की पैशाचिक घटनाओं को अंजाम दिया जाता है तो देश में वे सुरक्षित कहां है? प्रदूषित तथा अविश्वासपूर्ण वातावरण में माता-पिता में अपने बच्चों खासतौर पर बेटियों को लेकर इस चिंता का उठना लाजमी है कि वे इन्हें सुरक्षित रखने हेतु आखिर जाएं तो जाएं कहां? बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का जुमला सुनने में और दूसरों को इसकी हिदायत करने में काफी इंस्पायरिंग लगता है लेकिन सच है कि बेटियों के घरोंदे अभी तक सुरक्षित नहीं हैं। पुलिस ने तीन जून को सेवा संकल्प एवं विकास समिति से जुड़े आठ लोगों

हंसी पर 'कालिख'

मुजफ्फरपुर के जिस बालिका गृह में इस तरह की गतिविधियां चल रही थी वो ब्रजेश ठाकुर का घर था। ब्रजेश ठाकुर प्रदेश के प्रभावशाली लोगों में शामिल है। इस मामले में गिरफ्तार होने के बाद उसकी हंसी बच्चियों के इस दर्द पर नमक छिडक़ने वाली थी। ब्रजेश ठाकुर प्रातःकालीन कमल और न्यूज नेक्स्ट नाम से अखबार भी निकालता है। इसके पिता भी इसी अखबार के धंधे से जुड़े थे। उन पर अखबारों के लिए मिलने वाला सब्सिडी का कागज बाजार में बेचने के आरोप लगे थे और उनके घर पर सीबीआई की रेड पड़ चुकी है। नेताओं की सांठ-गांठ से ब्रजेश के अनैतिक धंधों की सूची लंबी है। वे नेताओं का आश्रय पाकर तो अखबार की गिनती की प्रतियां निकालकर अच्छी खासी रेट से सरकारी विज्ञापन बटोरने में सफल होता रहा। बिहार सरकार की संबद्ध मंत्री और उनके पतिदेव से उसके घनिष्ठ संबंध थे। ठाकुर ने चुनाव भी लड़ा और तबके एक बड़े एनडीए नेता उनके चुनाव प्रचार में भी गए थे। इस मामले में बिहार की समाज कल्याण मंत्री मंजू वर्मा को इस्तीफा देना पड़ा। मंजू के पति चंद्रेश्वर वर्मा और ब्रजेश से नजदीकी के आरोप हैं। दोनों के बीच 19 बार बात होने का खुलासा सीबीआई जांच में हुआ है इधर, पॉक्सो कोर्ट में पेशी के दौरान ब्रजेश पर भीड़ ने कालिख फेंककर उसके खिलाफ अपने गुस्से का इजहार किया।

को गिरफ्तार किया था इनमें ब्रजेश ठाकुर के अलावा किरण कुमारी (चकना, सरैया), चंदा कुमारी (छोटी कल्याणी), मंजू देवी (रामबाग), इंदु कुमारी (संजय सिनेमा रोड, ब्रह्मपुरा), हेमा मसीह (पुरानी गुदरी नगर), मीनू देवी (रामपुर, एकमा) और नेहा (मालीघाट, मिठनपुरा) शामिल हैं। इस मामले में 42 बच्चियों का मेडिकल टेस्ट कराया गया, जिनमें से 29 के साथ यौन शोषण की पुष्टि हुई है।

देवरिया में दोहराया मुजफ्फरपुर कांड

दूसरी उत्तर प्रदेश के देवरिया में नारी संरक्षण गृह से जो चीख-पुकार निकली उससे गत महीने में देश को दूसरी बार स्तब्ध करने वाली घटना के तौर पर देखा गया। इस नारी संरक्षण गृह में लड़कियों को देह व्यापार में लिप्त होने के लिए मजबूर किया गया। संस्थान का एक साल पहले ही लाइसेंस रद्द कर दिया गया था। अवैध तरीके से संचालित हो रहे इस संस्थान की एक बच्ची ने जब जुल्म की जंजीरें तोड़कर महिला थाने पहुंचकर आपबीती सुनाई तो पुलिस की भी नींद उड़ गई। पुलिस फोर्स ने छापा मारकर 24 लड़कियों को संस्थान के नरक से मुक्त करवाया। देवरिया कांड की मुख्य अभियुक्त गिरिजा त्रिपाठी को गिरफ्तार किया गया। त्रिपाठी की प्रशासनिक महकमे में ऊपर तक पकड़ थी। बालिका गृह से

रेस्क्यू की गई बच्चियों ने पुलिस को बताया कि बड़ी दीदी को लेने के लिए हर दिन कार आती थी, जब वह वापस आती तो रोती-बिलखती रहती। हम पूछने का प्रयास करती तो वह बस रोती रहती। उसके हाथ में कभी पांच सौ तो कभी हजार रुपए का नोट थमा होता था। मां विंध्यवासिनी प्रशिक्षण गृह की ओर से संचालित ये वही पालना गृह है जिसमें घोटाले की पुष्टि के बाद 2016 में प्रशासन ने इस संस्था का नाम ब्लैक लिस्ट में डाल दिया था। संस्थान की फंडिंग रोक दी गई। लेकिन फिर भी बिना अनुमति इसी संस्था की ओर से संचालित वृद्धाश्रम पर कार्रवाई करने की किसी ने हिम्मत नहीं जुटाई। मामले के अनुसार वर्ष 2012 में तत्कालीन डीएम रविकांत के फोन पर किसी ने बालिका गृह की शिकायत भेजी थी। डीएम ने जांच के आदेश दिए तो दर्जनों गडबडियां सामने आई। लेकिन गिरिजा अपने ऊंचे रसूख के चलते जांच अधिकारी को ही धमकियां देती रही। जांच में सामने आने तथ्यों को मिटाने की कोशिश की। यहां तक की जांच से जुड़े एक अधिकारी का भी तबादला करवा दिया। स्थानीय लोग बताते है कि ये सब खेल इसलिए चलता रहा क्योंकि गिरिजा के बालिका गृह में अक्सर बड़े अधिकारियों और कर्मचारियों का आना-जाना लगा रहता था। इसी बात को लेकर इलाहाबाद हाइकोर्ट ने भी इस कांड के पीछे छिपे चेहरों को बेनकाब करने के आदेश दिए। बताया जाता है कि गिरिजा त्रिपाठी की प्रशासनिक महकमों में भी अच्छी पकड़ थी। अपने रसूख के ही बूते उसने 2013 में गोरखपुर के प्रोबेशन विभाग में अपनी बेटी कंचनलता की परिवीक्षा अधिकारी पद पर नियुक्ति करवा दी। बाल अपचारियों के होम स्टडी रिपोर्ट लगाने के नाम पर कंचनलता रुपए की वसूली करती। मां-बेटी की पूरी कारस्तानी से सभी परिचित होने के बावजूद कोई बाहर इसकी चर्चा नहीं कर पाता था।

...और इधर नाफरमानी

बिहार और उत्तरप्रदेश सरकारें राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा उनके 316 बाल गृहों में सोशल ऑडिट का विरोध कर रही हैं। इसके अलावा हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, केरल, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़ और दिल्ली भी विरोध करने वाले राज्यों में शामिल है। सुप्रीम कोर्ट ने पांच मई 2017 को बाल गृहों की सोशल ऑडिट के आदेश दिए थे। एनसीपीसीआर ने उच्चतम न्यायालय को राज्यों द्वारा सोशल ऑडिट का विरोध करने की जानकारी दे दी। इसके बाद 11 जुलाई को शीर्ष अदालत ने कहा कि ऑडिट का विरोध करने वाले राज्य कुछ छिपा रहे हैं। बता दें कि देश के इन आठ राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में स्थित 2211 बाल गृहों में करीब 43, 437 बच्चे रह रहे हैं। बिहार और उत्तर प्रदेश में 316 बाल गृहों में 7399 बच्चे रह रहे हैं। दूसरी ओर, दोनों घटनाओं के बाद महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने अगले 60 दिनों में देशभर में संचालित 9 हजार से ज्यादा बाल देखभाल गृहों की सोशल ऑडिट करने का आदेश दिया। देश में वर्तमान में 9462 बाल देखभाल संस्थान हैं, इनमें से 7109 पंजीकृत हैं।

राजसमंद : 77 बालिकाएं कहां गई ?

उदयपुर (राज.)। संभाग के राजसमंद जिला मुख्यालय पर स्थित एक होटल में 4 जुलाई को बाल कल्याण समिति व चाइल्ड लाइन की टीम ने पुलिस जाब्ते के साथ छापा मारा। यहां आध्यात्मिक ज्ञान देने के बहाने गोमुख स्कूल संचालित किया जा रहा था। यहां 67 किशोरियों को बालिका गृह शिफ्ट किया। पहले राजसमंद और बाद में उदयपुर में बालिकाओं ने हंगामा कर दिया। अब कुछ दिन पूर्व ही इस मामले में नया मोड़ आया। आयोग व समितियों की ओर से सिरोही और राजसमंद में हुई कार्रवाई तथा जांच में सामने आया कि

77 किशोरियां गायब है, जिनकी स्कूल संचालक ने अब तक कोई तथ्यात्मक जानकारी नहीं दी। सिरोही में इसी स्कूल के निरीक्षण के दौरान 128 बच्चियां थीं।

राजसमंद में कार्रवाई के वक्त मिली 67 बालिकाओं में से 51 बालिकाएं ऐसी थी जो सिरोही से राजसमंद लाई गई। सिरोही से सूचीबद्ध 77 किशोरियां आश्रम राजसमंद में स्थानांतरित होने के बाद यहां नहीं आई। सवाल उठना लाजमी है कि आखिर अब 77 किशोरियां कहा है? इसकी भौतिक रिपोर्ट बाल कल्याण समिति ने हाईकोर्ट में पेश कर दी है।

छलावों की शिकार हिन्दी

– विष्णु शर्मा 'हितैषी'

हिन्दी करोड़ों लोगों की भाषा होने के बावजूद देश में राजभाषा के दर्जे को भले ही तरस रही है, लेकिन इसकी व्यापकता और संप्रेषणीयता ने इसे जन-जन की भाषा बना दिया है। महात्मा गांधी ने कहा था कि 'हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाए बिना देश गूंगा है।' राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन, सरदार वल्लभभाई पटेल, स्वामी दयानंद सरस्वती, रविन्द्रनाथ टैगोर, एनी बेसेन्ट, आचार्य विनोबा भावे सहित अनेक राष्ट्र नेताओं का भी मानना था कि धर्म, भाषा, भूषा, संस्कृति सहित अन्य विविधताओं वाले इस राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोए रखने की क्षमता यदि किसी भाषा में है तो वह हिन्दी है। सेठ गोविन्ददास ने इसके लिए अथक प्रयास भी किये किन्तु स्वतंत्रता के बाद देश को विरासत में मिली अंग्रेजी प्रेमी नौकरशाही ने सभी प्रयासों को निरर्थक कर दिया।

भारत की जनता अंग्रेजी की बजाय अपनी भाषा को बहुत ज्यादा महत्व देती है। इसके द्वारा पढ़े जाने वाले समाचार पत्र-पत्रिकाएं और टेलीविजन के कार्यक्रम इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण भी हैं। बावजूद इसके स्वराज और स्वदेशी के नारे पर सवार देश के नेताओं ने शासन, व्यापार, कानून, शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, विज्ञान और अन्य सभी महत्वपूर्ण मामलों में चतुराई और चालाकी से अंग्रेजी के वर्चस्व को कायम रखा। तर्क यह दिया जाता रहा कि शिक्षा और वैज्ञानिक प्रगति की होड़ में यदि विश्व समुदाय के साथ कदमताल नहीं की गई तो देश पिछड़ जाएगा। अतएव अंग्रेजी का हर स्तर पर इस्तेमाल जरूरी है।

दरअसल यह सोच उस शिक्षा व्यवस्था की है, जिसे गुलाम भारत में लार्ड मैकाले द्वारा लादा गया था और उसी पैटर्न पर अफसर तैयार होते रहे और हो रहे हैं, नतीजा यह है कि वे आज भी 'लोकसेवक' के रूप में जनता से तादात्म्य स्थापित नहीं कर पा रहे हैं। वे न जनता को सरकार की योजनाओं को ठीक से समझा पा रहे हैं और न ही जनता की बात समझ पा रहे हैं। यह सब इसलिए है कि हम आज तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति को स्वरूप नहीं दे पाए। केन्द्र सरकार में ही आजादी के बाद लगातार हिन्दीकी उपेक्षा होती रही है। शीर्ष अधिकारी, वैज्ञानिक, विशेषज्ञ और निर्वाचित जन प्रतिनिधि सब के सब शासकीय गलियारों में पहुंचते ही अंग्रेजी के रंग में रंग जाते हैं। वे ही क्यों नीति-निर्धारक दोनों निर्वाचित सदनों में आज भी ज्यादातर बहस अंग्रेजी में ही हो रही है। न्याय के मंदिरों में लिखे जाने वाले निर्णयों की भाषा भी अंग्रेजी ही होती है। नतीजतन प्राय: आक्रोश, आन्दोलन और हिंसा की स्थितियां जहां-तहां देखने को मिलती हैं।

जो लोग यह तर्क देते हैं कि प्रगति के लिए अंग्रेजी पहली आवश्यकता है, अथवा सार्वभौम विश्व में अपनी उपस्थिति देकर लाभ उठाना है तो यह काम अंग्रेजी को व्यवहार में लाए बिना संभव नहीं है। इस तरह का तर्क देकर वे अपने अंग्रेजी प्रेम का इज़हार तो कर सकते हैं, सच्चाई से उनके तर्क का दूर तक कोई लेना-देना नहीं है।

यदि ऐसा ही होता तो विश्व भर में सभी चोटी के देश अंग्रेजी में ही काम कर रहे होते, मगर ऐसा नहीं है। विज्ञान और आधुनिकीकरण के क्षेत्र में जर्मनी-जापान सहित ऐसे दर्जनों राष्ट्रों के नाम लिए जा सकते हैं, जो अपनी भाषा में काम करते हुए विविध क्षेत्रों में सफलता का परचम फहरा रहे हैं। सभी वैज्ञानिक जानकारियां उन्हें अपनी भाषा में उपलब्ध हैं। इन देशों की प्रगति अथवा इनके द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में दिये गये योगदान पर सवाल नहीं उठाया जा सकता।

भारत के नीति-नियामक यदि सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की सफलता के लिए गर्व करते हुए इसका श्रेय यदि अंग्रेजी को देते हैं तो वे गलतफहमी का शिकार हैं। विश्व की प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी कम्पनियों में से एक सेमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स कम्पनी दक्षिणी कोरिया की है, जिसमें कोरियन भाषा का प्रभुत्व है। करीब पचास साल पहले स्थापित यह कम्पनी आज अपने उत्पाद की बिक्री के मामले में अंग्रेजी प्रभुता वाले राष्ट्रों की कम्पनियों को मीलों पीछे छोड़ चुकी है। अतएव इस भ्रम से उबरना होगा कि वैश्विक सफलता के लिए अंग्रेजी की पतवार से ही नैया पार हो सकती है। राजनैतिक दलों, केन्द्र एवं राज्य-सरकारों ने आजादी के 71 साल बाद तक अंग्रेजी को सकल विकास की आड़ में अपने कंधों पर बहुत ढो लिया, अब मुक्त होना ही श्रेयस्कर होगा। आज देश की अधिकतर आबादी जो गांवों में रहती है, जिनके पास अंग्रेजी का ज्ञान नहीं है। अपने ही देश में पराया महसूस कर रही है। अंग्रेजी की बदौलत ही लोकशाही पर नौकरशाही हावी है।

प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को हम और हमारी सरकार हिन्दी दिवस के आयोजन कर औपचारिकता का निर्वाह तो कर लेते हैं लेकिन क्या कभी उन उपायों की ज़रूरत भी महसूस की अथवा इस बात के प्रयास किए कि हिन्दी समेत सभी भारतीय भाषाएं भेदभाव की शिकार न हों और उन्हें वह गौरव-सम्मान मिले जिनकी वे हक़दार हैं। अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी में कामकाज को अपनाकर हम पूरे देश में अलग-थलग पड़े उस समाज का आत्मविश्वास आसानी से बढ़ा सकते हैं, जो अवसरों के अभाव से जूझ रहा है और जिसके चलते बार-बार आरक्षण की मांग उठती है। यदि हमें 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का निर्माण करना है तो हिन्दी व सहयोगी भाषाओं को दैनन्दिन व्यवहार में लाना ही होगा।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

राज्य अनेक, राष्ट्र एक।
पंथ अनेक, लक्ष्य एक।
बोली अनेक, स्वर एक।
भाषा अनेक, भाव एक।
रंग अनेक, तिरंगा एक।
समाज अनेक, भारत एक।
रिवाज अनेक, संस्कार एक।
कार्य अनेक, संकल्प एक।
राह अनेक, मंजिल एक।
चेहरे अनेक, मुस्कान एक।।

“आइए हम सब मिलकर एक नए भारत का निर्माण करें। एक ऐसा भारत जिस पर देश की आज़ादी में अपना योगदान देने वाले हमारे वीर स्वतंत्रता सेनानियों को गर्व महसूस हो।”

- नरेन्द्र मोदी

72वां स्वतंत्रता दिवस

davp 22202/13/0006/1819

फौज की पिच पर इमरान का बल्ला

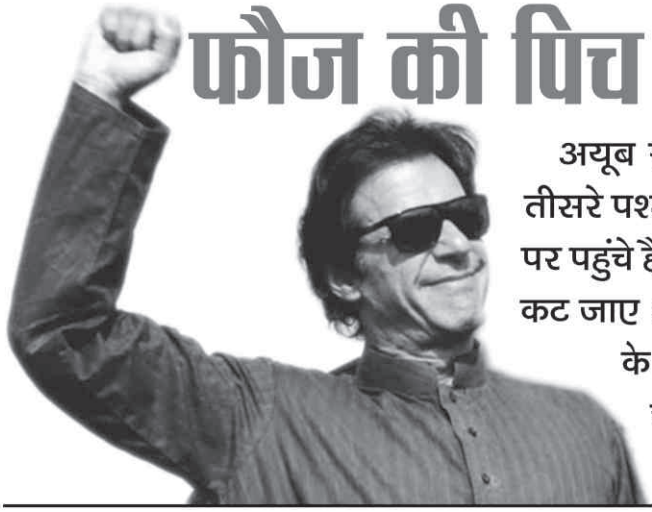

अयूब खान और याहिया खान के बाद इमरान खान तीसरे पश्तून हैं, जो पाकिस्तान के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर पहुंचे हैं, फौज की शह पर पतंग उड़ तो चली है, पर कब कट जाए भरोसा नहीं, इमरान के लिए बड़ी पार्टी के नेता के रूप में सरकार बनाना तो आसान हो गया, पर चलाना बेहद ही मुश्किल होगा।

– उमेश शर्मा

पाकिस्तान में चुनाव पूर्व सेना की लिखी स्क्रिप्ट साकार हुई। नवाज शरीफ को हटाकर इमरान खान को पाक के तख्त-ए-ताउस पर बिठाने के लिए भले ही लोकतांत्रिक दिखने वाले तरीके से चुनाव करवाए गए, लेकिन पर्दे के पीछे किंगमेकर की भूमिका सेना की ही थी। आईएसआई और पाक सेना पर चुनाव पूर्व ही इमरान की जीत सुनिश्चित करने के आरोप लगते रहे। पूर्व आर्मी चीफ राहिल शरीफ और नवाज शरीफ के बीच मतभेद की बात आई तब ऐसा लग रहा था कि सेना नवाज की सल्तनत उखाड़ फेंकेगी लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वजह ये भी मानी जा रही है कि अमेरिका ने कड़े शब्दों में पाकिस्तान से कहा था कि वहां लोकतांत्रिक तरीके से चुनी हुई सरकार दिखनी चाहिए। शायद इसी दबाव में एक और तख्तापलट नहीं हुआ वहां। हालांकि बाद में नवाज अदालत के रास्ते से निकल लिए। यानी नवाज को निपटाने में सेना पर्दे के पीछे रही। नवाज सेना का मोहरा बने रहने को तैयार नहीं थे। भारत और अफगानिस्तान से रिश्ते जैसे अहम मुद्दों पर नवाज की राय सेना से बिल्कुल अलग थी। वे दोस्ती के पक्ष में थे। रिश्ते सुधारने के हिमायती थे। जब सेना के लिए नवाज को संभालना मुश्किल हो गया, तो उसने उन्हें रास्ते से ही हटाने का मानस बनाया और इसके लिए अदालत का सहारा लिया। न्यायपालिका पर दबाव बनाकर मन मुताबिक फैसला करवाया। इस्लामाबाद हाईकोर्ट के एक जज ने खुलेआम ये बात कही है कि आर्मी और आईएसआई ने मीडिया और कोर्ट को मैनेज कर लिया है। सेना की धांधली और पूरे पाकिस्तान में फैले पश्तूनों ने इमरान खान को इस्लामाबाद में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस चुनाव में नेशनल असेंबली में इमरान की पार्टी सबसे बड़े दल के तौर पर उभरी, जबकि खैबर पख्तूनख्वा में पार्टी दोबारा सत्ता में आई है। अयूब खान और याहिया खान के बाद इमरान खान तीसरे पश्तून हैं, जो पाकिस्तान के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर पहुंचे हैं। उन्होंने 18 अगस्त को पाकिस्तान के 22 वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। समारोह में क्रिकेटर से राजनेता बने नवजोत सिंह सिद्धू भी पहुंचे। सिद्धू के पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा से गले मिलने और शपथ समारोह में पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) के राष्ट्रपति मसूद खान के बगल वाली सीट पर बैठने से सोशल मीडिया पर बवाल मचा हुआ है। पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिन्दर सिंह ने सिद्धू की इस भूमिका को निजी बताते हुए आलोचना की है। सिद्धू कहते हैं कि मैं भावुक हो गया था, उन्हें शर्मा आनी चाहिए थी जो सेनानायक हमारे जवानों पर गोलियां दाग रहा हो, उससे गलबहियां करना उनके लिए भावुकता का क्षण कैसे हो सकता है ? 18 अगस्त को सुबह इमरान खान के शपथ ग्रहण से पहले पाकिस्तान ने

हानिकारक नए निजाम

पाक सेना और ISI का प्लान था कि अगर इमरान खान की पार्टी बहुमत में आती है तो हाफिज सईद के समर्थन वाले उम्मीदवारों की पार्टी अल्लाह-हू अकबर तहरीक की समर्थन से सरकार बनाएगी। पाक सेना इसलिए भी इमरान पर दांव खेल रही थी क्योंकि पूर्व में नवाज शरीफ की पार्टी (पीएमएल-एन) और पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी दोनों ही भारत के साथ रिश्ते सुधारने पर जोर दे चुके हैं। जबकि चुनावी रैलियों में इमरान के भाषणों में बार-बार 'भारत और मोदी को प्यारे हैं नवाज' सुनाई दे रहे थे। इमरान भारत के लिए हानिकारक इसलिए भी हैं क्योंकि उन पर सेना और ISI के साथ सांठगांठ के आरोप लग चुके हैं। इमरान ने लोगों को यह कहते हुए उकसाया कि, 'भारत और मोदी को नवाज प्यारे हैं' लेकिन वे हमारी सेना से नफरत करते हैं। विश्लेषकों का मानना है कि पाक सेना भारत से संबंध नहीं सुधारना चाहती है इसलिए वो इमरान में सत्ता को लाकर अपना गंदा खेल खेल रही है। इधर, इमरान खान भी नवाज शरीफ को आधुनिक मीर जाफर कह मोदी की भाषा बोलने वाला बता चुके हैं। इमरान ने अपने पूरे कैंपेन में काफी उग्र तरीके से कश्मीर का मुद्दा उठाया है। भारत को कश्मीर में हिंसा का जिम्मेदार बताया है। यहां तक कि भारत की सर्जिकल स्ट्राइक के बाद इमरान ने काफी तीखे तेवर दिखाते हुए कहा था कि 'मैं नवाज शरीफ को बताऊंगा कि मोदी को कैसे जवाब देना है।' अब जिस तरह से इमरान ने भारत के खिलाफ पाकिस्तानी जनता को अपना स्टैंड दिखाया है, वह इसी ओर इशारा कर रहा है कि उनकी नीति भारत के लिए हानिकारक हो सकती है।

एलओसी पर गोलीबारी की। ऐसे में सिद्धू का पाकिस्तान के आर्मी चीफ से गले मिलना और उनसे हाथ-मिलाना कइयों को रास नहीं आया है। इसको लेकर सोशल मीडिया पर उन्हें ट्रोल भी किया गया।

इमरान का 'तालिबान खान' कनेक्शन

पाकिस्तान में भी एक उदारवादी धड़ा बसता है। इस धड़े के बीच पिछले कुछ सालों से इमरान खान एक अलग नाम से भी जाने जाते हैं। यह नाम है 'तालिबान खान'। दरअसल पाकिस्तान के कट्टरपंथी धड़ों का समर्थन करने की वजह से इमरान को यह नया नाम मिला है। 2013 में अमरीकी ड्रोन हमले में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) का कमांडर वली-उर-रहमान मारा गया था। उस समय इमरान ने उसे 'शांति समर्थक' के खिताब से नवाजा था। इमरान का यह तालिबान प्रेम पिछले सालों में इस कदर सार्वजनिक रहा है कि गार्जियन की रिपोर्ट के मुताबिक उत्तर पश्चिम प्रांत खैबर पख्तुनख्वा में उनकी प्रांतीय गठबंधन सरकार ने 2017 में हक्कानी मदरसे को 30 लाख डॉलर की मदद दी।

नस्ल, प्रांत और जाति के आधार पर चुनाव

चुनाव में एक छिपा संदेश भी है। पाकिस्तान के चारों राज्यों में वोटिंग खुलकर नस्ल, प्रांत और जाति के आधार पर हुई। बलोचिस्तान में स्थानीय बलोच जनजातियों की पार्टी बीएपी और बीएनपी अच्छी सीटें हासिल करने में सफल रही। पश्तून बहुल खैबर पख्तूनख्वा पूरी तरह से इमरान के साथ खड़ा रहा। सिंधी पूरी तरह से बिलावल भुट्टो जरदारी के साथ रहे। इस बार हालात यह हो गए कि भुट्टो की पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी राष्ट्रीय पहचान खोकर सिंधियों की पार्टी बन गई। कराची में नस्ल के आधार पर भी वोटिंग हुई। भारत से गए उर्दू भाषी मुस्लमानों को चुनावी जंग में खैबर पख्तूनख्वा से आए पश्तूनों ने पराजित किया। पश्तूनों के सपोर्ट से कराची शहर से इमरान खान की पार्टी नेशनल असेंबली और प्रांतीय असेंबली की सबसे ज्यादा सीटें जीतीं। पंजाब में इमरान खान ने सेंध तो लगाई, पर नवाज शरीफ की पार्टी मुस्लिम लीग (एन) ने अपनी इज्जत बचा ली। शरीफ की पार्टी को नेशनल असेंबली की ज्यादातर सीटें पंजाब से ही मिली। पंजाब प्रांतीय असेंबली में भी नवाज की पार्टी सबसे बड़े दल के रूप में सामने आई।

पिच से सियासी मैदान तक हिट इमरान

इमरान का जन्म पाकिस्तान के लाहौर में 5 अक्टूबर 1952 को हुआ। सियासत में कदम रखने से पहले वे क्रिकेटर थे। उन्होंने अपनी कप्तानी में पाकिस्तान को क्रिकेट का वर्ल्डकप जीताया। इमरान ने क्रिकेट से संन्यास लेने के 4 साल बाद ही राजनीति में आने का फैसला लिया। अप्रैल 1996 में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ नाम से राजनीतिक पार्टी बनाकर पहली बार चुनाव लडने उतरे तो क्लीन बोल्ड हो गए। हालांकि उसके बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी और संघर्ष करते रहे। 17 साल के संघर्ष के बाद 2013 के चुनाव में उनकी पार्टी पाकिस्तान में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी बनी। पार्टी गठन के 22 साल के बाद 2018 के आम चुनाव में पीटीआई सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी। इमरान खान की निजी जिंदगी में काफी विवाद रहे हैं। वे युवावस्था में लड़कियों के बीच काफी पॉपुलर रहे हैं। कई लड़कियों के साथ उनके अफेयर की चर्चाएं भी होती रही।

उन्होंने पहली शादी 1995 में जेमाइमा गोल्डस्मिथ से की, लेकिन 9 साल बाद दोनों अलग हो गए। दूसरी शादी 2015 में ब्रिटिश-पाकिस्तानी पत्रकार रेहम खान से की। दुर्भाग्य से ये रिश्ता भी लंबा नहीं चल पाया और 10 महीने बाद तलाक हो गया। तीसरी शादी 2018 में बुशरा मानेका से की, जिनके साथ वो फिलहाल जिंदगी जी रहे हैं।

आतंकी हाफिज का नहीं खुला खाता

आतंकवादी हाफिज सईद की पार्टी अल्लाह-हू-अकबर का खाता भी नहीं खुला। जबकि उसने चुनावों में बड़ी संख्या में उम्मीदवार उतारे थे। सईद का बेटा भी चुनाव मैदान में था। पाकिस्तान चुनाव में हाफिज सईद ने में खुलेआम भारत विरोध के नाम पर वोट मांगे थे। इस बार के चुनाव में पाकिस्तान की परंपरागत मजहबी पार्टियों को आतंकवादी और जिहादी संगठनों से खतरा था क्योंकि आतंकी संगठनों ने चुनाव में प्रांतीय और राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी संख्या में उम्मीदवारों को उतारा था। यही नहीं अधिकतर आतंकवादी संगठनों ने मुखौटा दलों से अपने उम्मीदवार चुनाव मैदान में उतारे थे। आतंकी संगठनों की मुखौटा पार्टियों की बात करें तो कट्टरपंथी संगठन सिपा-ए-सहाबा पार्टी से पाकिस्तान राह-ए-हक पार्टी उभरी है। जबकि हाफीज सईद के अगुवाई वाले जमात उद दावा के मुखौटा संगठन के तौर पर अल्लाह-हू-अकबर पार्टी सामने आई है। खादिम रिजवी के नेतृत्व वाली तहरीक लब्बैक पाकिस्तान (टीएलपी) भी मैदान में थी। इसने एमएमए गठबंधन से ज्यादा उम्मीदवार उतारे थे। जहां अन्य दलों के नेता चुनाव प्रचार में जुटे थे। वहीं आतंकी संगठन भी ज्यादा से ज्यादा उम्मीदवार जिताने के लिए मतदाताओं को लुभाने और धमकाने में जुटे थे। 25 जुलाई को हुए चुनाव में कई कट्टर मौलवियों सहित 12,570 उम्मीदवार मैदान में थे।

शिक्षकों के आदर्श 'सर्वपल्ली'

बिना शिक्षा के इंसान कभी भी मंजिल तक नहीं पहुंच सकता। इसलिए इंसान के जीवन में एक शिक्षक होना बहुत जरूरी है।

देश के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजनीति में आने से पहले आदर्श शिक्षक के तौर पर देश की नब्ज टंटोलने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने उस वक्त के हालात देखकर लोगों को शिक्षित होने के लिए प्रेरित किया। वे शिक्षकों को भी समाज का आदर्श बनने की प्रेरणा देते थे। सन् 1962 की बात है, जब राधाकृष्णन भारत के राष्ट्रपति बने। एक बार कुछ विद्यार्थियों ने 5 सितंबर को उनका जन्मदिन मनाने का निवेदन किया। तब उन्होंने जवाब में कहा कि 5 सितंबर को मेरा जन्मदिन मनाने के बजाय क्यों नहीं आप शिक्षकों के उनके महान कार्य और योगदान को सम्मान देने के लिए इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाएं। उनके इतना कहने के बाद पूरे भारत भर में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाने की रवायत चल पड़ी। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888को चेन्नई से 64 किमी दूर तिरुत्तनि में हुआ था। राधाकृष्णन का परिवार कभी 'सर्वपल्ली' नामक ग्राम में रहता था और 18वीं शताब्दी के बीच तिरुत्तनि में रहने का फैसला किया। इसी कारण इस परिवार के सदस्य नाम से पहले 'सर्वपल्ली' लगाते चले आए। राधाकृष्णन जब पैदा हुए थे, उस दौर में मद्रास के ब्राह्मण परिवारों में कम उम्र में ही पाणिग्रहण संस्कार संपन्न कराया जाता था। राधाकृष्णन भी इसके अपवाद नहीं रहे। 1903 में 16 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह 'सिवाकामू' के साथ हो गया। उस समय पत्नी की आयु मात्र 10 वर्ष थी। सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने 1902 में मैट्रिक स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद उन्होंने 1904 में कला संकाय परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। दर्शनशास्त्र में एमए के पश्चात् 1916 में वे मद्रास रेजीडेंसी कॉलेज में दर्शनशास्त्र के सहायक प्राध्यापक नियुक्त हुए। बाद में उसी कॉलेज में वे प्राध्यापक भी रहे। डॉ. राधाकृष्णन ने अपने लेखों और भाषणों के माध्यम से विश्व को भारतीय दर्शन से परिचित कराया। सारे विश्व में उनके लेखों की प्रशंसा की गई। राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद्, महान दार्शनिक और एक आस्थावान हिन्दू विचारक थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण सन् 1954 में भारत सरकार ने उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से अलंकृत किया। डॉ. राधाकृष्णन के पिता का नाम 'सर्वपल्ली वीरास्वामी' और माता का नाम 'सीताम्मा' था। उनके पिता राजस्व विभाग में काम करते थे। उनके पिता ने कई कठिनाइयां झेलकर परिवार का पालन-पोषण इस तरह से किया कि पुत्र राधाकृष्ण ने पूरी दुनिया में अपने पिता, कुल और देश का नाम रोशन किया। बचपन में राधाकृष्णन को कोई विशेष सुख-सुविधा नहीं मिली। बावजूद इसके कभी उन्होंने न जिद की और न किसी चीज का मलाल। डॉ॰ राधाकृष्णन स्वतंत्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति थे। इससे पूर्व वे उपराष्ट्रपति भी रहे। राजनीति में आने से पूर्व उन्होंने जीवन के 40 वर्ष शिक्षक के रूप में व्यतीत कर विद्वता की छाप छोड़ी। उनमें एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण मौजूद थे। राधाकृष्णन का कहना था कि शिक्षक उन्हीं लोगों को बनाया जाना चाहिए जो सबसे अधिक बुद्धिमान हों। शिक्षक को मात्र अच्छी तरह अध्यापन करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए अपितु उसे अपने छात्रों का स्नेह और आदर भी अर्जित करना चाहिए। वे कहते थे शिक्षक होने भर से सम्मान नहीं मिलता बल्कि उसे अर्जित करना पड़ता है। उनकी मृत्यु 87 साल की उम्र में 17 अप्रैल 1975 को हुई।

– डॉ. प्रीतम जोशी

'सर' की उपाधि

राधाकृष्णन को 1931 में ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा 'सर' की उपाधि प्रदान की गई। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उसका औचित्य डॉ. राधाकृष्णन के लिए समाप्त हो चुका था। जब वे उपराष्ट्रपति बने तो स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 1954 में उन्हें उनकी महान दार्शनिक व शैक्षिक उपलब्धियों के लिए देश का सर्वोच्च अलंकरण भारत रत्न प्रदान किया।

आगामी अंक में -

- नवरात्रि विशेष
- स्वात घाटी में मुस्काए बुद्ध
- हिन्दीसेवी बाबू भगवती प्रसाद देवपुरा
- आंखों के इशारे पर लिख दी किताब

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

आज़ादी की डोर से चलें प्रगति के छोर तक

72वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग

मॉब लिंचिंग

हीरो बनती भीड़ पर काबू ज़रूरी

– नंदकिशोर शर्मा

राजस्थान के अलवर में सवा साल में तीन लोगों की भीड़ ने पीट-पीटकर हत्या कर दी। सवाल ये है इस तरह की घटनाएं अलवर में ही क्यों होती है? क्या देश में सबसे ज्यादा हिंसक लोग अलवर में ही रहते हैं या फिर सबसे ज्यादा गौ तस्करों के ठिकाने अलवर के आसपास ही हैं? गौ रक्षा और गौ तस्करी के नाम पर हिंसा की वारदातें मेवात के इलाके में पहली बार नहीं हो रही है। लेकिन देश के जनमानस को इस घटना ने तब झकझोरा जब गोरक्षकों ने पहलू खान नाम के शख्स को फुटबॉल की मानिंद उछाल-उछाल कर मारा। उसके थोड़े ही दिन बाद उमर खान को दो गो रक्षकों ने पहले तो पीटा और फिर गोली मार दी। अब अकबर खान उर्फ रकबर खान को भीड़ और पुलिस ने गोरक्षा के नाम पर पीट-पीट कर मार डाला। इस मामले के मूल में बीजेपी के रामगढ़ विधायक ज्ञानदेव आहूजा का विवादित बयान बताया जा रहा है। वे खुलेआम कहते रहे कि 'जिन तीन लोगों को अकबर खान की मौत के मामले में पकड़ा गया है उन्हें छोड़ा नहीं गया तो आंदोलन करेंगे।' इस बयान से समझा जा सकता है कि गाय के नाम पर सियासत जीवन-मरण से कहीं आगे जा चुकी है। हर मौत और गाय की सियासत वोट का गणित बन चुकी है। जिसमें नेता गाय माता की पूंछ पकडक़र वैतरणी पार करना चाहता है। इसमें भले ही कोई डूब रहा हो तो डूबा करे। सियासत का दुपट्टा किसी के आंसुओं से तर नहीं होता। मॉब लिंचिंग के खिलाफ प्रधानमंत्री दुख जताते हैं और कार्रवाई का निर्देश देते हैं, मगर वोटों की जुगत में पार्टी राज्यों में गो रक्षा के नाम पर हत्या में शामिल आरोपियों के साथ खड़ी नजर आती है। दूसरा पक्ष गो तस्करों का भी है। जो पेट भरने के लिए इस धंधे से तौबा नहीं करना चाहते। भले जान चली जाए। ऐसे में ये सिलसिला रुके इसकी उम्मीद कम ही दिखती नजर आती है। दूसरी तरफ पूरे देश में भीड़ के हाथों हत्या यानी मॉब लिंचिंग के मामलों में हुए इजाफे ने बहुतों को परेशान कर रखा है। मार डालने वाली यह भीड़ हीरो बनकर उभरी है। नायक के रूप में ये भीड़ दो अवतारों में दिखाई देती है। पहला, भीड़ बहुसंख्यक लोकतंत्र के एक हिस्से के तौर पर दिखती है जहां वह खुद ही कानून का काम करती है, खाने से लेकर पहनने तक सब पर उसका नियंत्रण होता है। भीड़ खुद को सही मानती है और अपनी हिंसा को व्यावहारिक एवं जरूरी बताती है। अफराजुल व अखलाक के मामले में भीड़ की प्रतिक्रिया और कठुआ व उन्नाव के मामले में अभियुक्तों का बचाव करना दिखाता है कि भीड़ खुद ही न्याय करना और नैतिकता के दायरे तय करना चाहती है। यहां भीड़ (इसमें जान से मारने वाली भीड़ शामिल है) तानाशाही व्यवस्था का ही विस्तार है। भीड़ सभ्य समाज की सोचने समझने की क्षमता और बातचीत से मसले सुलझाने का रास्ता खत्म कर देती है। लेकिन, बच्चे उठाने की अफवाह के चलते जो घटनाएं हुईं उनमें भीड़ का अलग ही रूप देखने को मिलता है। इसमें भीड़ के गुस्से के पीछे एक गहरी चिंता भी दिखाई देती है। बच्चे चोरी होना किसी के लिए भी बहुत बड़ा डर है। ये सोचने भर से लोगों की घबराहट बढ़ जाती है। यहां भीड़ की प्रतिक्रिया के पीछे अलग कारण होते हैं। यहां हिंसा ताकत से नहीं बल्कि घबराहट से जन्म लेती है। इसका मकसद अल्पसंख्यकों को नुकसान पहुंचाना नहीं बल्कि अजनबियों और बाहरियों को सजा देना होता है जो उनके समाज में फिट नहीं बैठते। दोनों मामलों में शक तो होता है, लेकिन मारने का कारण अलग-अलग होता है। एक मामले में अल्पसंख्यकों से सत्ता को चुनौती मिलती है और दूसरे में बाहरी और अनजान पर किसी अपराध का आरोप होता है।

सिर्फ रोटियां ही सेकती रही सरकार

पुलिस में दर्ज आंकड़ों के मुताबिक तीन साल में अलवर जिले के अलग-अलग थानों में 354 गो तस्करी के मामले दर्ज हुए। वर्ष 2015 में 160 प्रकरण दर्ज हुए और इसमें 226 लोगों की गिरफ्तारी हुई। 2016 में 117 मामले गो तस्करी के दर्ज कर 248 लोगों को गिरफ्तार किया। 2017 की बात करे तो 94 प्रकरण दर्ज कर 108 लोगों की गिरफ्तारी की गई। मई 2018 में 39 प्रकरण दर्ज कर 28 लोगों को गिरफ्तार किया। ये आंकड़े बताते है कि अलवर जिले में लगातार हिंसक वारदातें बढ़ रही है।

दो गोदामों से मिली 221 गायों की खाल

अलवर जिले के गोविंदगढ़ कस्बे में खाल के दो गोदामों को खुलवाया तो इनमें 221 गायों सहित कुल 348 पशुओं की खालें और 91 आंतें बरामद हुई। गोदामों से जब्त खालें 10 दिन पुरानी थी। इस घटना से ये ता साफ हो जाता है कि इस क्षेत्र में गोकशी का धंधा भी चरम पर है। लोग इस धंधे को छोडऩा नहीं चाहते है और गोरक्षक पूरी तरह गौमाता की रक्षा में मैदान पर डटे है। सालों का आपसी सौहार्द बरकरार रहे ऐसे में दोनों समुदाय को हल निकालना होगा। वरना धरा अपनों के ही खून से रक्तरंजित हो जाएगी। इधर, इस घटना के बाद मौके पर पहुंचे रामगढ़ के विधायक ज्ञानदेव आहूजा ने गोकशी करने वाले शकील का मकान देखा और फिर घर के बाहर गंगाजल छिडक़ाया। विधायक ने कहा कि गाय में हिंदुओं के 33 करोड़ देवी-देवताओं का निवास होता है। दूसरी ओर जुलूस में आए लोगों ने गोकशी करने वाले शकील के मकान को गोमाता का मंदिर बनाने की मांग भी की।

सियासत के चक्रव्यूह में फंसी गंगा-जमनी तहजीब

हरियाणा-राजस्थान की सीमा से सटे मेवात इलाके में मेव जाति यूं तो सदियों से पशुपालन और काश्तकारी करती आई है। लेकिन अब यह इलाका मॉब लिंचिंग की घटनाओं को लेकर बदनाम है। इसे समझने के लिए हमें यहां के भोगौलिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवेश को समझना होगा। 2013 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने जनता से वादा किया था कि सत्ता में आए तो काऊ पुलिस स्टेशन खोलेंगे। चुनाव जीतने के बाद सरकार ने मेवात इलाके में 22 गोरक्षा पुलिस थाने खोल दिए। मेवात का इलाका राजस्थान और हरियाणा को मिलाकर बनता है, जिसमें राजस्थान का अलवर जिला और हरियाणा का नूह जिला हैं। कुछ दशक पहले तक पहनावा, रहन सहन, बोली बानी, खान-पान यहां तक कि खुशी-गमी के रीति रिवाज सब राजस्थानी या हरियाणवी, बहुत हद तक राजपूतों से मेल खाते थे। हालांकि जब से देवबंद की दीनी जमातें आने लगी हैं इनका परिवेश सब कुछ बदल-बदल गया है। मध्य एशिया की ये नस्ल मेद नाम से शुरू हुई। प्रकृति की पूजा करने वाले आर्यों के कई दलों में से एक मेद कबीले के लोग भी तुर्कमेनिस्तान, किर्गिस्तान, अजर बैजान और ईरान जैसे मध्य एशिया के इलाकों से अफगानिस्तान और सिंध के रास्ते भारत भूमि में आये। वैदिक युग में मेद कहलाने वाले ये लोग जब प्राकृत भाषा के युग तक पहुंचे तो मेद का 'द' अक्षर 'व' में बदल गया और मेद से मेव हो गया। कभी मेवाड़ का नाम भी मेदपाट रहा है। ऐसे में मेवाड़, मारवाड़ और मेवात सभी सहोदर ही प्रतीत होते हैं। भारतीय भूमि पर आने के बाद ये प्रकृति पूजक मेद फिर ईसवी पूर्व पांच सौ साल पहले तक बौद्ध अनुयायी भी हुए। सिंध और कंधार से लेकर सरस्वती और सिंधु नदी के आसपास मेवों की खासी आबादी थी। अरब से आये यात्रियों ने अपने यात्रा वृत्तांत में इन मेदों को बौद्ध बताया है और इन पशुपालक किसानों के पास दो कूबड़ वाले ऊंट होने की बात लिखी है। इतिहास के पन्नों में 512 ईसवी में मीर कासिम का जिक्र आता है जिसने सिंध में बड़ी तादाद में इन बौद्धों को इस्लाम में दीक्षित किया। लेकिन जो इस्लाम में दीक्षित नहीं हुए उनको मजबूत कद काठी और लड़ाका प्रवृत्ति के कारण राजाओं ने सेना में शामिल कर लिया। धीरे-धीरे ये मेव राजपूत हो गए। सारी परंपराएं राजपूती हो गईं। स्थानीय रहन सहन में ये रच बस गए। मीर कासिम के लगभग सवा पांच सौ साल बाद महमूद गजनवी के भांजे सैयद सालार मसूद गाजी ने 1053 से 58 के बीच बड़ी तादाद में इन मेवों का धर्म परिवर्तन कराया। इतिहासकार सिद्दीक मेव के अनुसार अभी भी राजपूतों के 52 गोत्र और 12 पाल मेवों में मौजूद हैं। 12 पाल में पांच पाल यदुवंशियों के, चार पाल गुर्जरों के यानी तंवर या तोमर, दो सूर्यवंशी राजपूतों के और एक चौहानों का है। 52 गोत्र में से 30 गोत्र तो सीधे राजपूतों के हैं। बाकी 22 में गुर्जर, अहीर और जाटों के गोत्र हैं। राजस्थान और हरियाणा के भी कई इलाकों में आज भी शादी ब्याह में दूल्हा-दुल्हन के दरवाजे जाकर राजपूतों की तरह तोरण मारता यानी टीपता है। बच्चा पैदा हो तो कुआं पूजते हैं। शादी ब्याह में मामा के यहां से भात आना, चाक पूजन, उबटन हल्दी चढ़ाना, घोड़ी चढक़र बारात सजाना सब जस का तस। लेकिन अब जैसे-जैसे पहचान का मामला तेज हो रहा है मजहबी कट्टरता बढ़ रही है। वरना तो तीस चालीस बरस पहले तक मेवों के नाम भी अर्जुन, कन्हैया, उदय, रणमल, समंदर जैसे ही होते थे।

बदलने लगी मजहबी फिजाएं

हाल तक ईद-बकरीद के साथ होली-दिवाली मनाने वाले मेव अब बड़ी दाढियां रखने लगे हैं। पगड़ी साफा की जगह गोल टोपी ने ले ली है। धोती पाजामे की जगह तहमद आ गई है। यानी सियासत ने एक बार फिर इस गंगा जमनी तहजीब वाले मेवों को अपने लपेटे में ले लिया है। सदियों पुरानी कला, संस्कृति, बहादुरी और शौर्य गाथाओं से समृद्ध परंपरा दरक रही है। हालांकि इतिहास में मेवातियों की कई कहानियां चोरी, डकैती और अपराध कथाओं से भी कलंकित मिलती हैं। पशुओं की चोरी, लूटपाट और राहजनी के किस्से मेवात में ही नहीं दूरदराज के इलाकों में भी कहे सुनाए जाते हैं। दिल्ली और आसपास के इलाकों में लूटपाट और हत्या करने वाले मेवाती गिरोह कुख्यात हैं। लेकिन सबसे ज्यादा नुकसान अब कट्टरता की वजह से हो रहा है। इन लोगों में शिक्षा का प्रभाव कम है। लिहाजा इन्हें आसानी से बरगलाकर अपराधिक प्रवृत्तियों में फांस लिया जाता है। यहां से आतंकवाद के कई पन्ने भी खुलते हैं। जाहिर है बदलाव सिर्फ धर्म और रहन सहन में ही नहीं बल्कि सोच में भी हो रहा है। बदलाव बुरा नहीं होता बल्कि वो सोच बुरी होती है जो ऊंचा उठाने के बजाय नीचे ले जाए।

मेहरानगढ़ : अनूठा स्थापत्य

– चेतन चौहान

राजस्थान के पर्वतीय दुर्गों में जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग की अनूठे स्थापत्य और विशिष्ट संरचना के कारण पूरे देश में विशेष पहचान है। रणबांकुरे राठौड़ों की वीरता और पराक्रम के साक्षी इस किले का निर्माण जोधपुर के संस्थापक राव जोधा ने 12ई. सन् 1459 को अरावली की विशाल पर्वत श्रृंखला पर करवाया। बाद में किले के चारों ओर अपने नाम पर ही 'जोधपुर' नगर बसाया।

इस किले के चारों ओर सुदृढ़ परकोटा है, जो लगभग 20 से 120 फुट तक ऊंचा और 12 से 20 फीट चौड़ा है। किले का क्षेत्रफल लंबाई में 500 गज और चौड़ाई में 250 गज के लगभग है। इसकी ऊंचाई धरातल में 450 फुट है। इसकी प्राचीर में विशाल बुर्जियां हैं, जो किले को एक अभेद्य दुर्ग का स्वरूप प्रदान करती है। इस दुर्ग के दो बाह्य प्रवेश द्वार हैं। उत्तर-पूर्व में जयपोल तथा दक्षिण-पश्चिम में फतेहपोल। इसमें जयपोल का निर्माण जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने 1808 ई. के आस-पास करवाय था। इसमें लगे लोहे के विशाल दरवाजों को यहां के महाराजा अभय सिंह की सरबलंद खां के विरुद्ध मुहिम में निजाम के अदावत ठाकुर अमर सिंह अहमदाबाद से लूटकर लाए थे, जिन्हें बाद में महाराजा मानसिंह ने उनके वंशजों से लेकर यहां लगवाया। किले के नगर की ओर के प्रवेश द्वार फतेहपोल का निर्माण महाराजा अजीतसिंह द्वारा जोधपुर से मुगल खालसा समाप्त होने के उपलक्ष्य में करवाया था।

राव जोधा की मृत्यु के बाद बीकानेर राज्य के संस्थापक उनके कनिष्ठ पुत्र बीकाजी ने 'राजचिह्न' लेने के लिए सूजा के शासनकाल में जोधपुर पर चढ़ाई की, लेकिन उसकी माता जसमादे द्वारा मेल-मिलाप करवाए जाने पर वह वापस लौट गया।

सन् 1544 में अफगाान शासक शेरशाह सूरी ने जोधपुर के किले पर अधिकार कर लिया और उसमें एक मस्जिद का निर्माण करवाया, लेकिन शेरशाह की मृत्यु के उपरांत राव मालदेव ने जोधपुर पर पुन: अधिकार कर लिया। राव चंद्रसेन के शासनकाल में 1565 ई. में मुगल सूबेदार हसन कुली खां ने इस किले पर फिर से अधिकार कर लिया, परंतु बाद में मुगल आधिपत्य स्वीकार करने पर यह दुर्ग राजा उदय सिंह को जागीर में दे दिया गया। 1674 ई. में महाराजा जसवंत सिंह की काबुल के जामरूद में मृत्यु के बाद दिल्ली के बादशाह औरंगजेब ने जोधपुर पर मुगल खालसा तैनात कर दिया, लेकिन वीर शिरोमणि स्वामीभक्त दुर्गादास राठौड़ के नेतृत्व में राठौड़ सरदारों के लंबे संघर्ष के बाद महाराजा अजीत सिंह ने जोधपुर पर पुन: अधिकार जमा लिया।

इतिहास गवाह है कि उदयपुर की राजकुमारी कृष्णाकुमारी के विवाह संबंधों को लेकर जब विवाद खड़ा हुआ तो राजकुमारी ने विषपान कर लिया तथा जयपुर और जोधपुर के मध्य संघर्ष हुआ और जयपुर के महाराजा जगत सिंह ने 1807 में अपनी विशाल सेना के साथ जोधपुर पर आक्रमण कर किले को घेर लिया व जोधपुर के महाराजा मानसिंह किले में बुरी तरह घिर गए। इस दौरान दोनों ओर से हुए भीषण संघर्ष में महान वीर कीरत सिंह सोढ़ा भी शहीद हुए, जिनकी विशाल छतरी जयपोल के निकट विद्यमान है। लाल पत्थरों से निर्मित और जालियों व झरोखों से सुशोभित मेहरानगढ़ किले के भीतर बने महल स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। विक्रम संवत 1602 में सवाई राजा सूरसिंह द्वारा निर्मित मोतीमहल सुनहरी अलंकरण व सजीव चित्रांकन के लिए प्रसिद्ध है। इसकी छत व दीवारों पर सोने का बारीक काम महाराजा तख्तसिंह ने करवाया था।

संवत् 1781 में महाराजा अभय सिंह ने फूलमहल निर्मित करवाया जो बारीक खुदाई व कोराई के लिए जाना जाता है। किले के भीतरी अन्य प्रमुख भवनों में ख्वाबगाह का महल, तख्तविलास, दौलतखाना, चोखेलाव महल, रनिवास, बिचलामहल, सिलहखाना तथा तोपखाना भी आकर्षण के केन्द्र हैं। दौलतखाना के आंगन में महाराजा तख्तसिंह द्वारा संगमरमर में निर्मित कलात्मक 'सिणगार चौकी' है, जहां जोधपुर के राजाओं का राज तिलक होता था, किले के भीतर राठौड़ों की कुलदेवी नागणेची जी का मंदिर भी है।

जोधपुर की आन-बान और शान के प्रतीक 'मेहरानगढ़ दुर्ग' पर लम्बी दूरी तक मार करने वाली अनेकानेक तोपें भी रखी हुई हैं। अपने कलात्मक एवं नैसर्गिक सौंदर्य के कारण ही मेहरानगढ़ दुर्ग को देखने वाले पर्यटकों में देशी और विदेशी सैलानियों की वर्ष भर भरमार होती है, जो यहां पत्थरों पर की गई कला को देखकर अभिभूत हुए बिना नहीं रहते।

दिल्ली का लोदी स्तंभ

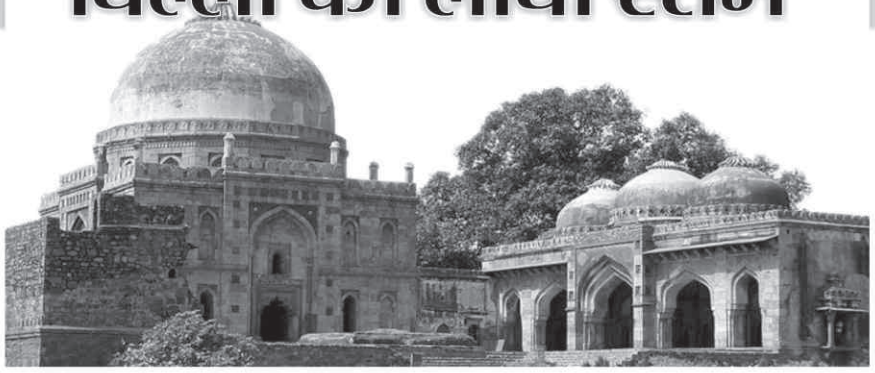

सिकंदर लोदी अपने पिता की मृत्यु 17 जुलाई 1489 के बाद सुल्तान बना था। यह मकबरा सिकंदर लोदी के बेटे और दिल्ली सल्तनत लोदी वंश के अंतिम सुल्तान इब्राहिम लोदी ने अपने पिता की याद में सन् 1517-18 में बनवाया था।यह मकबरा लोदी गार्डन नाम से मशहूर में है। यह गार्डन 90 एकड़ भूमि में फैला हुआ है। लोदी का मकबरा अष्टकोणीय शैली में बनाया गया था। मकबरे के अलावा यहां मुहम्मद शाह का मकबरा भी है। सैयद वंश अंतिम शासक मुहम्मद शाह का यह मकबरा लोदी गार्डन के दक्षिण-पश्चिम में है। इसके अलावा यहां बारा गुम्बद, शीश गुम्बद और एक खूबसूरत लैन्डस्केप्ड लॉन आदि हैं। यहां लोग सुबह-शाम टहलने और व्यायाम के लिए भी आते हैं। पहले इस गार्डन को लेडी विलंगटन पार्क के नाम से जाना जाता था, लेकिन भारत को 1947 में स्वतंत्रता मिलने के बाद इसे लोदी गार्डन नाम से जाना जाने लगा। इस शांत एवं खूबसूरत गार्डन में कई खूबसूरत पेड़, विशेष गुलाब का बगीचा और एक ग्रीन हाउस भी है। यह विभिन्न पक्षियों के आकर्षण का केन्द्र है। विभिन्न विदेशी पक्षी भी आते हैं। यह सुंदर गार्डन इतिहास के साथ-साथ प्रकृति को भी अपने में समेटे हुए है। दिल्ली में यह गार्डन खान मार्केट और सफदरजंग टॉम्ब के बीच में है।

– **भावना जैन**

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

चितौड़गढ़ अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि.

- मिस्ड कॉल अलर्ट सेवा – बेलेन्स जाने मोबाईल नं. : 8866466644
- आईएमपीएस (तुरन्त भुगतान सुविधा)
- मियादी जमाओं पर अधिकतम ब्याज दरें
- ऋणों पर न्यूनतम ब्याज दर
- खाते में तुरन्त मोबाईल नम्बर, आधार व पैन नम्बर जुड़ाएं
- तुरंत (डेबिट कार्ड) सुविधा
- मोबाईल बैंकिंग
- सरलतम प्रक्रिया

श्रीमती विमला सेठिया
चेयरपर्सन

श्री शिवनारायण मानधना
उपाध्यक्ष

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें, इन सुविधाओं की जानकारी के लिए अपनी निकटतम शाखा से सम्पर्क करें।

श्रीमती वन्दना वजीरानी
प्रबन्ध निदेशक

निदेशकगण - हस्तीमल चोरडिया, महेशचन्द्र सनाढ्य, शांतिलाल पुंगलिया, राधेश्याम आमेरिया, विनोद कुमार आंचलियां, आदित्येन्द्र सेठिया, सुनीता सिसोदिया, चांदमल नंदावत, बालकिशन धूत, अभिषेक मीणा, रणजीत सिंह नाहर, सीए बालकृष्ण डाड एवं समस्त अरबन बैंक परिवार।

प्रधान कार्यालय – केशव माधव सभागार, एनसीएम सिटी, चित्तौडगढ़
शाखाएं – चितौड़गढ़, चन्देरिया, बेगूं, निम्बाहेड़ा, कपासन, बडीसादड़ी

सरसों के दाने पर अंकित होगी गीता

■ *साठ बरस की उम्र पार कर चुके मुकुल डे अब एक नए अभियान पर हैं। वे हाथ से बनाई एक छोटी-सी नोटबुक पर तीन अलग-अलग भाषाओं में भगवतगीता अंकित करना चाहते हैं। यह इतनी छोटी होगी कि सरसों के एक दाने पर आ जाए।*

■ *भारतीय फिल्म विभाग ने डे पर एक डॉक्यूमेन्ट्री बनाई है। दूरदर्शन ने मिर्च मसाला का एक पूरा एपिसोड उनके काम पर प्रसारित किया है। डे का संग्रह 12,000 तक पहुंच गया है।*

लघुता में कमाल दिखाने की कला अनोखी होती है। बंगाल के मुकुल डे इस कला के उस्ताद हैं। अपने बड़े-बड़े विचारों को छोटे रूपों में ढालने वाले मुकुल इतनी लघु किताबें और डायरियां बनाते हैं जो किसी बीज या चने पर

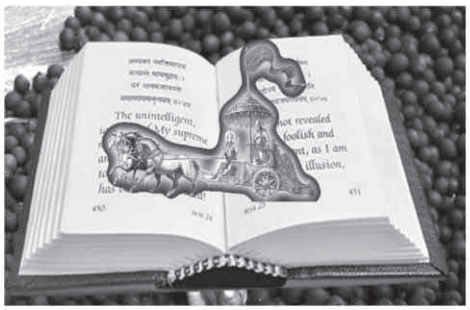

आसानी से चिपक जाए। उनकी इस महारत की चर्चा भारत ही नहीं, परदेस में भी होती है। यह अजीब लग सकता है लेकिन डे पिछले तीन दशकों से अपने दिन का ज्यादातर समय छोटी-छोटी किताबें बनाने में लगाते हैं जिनमें से कुछ के लिए उन्हें देश और विदेश में कई पुरस्कार भी मिले हैं।

साठ बरस की उम्र पार कर चुके डे अब एक नए अभियान पर हैं। वे हाथ से बनाई एक छोटी-सी नोटबुक पर तीन अलग-अलग भाषाओं में भगवत गीता अंकित करना चाहते हैं। यह इतनी छोटी होगी कि सरसों के एक दाने पर आ जाए।

उन्होंने कहा, चार इंच लंबी दो इंच चौड़ी डायरी से लेकर एक इंच लम्बी दो इंच चौड़ी डायरी बनाने के बाद अब मैं केवल 0.35 मिलीमीटर लंबी किताब बना रहा हूं। मैं जानता हूं कि इसकी कल्पना करना मुश्किल है। इच्छापुर ऑर्डिनेंस फैक्ट्री के अपर डिवीजन क्लर्क के तौर पर सेवानिवृत्त हुए डे ने बताया कि यह सब करीब 30 साल पहले संयोग से शुरू हुआ। एक दिन डे की बेटी संचिता की हाथ से बनाई स्कूल डायरी खो गई, जिसे अगले दिन जमा कराना था। उसके पिता ने रातभर वैसी ही डायरी बनाने का वादा किया। उन्होंने कहा, मैंने उस दिन चार इंच लंबी तीन इंच चौड़ी डायरी बनाई जिससे मेरी बेटी के शिक्षक भी बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अपने निजी संग्रह के लिए ऐसी और छोटी-छोटी डायरियां बनाने का अनुरोध किया। लिम्का बुक ऑफ रेकॉर्ड्स ने वर्ष 1993 में उनका काम दर्ज किया। भारतीय फिल्म विभाग ने उन पर एक डॉक्यूमेन्ट्री बनाई है। दूरदर्शन ने मिर्च मसाला का एक पूरा एपिसोड उनके काम पर प्रसारित किया। डे का संग्रह अब 12,000 पर पहुंच गया है और इसमें सरसों के दाने और सूखे चने पर लगी लघु किताबें और नोटबुक शामिल हैं।

वास्तु सेवकों के लिए यूं करें आवास का निर्धारण

आज के युग में मानव जीवन अतिव्यस्त है। कार्य के दबाव में हर व्यक्ति को सहायक-सेवक की जरूरत पड़ती है। घर हो, दुकान या फिर ऑफिस। हर जगह काम के लिए कर्मचारियों की मांग बढ़ती जा रही है। प्रायः घरों, ऑफिसों से ये शिकायत मिलती है कि अच्छे कर्मचारी मिलते नहीं, यदि मिलते भी हैं तो टिकते नहीं। कई प्रतिष्ठानों की शिकायत रहती है कि कर्मचारी कुछ ही समय में नुकसान करके चले गये। इन सबके लिए कहीं वास्तुदोष जवाबदार तो नहीं? मैंने कई नए-पुराने श्रेष्ठी घरों का अवलोकन किया एवं महसूस किया कि जिस पेड़ पर जितने ज्यादा फल होते हैं वह उतना ही ज्यादा झुका होता है। भूमि की पर्याप्त अनुपलब्धता के कारण ऑफिस, फ्लैट छोटे होती जा रहे हैं। इसी छोटी जगह में रहना एवं व्यापार भी करना है। कोठियों में कर्मचारियों को रहने के लिए कहाँ-कहाँ स्थान देना चाहिए उसके क्या-क्या परिणाम हैं। कर्मचारी स्त्री-पुरुष दो तरह के होते हैं। स्थान देते समय बहुत ही सावधानी बरतने की आवश्यकता है। परिणाम वास्तु शास्त्र के परिप्रेक्ष्य में इस प्रकार है - कोठी के वायव्य कोण में सर्वेंट क्वार्टर या कर्मचारी निवास बनाने से कर्मचारी स्थायी नहीं रहते। आते और जाते रहते हैं। पश्चिम के मध्य में बनाने से कर्मचारी रुकते हैं अपना काम सुचारू रूप से करने का प्रयास करते हैं। नैऋत्य कोण में होने से मालिक की आज्ञा कम सुनते हैं अपनी राय ज्यादा रखते हैं। उनके स्वभाव में मालिकाना बर्ताव आ जाता है। दक्षिण के मध्य में रहने से कर्मचारी स्थायी रहने का प्रयास करते हैं। उनकी कार्यशैली भी प्रशंसा के योग्य होती है। अग्निकोण में क्वार्टर होने से कर्मचारियों के अन्दर गुस्सा भरा रहता है। आपस में झगड़ते रहते हैं। मालिक को अप्रिय जवाब देने में नहीं हिचकते। पूर्व के मध्य में रहने वाले कर्मचारी काम मन लगाकर करते हैं मालिक से ईनाम एवं प्रशंसा की उम्मीद ज्यादा करते हैं। ईशान में क्वार्टर में रहने वाले कार्मिक शांत प्रकृति के होते हैं। उत्साह से काम करते हैं। मालिक की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करते। कुबेर स्थान पर होने से कर्मचारी छोटे मुनीम की भूमिका में आ जाते हैं। कोठी के छोटे-मोटे खर्चों का हिसाब उन्हीं के जिम्मे रहता है। वे शांत और स्वामी भक्त होते हैं। वाक्पटुता के कारण स्वामी की नजरों में रहते हैं। प्रत्येक क्वार्टर का आकार वास्तु अनुकूल होना चाहिए, हवा एवं रोशनी पर्याप्त होनी चाहिए।

विशेष अनुरोध : वायव्य कोण में वायव्य बढ़ा हुआ क्वार्टर होने से उसमें रहने वाले कर्मचारी गलत कार्यों में लिप्त होकर मालिक की आर्थिक एवं मानसिक परेशानियाँ बढ़ा देते हैं। अग्नि कोण के क्वार्टर में महिला कर्मचारी रहती हो तो मालिक की परेशानियाँ बढ़ने की संभावना रहती है। सर्वेंट क्वार्टर कोठी के अंदर नहीं होने चाहिए। स्थानाभाव के कारण बेसमेंट में भी सर्वेंट क्वार्टर बनाने लगे हैं। वहां भी वास्तु का निश्चित रूप से ध्यान रखें। घर की खुशहाली में कर्मचारियों का बहुत बड़ा योगदान होता है। सर्वेंट क्वार्टर की साफ-सफाई नियमित होनी चाहिए। वहां गंदगी रहने से नकारात्मक ऊर्जाएं बढ़ जायेंगी एवं कर्मचारी के व्यवहार में फर्क आने लगेगा। श्रेष्ठी का व्यवहार समय एवं परिस्थिति के अनुकूल होने से कोई कर्मचारी नाराज नहीं होगा। आज हर आदमी प्रेम एवं व्यवहार से वश में किया जा सकता है। व्यवहार कुशलता ही सबसे बड़ी उपलब्धि है।

- डॉ. सम्पत सेठी

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

स्वाधीनता दिवस

के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

JK TYRE
& INDUSTRIES LTD.

SELECTED
Superbrand
INDIA 2009-10
CONSUMER VALIDATED

मेवाड़ क्षेत्र से सम्बद्ध प्रदेश के जाने-माने लेखक कवि तरुण कुमार दाधीच और जयप्रकाश 'ज्योतिपुंज' के सद्य प्रकाशित खण्ड काव्य 'मौन स्पंदन' और 'सत्-संकल्प' क्रमशः स्त्री विमर्श और ऐसे तबके के मुक्ति आन्दोलन की गाथा है, जिसने सदियों तक मानव समाज की सेवा की और बदले में घृणा व तिरस्कार का पात्र बनता रहा। दोनों की ही कृतियां **'भाषा विभाषा नियमात्' काव्यं सर्गसमुत्थितम्/ एकार्थप्रवणैः पद्यैः संधि-साग्रयवर्जितम्/ खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैक देशानुसारि च/** खण्ड काव्य परम्परा का पूरी तरह निर्वाह करती है ? दोनों खण्डकाव्यों की भावभूमि पाठकों की दृष्टि को निश्चित रूप से प्रभावित करेगी।

कर्तव्य और त्याग की गाथा

विष्णु शर्मा हितैषी

तरुण कुमार दाधीच के साहित्यिक आलेख और कविताएं 'प्रत्यूष' सहित देश-प्रदेश की नामचीन पत्रिकाओं का हिस्सा रहे हैं। अब तक इनके छह बाल कथा और निबन्ध संग्रह सहित 'अभिव्यक्ति' काव्य संकलन, 'सिमटते दायरे' नाटक भी प्रकाशित हुए हैं। इनका सद्य प्रकाशित खण्ड काव्य 'मौन स्पंदन' खण्ड काव्य परम्परा का पूरी तरह निर्वाह करता है। किसी भाषा या उपभाषा में सर्गबद्ध एवं एक कथा का निरूपक पद्यात्मक वर्णन हो तथा संधियां न हो, वही ग्रन्थ खण्डकाव्य है।

पृष्ठ संख्या: 112
मूल्य: 100/-
प्रकाशक: अनुविंद पब्लिकेशन, उदयपुर

'मौन स्पंदन' में रघुकुल का वह पात्र नायक है, जिसका त्याग और कर्तव्य अग्रज श्रीराम के आभा मंडल से कहीं भी, किंचित मात्र भी कम या गौण नहीं है। उर्मिला और लक्ष्मण के अल्पमिलन और बहुवियोग से उत्पन्न कवि भावनाओं का प्राकट्य है, 'मौन स्पंदन'। **लखन वियोग पर किसी का भी/हाँ! नहीं गया ध्यान/लखन की अगन में गहन तपन/कोई तो दे मानो** हिन्दी साहित्य में स्त्री की विरह-वेदना को लेकर महाकवि कालिदास से लेकर मैथिलीशरण गुप्त और इस बीच और बाद के अनेक कवियों ने अपनी दृष्टि, मति और संवेदी भावों से अनूठे शब्द-चित्र उकेरे हैं। दाधीच के 'मौन स्पंदन' में अग्रज श्रीराम और भाभी माँ सीताजी के साथ वनगमन की हठ करके अनुज लक्ष्मण ने जिस त्याग और भातृत्व प्रेम का परिचय दिया, उसका वर्णन भी विलक्षण ही है। **चौदह साल के वनवास में/मिले उतार-चढ़ाव/कहीं पर भी नहीं हारे लखन/जीते सभी पड़ाव।** नवविवाहिता उर्मिला से दूर रहकर विछोह के चौदह वर्ष जिस तरह लक्ष्मण ने व्यतीत किए, निश्चय ही स्मरणीय और वन्दनीय हैं। उन्होंने अपने दुःख का थोड़ा सा भी अहसास किसी को नहीं होने भी दिया, हालांकि जब-तब उनका मन रो भी पड़ता था। **आह! वेदना व्यथा की/कैसी है यह बात/दिवस तो निकलता व्यस्तता में/रजनी देती घात/...निज की पीड़ा, निज ही जाने/और न जाने कोय/लखन जाकर किससे कहें/कहने से क्या होय/** उनके वनवास प्रवास के दौरान उर्मिला ने जो सहा उसे भी कवि ने जरा भी कम नहीं आंका है। **ना सह पाउंगी विरह व्यथा/नाथ रहेंगे दूर/बोलो कैसे बज पाएंगे/मेरे पैर नुपूर।** उर्मिला के कोमल हृदय को दग्ध करते क्षणों का जो शब्द बिम्ब दाधीच की कलम से उभरा है वही, 'मौन स्पंदन' की विशेषता है।

मानवीय अधिकारों का शंखनाद

ज्योतिपुंज का खण्डकाव्य 'सत् संकल्प' बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के 'महाड़-चंवदार मुक्ति आन्दोलन' पर आधारित है। इसका ऐसे समय पर प्रकाशित होना जब धरती के साथ-साथ इन्सान को बांटने के तमाम धतकर्म जोरों पर हैं। जाति, धर्म और लिंग को लेकर भेद पहले से भी ज़्यादा तीक्ष्ण और स्पष्ट होकर दिखने लगा है। ऐसे में समाज को टूटने से बचाने और इन्सानों के बीच शूद्र स्वार्थों को लेकर दीवारें खींचने के प्रयासों को नाकाम करने तथा अन्याय व शोषण के विरूद्ध जो क्रांति शंख बाबा साहब ने फूंका वैसा ही 'सत् संकल्प' आज भी ज़रूरी दिखाई दे रहा है। इसके लिए रचनाकार व प्रकाशक दोनों ही बधाई के पात्र हैं। आकाशवाणी के उदयपुर केन्द्र में कार्यक्रम अधिशाषी से सेवानिवृत्त 'ज्योतिपुंज' ने हिन्दी, राजस्थानी और बागड़ी बोली में अनेक गद्य-पद्य रचनाएं की हैं।

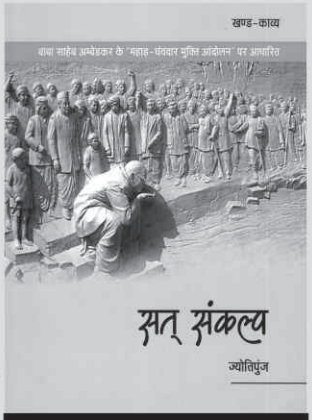

पृष्ठ संख्या: 100
मूल्य: 120/-
प्रकाशक: बोधि प्रकाशन, जयपुर

राजस्थान साहित्य अकादमी के सर्वोच्च 'मीरा पुरस्कार' और राजस्थानी भाषा अकादमी के 'सूर्यमल्ल मिश्रण शिखर पुरस्कार' से सम्मानित ज्योतिपुंज का सद्य प्रकाशित खण्डकाव्य 'सत् संकल्प' बाबा साहेब अम्बेडकर द्वारा महाराष्ट्र के कोलाबा जिले के महाड़ कस्बे में आयोजित दलित वर्ग के सम्मेलन में किए गए एक सच्चे संकल्प पर आधारित है। जिसमें वहां के चंवदार तालाब पर प्रतिबंधित अछूत को भी पानी पीने का अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष का आव्हान किया गया था। ***एक वर्ग पानी पीये/एक वर्ग प्यासा मरे/ऐसी छूआछूत को तो सौ-सौ धिक्कार है। ..... खूब अपमान सह-सह कर काटे दिन/अब न उठे तो पछताओगे/ .... जली हुई रस्सी का बट भले वैसो ही हो। चाहें तो कुचल देंगे राख बन जाएगी।*** सौहार्दपूर्ण समाज की संरचना हेतु सभी वर्गों को बिना किसी पूर्वाग्रह के एकजुट होकर वर्गभेद की बुराई को जड़मूल से समाप्त करने में बाबा साहेब ने सभी का सहयोग मांगा और सफल भी हुए। ***शिव का संकल्प हुआ आचमन भरकर/चंवदार पानी आज गंगाजल हो गया।***

Happy Independence Day

RK PHOSPHATES
PRIVATE LIMITED
UDAIPUR

Manufacturer:

- Di Calcium Phosphate (Feed Grade)
- Phosphatic Chemicals
- Lime Stone Powder
- Calcium Carbonate (Nano Micron Size)
- Dolomite Powder (Micronized)
- Calcite Powder (Micronized High Grade)
- Industrial Minerals

Corporate Office
'Singhvi House'
6 – Residency Road
Udaipur (Raj.) India

Works:
Umarda
Jhamar Kotra Road
Udaipur (Raj.)

Contact: Tel: +91 294 2422707, Mb. +91 9414165298,
+91 9829040501 Email:rkphosphates@gmail.com, www.rkphosphates.com
An ISO 9001:2008 Certified Company

अवसरों का खजाना बायोटेक्नोलॉजी

- शिल्पा नागदा

एक दौर में विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में बायोटेक्नोलॉजी में बीएससी या बीटेक जैसे कोर्स चलाए जा रहे थे लेकिन आज मार्केटिंग को ध्यान में रखते हुए बायोटेक्नोलॉजी में एमबीए जैसे कोर्स भी संस्थानों में आ गए हैं, जो छात्रों को इससे जुड़े मार्केटिंग पक्ष से रूबरू कराते हैं। बारहवीं करने के बाद यह कोर्स छात्रों को रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट के क्षेत्र में काम करने का बड़ा अवसर मुहैया कराता है। अगर कोई छात्र सिर्फ बायोटेक्नोलॉजी में बीटेक करके नौकरी की तलाश में निकलता है तो उसे क्वालिटी कंट्रोल एण्ड क्वालिटी एश्यारेंस में बतौर ट्रेनी काफी मौके मिलते हैं। आज हरे मटर के दाने हों या हरे चने वाली सब्जी, इनका लुत्फ इनका मौसम न हो तो भी हर मौसम में उठाया जा सकता है। उसके दाने सालभर खरीदकर घर-घर में इस्तेमाल में लाये जा रहे है। सिर्फ मटर या हरा चना ही नहीं, फलों का राजा आम और अन्य फल भी पूरे साल बाजार में उपलब्ध हैं। यह सब बायोटेक्नोलॉजी का ही कमाल है जो खाने-पीने से लेकर औषधि तक सभी चीजों को संरक्षित रखती है। साइंस की यह शाखा आजकल कॅरियर के लिहाज से भी खूब फल-फूल रही है। नई दवाएं बनाने का मामला हो या बाजार में उपलब्ध दवाओं की गुणवत्ता में सुधार का बायोटेक्नोलॉजी हरेक की जरूरत बन गई है। इंटरडिसिप्लनरी कोर्स के रूप में यह छात्रों के लिए खासी रुचिकर भी है क्योंकि इसमें बायोकेमिस्ट्री जेनेटिक्स, माइक्रोबायोलॉजी, केमेस्ट्री, विरोलॉजी, इम्यूनोलॉजी और इंजीनियरिंग जैसी कई चीजें शामिल हैं। छात्रों के बीच इस कोर्स की लोकप्रियता का आलम यह है कि आज देश के सरकारी संस्थानों से लेकर निजी संस्थान तक इसको लेकर नए-नए कोर्स शुरू कर रहे हैं। एक दौर में विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में बोयोटेक्नोलॉजी में बीएससी या बीटेक जैसे कोर्स चलाए जा रहे थे लेकिन आज मार्केटिंग को ध्यान में रखते हुए बायोटेक्नोलॉजी में एमबीए जैसे कोर्स भी संस्थानों में आ गए हैं। छात्रों को इससे जुड़े मार्केटिंग पक्ष का भी पता चलता है। बारहवीं करने के बाद यह कोर्स छात्रों को रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट के क्षेत्र में काम करने का बड़ा अवसर मुहैया कराता है। अगर कोई छात्र सिर्फ बायोटेक्नोलॉजी में बीटेक करके नौकरी की तलाश में निकलता है तो उसे क्वालिटी कंट्रोल एण्ड क्वालिटी एश्यारेंस में बतौर ट्रेनी ढेरों अवसर मिल जाते हैं। छात्रों को विभिन्न लैबोरेटरी या रिसर्च संस्थानों में इस पायदान से काम करने का मौका मिल जाता है। इसके बाद उसे असिस्टेंट, सीनियर असिस्टेंट और मैनेजर जैसे पद पर पदोन्नति मिल जाती है।

अवसर

इस कोर्स के छात्रों के लिए फार्मास्यूटिकल कंपनियां उद्योग जगत, मेडिकल और शिक्षण संस्थानों में ढेरों अवसर हैं। इनमें लैब तकनीशियन, रिसर्चर, वैज्ञानिक रिसर्च एसोसिएट, मार्केटिंग पर्सनल, बिजनेस डेवलपमेंट अधिकारी, बायोटेक इंजीनियर, बायोटेक्नोलॉजिस्ट और प्रोफेसर जैसे पद प्रमुख हैं। देश में कई बायोटेक्नोलॉजी संस्थान योग्य उम्मीदवारों को स्कॉलरशिप प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय और निजी बैंक भी ऐसे छात्रों को लोन मुहैया कराते हैं। सीएसआईआर की ओर से एमएससी के बाद रिसर्च के लिए जेआरएफ या जूनियर रिसर्च फेलोशिप है। रिसर्च संस्थानों में शोध कार्य के लिए भी स्कॉलरशिप का प्रावधान है।

योग्यता

आमतौर पर बारहवीं पास छात्रों को बीटेक या बीएसएसी बायोटेक्नोलॉजी में दाखिले का मौका दिया जाता है। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रवेश परीक्षा आयोजित की जाती है। आईआईटी और एआईईई के जरिए उतीण छात्रों को संस्थान बीटेक में दाखिला देते हैं। बीएससी में दाखिला 12वीं की मेरिट के आधार पर दिया जाता है।

वेतनमान

इस कोर्स के छात्रों का वेतनमान आमतौर पर तीन हजार रुपये से शुरू होकर एक लाख या इससे ऊपर जाता है। बीटेक करने के बाद बतौर ट्रेनी विभिन्न निजी संस्थान में 25 से 30 हजार रुपये प्रतिमाह का ऑफर मिलता है। रिसर्च असिस्टेंट या रिसर्च ट्रेनी के बाद साइंटिस्ट के रूप में वेतनमान करीब 50 हजार रुपये है। विदेशी संस्थानों और फार्मास्यूटिकल कंपनियों में बतौर मैनेजर वेतनमान एक से दो लाख रुपये तक है।

अगर कोई एक कदम आगे बढ़कर एमटेक या बायोटेक्नोलॉजी में एमएससी करता है तो उसे रिसर्च ट्रेनी या रिसर्च असिस्टेंट के तौर पर काम करने का मौका दिया जाता है। पीएचडी करने वाले छात्रों को रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट, सीएसआईआर, आईसीएमआर और डीएसडी से संबद्ध संस्थानों में साइंटिस्ट जैसे पदों पर काम करने का अवसर दिया जाता है। देश में फार्मास्यूटिकल कंपनियां ऐसे छात्रों को हाथोंहाथ ले रही हैं। वे दवाएं बनाने के काम में इन्हें अपने यहां रखती हैं। पहले से चली आ रही दवाओं की गुणवत्ता में सुधार के लिए होने वाले रिसर्च और प्रयोग का काम भी इन्हीं के जिम्मे होता है। यही नहीं विभिन्न प्रोडक्ट की मार्केटिंग कराने का काम भी अब कम्पनियां ऐसे छात्रों से करवाती हैं। रिसर्च के अलावा अध्यापन का क्षेत्र भी है जहां बायोटेक्नोलॉजी के छात्र रखे जा रहे हैं। चाहे वह इंजीनियरिंग कॉलेज हो या फार्मास्यूटिकल संस्थान। इनमें असिस्टेंट प्रोफेसर पद पर एमटेक और पीएचडी के छात्रों को रखा जाता है।

चुनौती विचारधारा की : जोशी

उदयपुर/प्रत्यूष संवाददाता

डॉ. सीपी जोशी ने कहा कि भाजपा सिर्फ जनता को गुमराह करने का काम पिछले चार सालों से कर रही है। उसका मकसद विकास नहीं बल्कि देश में एक विचारधारा को थोपने का है। उन्होंने यह बात 29 जुलाई को सुखाडिया विश्वविद्यालय के विवेकानंद सभागार में अपने जन्मदिन के मौके पर आयोजित अभिनंदन समारोह में कही। उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि आसन्न विधानसभा चुनाव में अपनी क्षमताओं का आकलन कर पार्टी को सत्ता में लाने का भरपूर प्रयास करें। हम सबको धरातल पर कार्य करना होगा तभी चुनौतियों का मुकाबला कर पाएंगे। एयरपोर्ट पर कार्यकर्ताओं व नेताओं ने जोशी का गर्मजोशी से स्वागत किया। स्वागत करने वालों में सीडब्ल्यूसी सदस्य रघुवीर सिंह मीणा, महेंद्रजीत सिंह मालवीया, अर्जुन बामनिया, ताराचंद भगोरा, दयाराम परमार, कांता गरासिया, रमेश पंड्या, सुरेंद्र सिंह जाड़ावत, हरिसिंह राठौड़, दिनेश खोडनिया आदि थे। जोशी को बाद में एयरपोर्ट से एमएलएसयू सभागार लाया गया। अभिनंदन कार्यक्रम को पूर्व विधायक सज्जन कटारा, पुष्कर डांगी, गणेश सिंह परमार, विधायक हीरालाल दरांगी, त्रिलोक पूर्बिया, देवकीनंदन गुर्जर, रामलाल गाडरी, शिवदयाल शर्मा, दिनेश श्रीमाली, विश्वविजय शर्मा आदि ने भी संबोधित किया।

सीडब्ल्यूसी में शामिल रघुजी का अभिनंदन

कांग्रेस वर्किंग कमेटी(सीडब्ल्यूसी) में शामिल किए गए उदयपुर के पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा का दिल्ली से लौटने पर उनके समर्थकों ने प्रतापनगर से लेकर अभिनन्दन स्थल सुखाड़िया रंगमंच तक भव्य स्वागत किया। सभास्थल पहुंचने पर उनका जोरदार अभिनन्दन किया गया। समारोह में पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, पूर्व मंत्री मांगीलाल गरासिया, पूर्व विधायक बसंतीदेवी मीणा, त्रिलोक पूर्बिया, शहर कांग्रेस जिलाध्यक्ष गोपालकृष्ण शर्मा, देहात अध्यक्ष लालसिंह झाला, शंकर यादव, प्रदेश सचिव पंकज शर्मा ब्लॉक अध्यक्ष फतेह सिंह राठौड़, पूर्व जिला प्रमुख छगनलाल जैन, मधुसूदन शर्मा, डॉ. राव कल्याण सिंह सहित कांग्रेसजन उपस्थित थे।

इण्टक का मजदूर महासम्मेलन

झूठ के बूते चल रही भाजपा सरकारें : गहलोत

महासम्मेलन को संबोधित करते अशोक गहलोत, डॉ. जी. संजीवा रेड्डी, अविनाश पांडे एवं इण्टक के प्रदेशाध्यक्ष जगदीशराज श्रीमाली।

पिछले दिनों इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस(इण्टक) की 296वीं वर्किंग कमेटी की बैठक उदयपुर के सुखाड़िया रंगमंच पर सम्पन्न हुई। दो दिवसीय सम्मेलन के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी महासचिव एवं राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने उद्घाटन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे चुनाव जीतने के लिए झूठ का सहारा ले रहे हैं। मोदी कहते हैं कि पिछले चार साल में 18000 गांव में बिजली पहुंचाई है। लेकिन वे इस बात का जवाब नहीं दे रहे कि 6 लाख गांवों में बिजली पहुंचाई किसने? कांग्रेस से वे 70 साल का हिसाब मांग रहे हैं। लेकिन क्या उनके और उनकी पार्टी के किसी नेता ने भी आज़ादी के संघर्ष में एक उंगली भी कटवाई? जबकि कांग्रेस के पंडित जवाहर नेहरू ने 10 वर्ष जेलों में अंग्रेजों की यातनाएं सहीं। इण्टक के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जी. संजीवा रेड्डी ने कहा कि आज मोदी और मजदूरों के बीच जंग का माहौल है। अगले चुनाव में तय होगा कि देश में मोदी रहेगा या मजदूर। कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी महासचिव अविनाश पांडे ने कहा कि भाजपा सरकार जो योजनाएं गिना रही है, उनमें से एक भी धरातल पर नहीं है। इन योजनाओं को पीपीपी मॉडल का नाम दिया जा रहा है, जो पूंजीपतियों का मॉडल है। सीडब्ल्यूसी सदस्य रघुवीर सिंह मीणा ने कहा कि भाजपा सरकार ने नोटबंदी के नाम पर छोटे व्यापारियों को सड़कों पर ला दिया। देश का हर वर्ग दु:खी है। कांग्रेस हमेशा ही गरीब, आदिवासी, मजदूर और किसानों के साथ रही है लेकिन मोदी सरकार सिर्फ पूंजीपति और उद्योगपतियों के साथ खड़ी है। इण्टक के राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष जगदीशराज श्रीमाली ने कहा कि आज मजदूरों को 206 रुपए दैनिक मेहनताना मिलता है, जबकि प्रदेश की मुख्यमंत्री के पालतू कुत्ते का ही खर्च एक दिन का 900 रुपए है। यह सरकार मजदूर विरोधी है। कार्यक्रम को डॉ. गिरिजा व्यास ने भी सम्बोधित किया।

प्रत्यूष
स्मृति शेष

'काल के कपाल' पर लिख दिया हुए अटल

प्रत्यूष

मैं जी भर जिया, मैं मन से मरू, लौटकर जाउंगा, कूच से क्यों डरूं?

जिंदगी भर काल के कपाल पर लिखते-मिटाते 16 अगस्त को भारतीय राजनीति के 'शिखर पुरुष', भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी 93 वर्ष की आयु में असार संसार को छोडक़र विदा हुए। शाम 5.05 मिनट पर उन्होंने एम्स में अंतिम सांस ली। पीछे व्यथित हृदय देश छोड़ गए। यही अटल की पूंजी थी और यही उनकी विरासत, जिनमें उनकी राजनीतिक पृष्ठभूमि और विचारधारा गौण हो गई। व्यक्तित्व सर्वोपरि हो गया। यही सीख वह भाजपा के लिए भी छोड़ गए और दूसरी पार्टियों के नेतृत्व के लिए भी। क्षेत्रीय दलों की आकांक्षा, अपेक्षा और महत्वाकांक्षा को साधने वाले अटल ही पहले ऐसे गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री थे जिन्होंने पांच साल का कार्यकाल पूरा करने के साथ गठबंधन राजनीति को नई दिशा दी। चौबीस दलों का गठबंधन बनाकर उन्होंने मेलमिलाप से शासन चलाने का जो राजनीतिक प्रयोग किया वह भावी राजनीति के लिए भी एक सार्थक संदेश है। यह भी सच है कि राजनीतिक दलों की आकांक्षा को पूरा करना उनकी मजबूरी भी थी लेकिन उन्होंने कभी इसे जाहिर नहीं होने दिया। इस बात को अटलजी भी बेबाकी से स्वीकार करते रहे कि वे कभी-कभी अपने मन की कही को ही मानते थे। परमाणु परीक्षण जैसा मुद्दा इसका जीता जागता उदाहरण है। लेकिन सामंजस्य ऐसा कि उन्होंने सबका दिल जीता। यह बात केवल दूसरे दलों पर लागू नहीं होती बल्कि की खुद की पार्टी में भी उनका करिश्माई जादू ऐसा ही था। जिस जनसंघ की छवि कट्टर हिंदुत्व की बनाई गई उसमें वाजपेयी अपनी नरमपंथ छवि को लेकर भी काडर में सबसे लोकप्रिय नेता बने रहे।

उनकी इसी कला के लोग कायल थे कि राजनीतिक रूप से एक 'अस्पृश्य' माने जाने वाले दल में रहकर भी सबके लिए न सिर्फ खुद स्पृश्य बने बल्कि पार्टी को भी उस मुकाम पर खड़ा कर दिया, जहां 24 दल परस्पर उनकी पार्टी को गले लगाने के लिए तैयार हों। दरअसल भाजपा के लिए उनकी सबसे बड़ी देन यही रही है। उनकी यह कला किसी भी राजनैतिक दल और नेतृत्व के लिए अनुकरणीय बन गई। जनसंघ के माध्यम से शून्य से शिखर तक की यात्रा करने वाले अटल जनसंघ के मूल संस्थापकों में थे। जनसंघ के अनुशासन में रहते हुए भी उनकी सोच ने उन्हें

हमेशा अलग पहचान दी और शायद इसी कारण कभी-कभी संघ के साथ उनके मतभेद की भी खबरें चलती रही। लेकिन धीरे-धीरे यह भी स्पष्ट होता गया कि वह अलग सुर में जरूर बोलते रहे लेकिन भिन्न नहीं। संघ पर सबसे बड़ा आरोप यही लगाया जाता रहा कि विदेश और आर्थिक नीति संघ के बस की बात नहीं है। संयोग कुछ ऐसा हुआ कि वाजपेयी ने इन आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया। वाजपेयी के सिर पर ही ये सेहरा बंधना चाहिए कि भारत पहली बार रूस के दबदबे से हटकर अमेरिका की ओर बढ़ता दिखा।

भाजपा के राजनीतिक उत्थान में राम मंदिर मुद्दे के योगदान कोई नहीं भूल सकता है। लेकिन यह भी नहीं भूला जाना चाहिए कि जब विवादित ढांचा ध्वस्त हुआ तो सामने आने का साहस भी केवल अटल ही कर पाए। यह उन्हीं का साहस था कि वे उसे 'राष्ट्रीय शर्म' करार देकर सबको चुप करा सके। उनकी दूरदृष्टि ऐसी थी कि नब्बे के दशक में ही उन्होंने इस्लामी कट्टरता के खतरे से आगाह कर दिया था। कहा जाता है कि उनमें सारी खूबियां इसलिए निखर कर आई और वह सर्व स्वीकार्य बने क्योंकि उन्होंने बड़ी महत्वाकांक्षाएं कभी पालकर नहीं रखी। कुल मिलाकर वाजपेयी भारतीय राजनीतिक पटल पर ऐसी शख्सियत थे, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से न केवल व्यापक स्वीकार्यता और सम्मान हासिल किया बल्कि तमाम बाधाओं को पार कर खुद को देश में भाषा, विचारधारा और संस्कृतियों के भेद से अलग यथार्थवादी राजनेता के रूप में स्थापित किया। यह उनके बहुमुखी व्यक्तित्व का ही कमाल था कि कवि, पत्रकार और राजनेता हर भूमिका में लोकप्रिय रहे। जनसंघ के संस्थापकों में से एक पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी के राजनीतिक मूल्यों की पहचान बाद में हुई और उन्हें भाजपा की नरेंद्र मोदी सरकार में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने उन्हें घर जाकर देश के सर्वोत्तम सम्मान से नवाजा था।

प्रखर राजनेता

अटल जी अपनी भाषणकला, मनमोहक मुस्कान, वाणी के ओज, लेखन व विचारधारा के प्रति निष्ठा और ठोस फैसले लेने के लिए विख्यात रहे। वे 1951 से भारतीय राजनीति का हिस्सा बने। उन्होंने 1955 में पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ा लेकिन हार गए। फिर 1957 में वे सांसद बने। कुल 12 बार सांसद रहे। 1962 और 1986 में वे राज्यसभा सदस्य रहे। इस दौरान उन्होंने उत्तरप्रदेश, नई दिल्ली और मध्यप्रदेश से लोकसभा का चुनाव लड़ा और जीते। वे गुजरात से राज्यसभा पहुंचे थे। वाजपेयी को भारत व पाकिस्तान के मतभेदों को दूर करने की दिशा में प्रभावी पहल करने का श्रेय भी दिया जाता है।

संवेदनशील कवि

कविताओं को लेकर उन्होंने कहा था कि मेरी कविता जंग का ऐलान है। पराजय की प्रस्तावना नहीं। वह हारे हुए सिपाही का नैराश्य-निनाद नहीं, जुझते योद्धा का जय संकल्प है। वह निराशा का स्वर नहीं, आत्मविश्वास का जयघोष है। उनकी कविताओं का संकलन 'मेरी इक्यावन कविताएं' खूब चर्चित रहा। जिनमें हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा...खास चर्चा में रही। इसके अलावा उन्होंने राष्ट्र धर्म, पांचजन्य और वीर अर्जुन का संपादन भी किया। स्वर कोकिला भारत रत्न लता मंगेशकर ने उनकी कुछ कविताओं को स्वर देकर सर्वग्राह्य बना दिया। जिनमें 'आओ दिया जलाएं' भी है।

अंतिम सफर में भी सिखा गए कैसे जिएं जिंदगी

अटल जी के पार्थिव शव को 17 अगस्त को सुबह 9 बजे भाजपा कार्यालय पर दर्शनार्थ रखा गया। यहां सभी दलों के नेताओं ने उनको श्रद्धांजलि दी। सुबह अटल जी के निवास पर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी श्रद्धांजलि देने पहुंचे। इसके बाद दिल्ली के स्मृति स्थल पर पूरे राष्ट्र ने नम आंखों से उनको अंतिम विदाई दी। राजनीति के 'अजातशत्रु' के अंतिम सफर में लोगों का जो कारवां देखने को मिला वह अद्भुत, अतुलनीय और अलौकिक था। उनकी अंतिम यात्रा के दौरान पीएम मोदी सहित कई राजनेता, बड़ी हस्तियां 5 किमी तक पैदल ही चलते रहे। अटलजी को उनकी दत्तक पुत्री नमिता कौल ने मुखाग्नि दी।

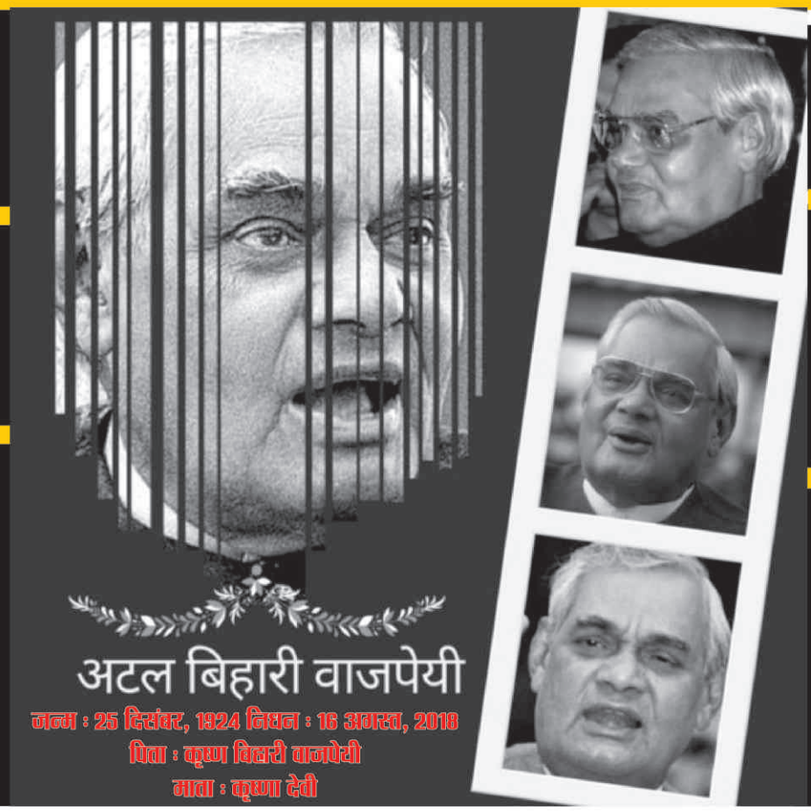

गंगा की धारा संग चले 'अटल'

अटल बिहारी वाजपेयी की अस्थियां 19 अगस्त को हर की पौड़ी पर मोक्षदायिनी गंगा में प्रवाहित की गई। उनकी दत्तक पुत्री नमीता और परिवार के अन्य सदस्यों ने यह रस्म पूरी की। इससे पूर्व करीब दो किमी तक अस्थि कलश यात्रा निकली। इसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। अटलजी की अस्थियों को सभी राज्यों की सौ से अधिक पवित्र नदियों में विसर्जित किया गया।

राजनैतिक सफर

- 1939 में स्वयंसेवक के तौर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े
- 1942 अगस्त में भारत छोड़ो आंदोलन का हिस्सा बने
- 1951 में दीनदयाल उपाध्याय के साथ भारतीय जनसंघ की जिम्मेदारी सौंपी गई। उन्हें राष्ट्रीय सचिव बनाया गया और दिल्ली से उत्तरी क्षेत्र का नेतृत्व मिला
- 1975 से 1977 तक आपातकाल के दौर में अटल बिहारी वाजपेयी विपक्ष के अन्य नेताओं के साथ जेल में रहे
- 1980 में मोरारजी देसाई की सरकार गिरने के बाद अटल ने लालकृष्ण अडवाणी और भैरों सिंह शेखावत के साथ भाजपा की स्थापना की। अटल भाजपा के पहले अध्यक्ष बने।

12 बार सांसद व तीन बार पीएम बने

- 1957 में बलरामपुर सीट से जीत पहली बार लोकसभा पहुंचे
- 1962 में राज्यसभा सदस्य चुने गए
- 1967 में बलरामपुर सीट से दोबारा जीत लोकसभा पहुंचे
- 1971 में ग्वालियर सीट से जीत लोकसभा सदस्य बने
- 1977 में नई दिल्ली सीट से जीते और लोकसभा पहुंचे
- 1980 में नई दिल्ली से दोबारा जीते और लोकसभा पहुंचे
- 1986 में राज्यसभा पहुंचे
- 1991 से 2009 तक पांच बार लखनऊ सीट से जीते

पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री बने

- 16 मई 1996 में पहली बार प्रधानमंत्री बने, 13 दिन बाद 31 मई 1996 को सरकार गिरी
- 1998 से 1999 तक दूसरी बार 19 महीने प्रधानमंत्री रहे
- 1999 से 2004 तक तीसरी बार पीएम बने
- पांच साल का कार्यकाल पूरा करने वाले पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री बने।

पृष्ठ संयोजन : सुनील पंडित, डी.के. जैन, जगदीश सालवी, नितेश सर्राफ

राजस्थान में राहुल का चुनावी शंखनाद

चुनाव से करीब 4 महीने पूर्व 11 अगस्त को जयपुर में कांग्रेस ने बजाया चुनाव का बिगुल, राहुल ने 13 किमी लंबा रोड शो किया, बाद में किया रामलीला मैदान में कांग्रेस प्रतिनिधि सम्मेलन को संबोधित

जयपुर/प्रत्यूष ब्यूरो। राजस्थान में विधानसभा चुनाव से करीब 4 महीने पूर्व कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने चुनावी शंखनाद किया। राहुल 2 घंटे 55 मिनट में प्रदेश का सबसे बड़ा 13 किमी का रोड शो कर कांग्रेसजन को और अधिक उत्साहित कर गए। वे दोपहर 1.40 बजे एयरपोर्ट से निकले और रामलीला मैदान पर 4.35 बजे पहुंचे। रोड शो में हर ओर हाथों में झंडे थामे सूबे के हर कोने से पहुंचे कार्यकर्ता नारेबाजी कर रहे थे। अपने नेता की एक झलक पाने के लिए कार्यकर्ता बेताब थे। प्रतिनिधि सम्मेलन में राहुल के निशाने पर पीएम मोदी और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ही रहे। राफेल डील, जीएसटी और अमित शाह के बेटे की कमाई जैसे मुद्दों को लेकर उन्होंने केंद्र सरकार को मजबूती के साथ घेरा । उन्होंने कहा कि देश के 56 इंच की छाती वाले चौकीदार के पास राफेल हवाई जहाज के भ्रष्टाचार को लेकर कोई जवाब नहीं है। यूपीए सरकार ने 520 करोड़ रुपए प्रति हवाई जहाज रफाल कंपनी से सौदा कर एचएएल कंपनी को ठेका दिया, जहां युवा रोजगार प्राप्त करते हैं। उन्होंने मोदी पर अंबानी को फायदा पहुंचाने का आरोप लगाते हुए कहा कि पीएम मोदी के साथ अनिल अंबानी फ्रांस गए। वहां की कंपनी को 1600 करोड़ रुपए प्रति राफेल हवाई जहाज का ठेका दे दिया। जीएसटी को गब्बर सिंह टैक्स बताते हुए बोले-2019 में कांग्रेस की सरकार बनी तो केवल एक लेवल का जीएसटी लागू करेंगी। पेट्रोल-डीजल भी इसके दायरे में होंगे। राहुल गांधी ने व्यंग के अंदाज में अमित शाह पर निशाना साधते हुए कहा कि उनके पुत्र 50 हजार को चंद महीने में ही 80 करोड़ में बदल देते हैं। कौन सी ऐसी तकनीक है, जो इतनी तेजी से मुनाफा देती है। उन्होंने कहा-दलित, किसान की आत्महत्या के मामले में प्रधानमंत्री मौन हैं। कर्ज न चुकाने वाले उद्योगपतियों को एनपीए (गैर निष्पादित परिसंपत्ति) कहते हैं, जबकि किसान को जेल में डाल देते हैं। राहुल ने महिला और बालिका सुरक्षा को लेकर भी राज्य सरकार को आड़े हाथों लिया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के गृह जिले में ही बलात्कार हो रहे हैं। उत्तरप्रदेश में बलात्कार का आरोपी भाजपा का विधायक ही निकलता है। इस पर भी भाजपा व पीएम मोदी मौन हैं और आरोपियो को बचाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि बेटियों को भाजपा नेताओं से बचाना होगा।

इन कयासों को किया सिरे से खारिज

पैराशूट : विधानसभा चुनाव में पैराशूटर उम्मीदवार को लेकर राहुल ने कड़ी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि चुनाव में केवल कार्यकर्ताओं को ही टिकट मिलेगा, पैराशूटर को नहीं। अगर किसी पैराशूटर को टिकट मिल भी गया तो मैं रस्सी काट दूंगा।

युवा : राहुल ने कहा कि इस बार कांग्रेस कार्यकर्ताओं की सरकार बनेगी। युवाओं के दम पर ही राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनाएंगे। उन्होंने कहा कि मोदी युवाओं को बेरोजगार कर रहे हैं। वे हर साल 2 करोड़ को रोजगार देने का वादा भूल गए।

सम्बोधन के बाद दर्शन

रामलीला मैदान से राहुल गांधी शाम 6 बजे सीधे गोविंददेवजी मंदिर पहुंचे और दर्शन किए। उनके साथ कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष सचिन पायलट सहित अन्य नेता भी थे। इससे पूर्व आयोजित हुए प्रतिनिधि सम्मेलन को राहुल गांधी के अलावा अशोक गहलोत, सचिन पायलट ने भी संबोधित किया। कांग्रेस के राष्ट्रीय संगठन महासचिव अशोक गहलोत ने सीएम राजे के कांग्रेस में गुटबाजी को लेकर दिए बयान का जवाब दिया। उन्होंने कहा कि वसुंधरा राजे क्या बोलती हैं हमें कोई मतलब नहीं है। जब गुलाबचंद कटारिया ने पिछले चुनाव में यात्रा निकालनी चाही तो वसुंधरा ने इस यात्रा को रोकने और खुद को पार्टी का प्रदेशाध्यक्ष बनाने का दबाव बनाने के लिए नई पार्टी बनाने तक की धमकी दी। प्रदेशाध्यक्ष सचिन पायलट ने कहा कि प्रदेश की भाजपा सरकार घोटालों, जुमलों और महलों की सरकार है, जिसे उखाड़ने के लिए प्रदेश की जनता तैयार है। शहर जिलाध्यक्ष प्रताप सिंह खाचरियावास व प्रदेश प्रभारी महासचिव अविनाश पांडे का भी भाषण हुआ।

दुनिया का सबसे बड़ा परिवार

परिवार में शादी हो तो डेढ़-दो सौ लोगों का खाना बनाना और खिलाना कितना बड़ा काम होता है, लेकिन अगर किसी परिवार में हर रोज ही बारात को खिलाने जितना खाना पकता हो, तो उसकी कल्पना करना मुश्किल है। मिजोरम में दुनिया का सबसे बड़ा परिवार रहता है, जिसके 181 सदस्य 100 कमरों के मकान में एक साथ रहते हैं। संयुक्त परिवार प्रथा के टूटने के इस दौर में इस प्रथा को जीवित रखने की दिशा में इस परिवार को एक मिसाल ही कहा जा सकता है। महंगाई के इस दौर में जब चार पांच सदस्यों वाले परिवार का पालन-पोषण करना एक बड़ी चुनौती हो सकती है, वहीं जिओना चाना अपनी 39 पत्नियों, 94 बच्चों, 14 बहुओं और 33 पोते-पोतियों के अलावा नन्हें प्रपौत्र के साथ बड़े प्यार से रहते हैं।अपने बेटों के साथ बढ़ई का काम करने वाले जियोना चाना का परिवार मिजोरम में खूबसूरत पहाड़ियों के बीच बटवंग गांव में एक बड़े से मकान में रहता है। मकान में कुल सौ कमरे हैं। उसमें एक बड़े से रसोईघर के अलावा सबके लिए पर्याप्त जगह है और जिओना अपने परिवार को बड़े अनुशासन से चलाते हैं। चाना के बड़े पुत्र नुनपरलियाना की पत्नी थेलेंजी बताती हैं कि परिवार में सब लोग बड़ी खुशी से रहते हैं और लड़ाई झगड़े जैसी कोई बात नहीं है। घर के कामकाज भी सब मिलकर करते हैं। परिवार की महिलाएं खेती-बाड़ी करती हैं और घर चलाने में योगदान देती हैं। चाना की सबसे बड़ी पत्नी मुखिया की भूमिका निभाती है। एक आम परिवार में जितना राशन दो महीने चलता है, इस परिवार की भूख मिटाने के लिए हर दिन उतना राशन खर्च हो जाता है। यहां एक दिन में 45 किलो से ज्यादा चावल, 30-40 मुर्गे, 25 किलो दाल, दर्जनों अंडे, 60 किलो सब्जियों की जरूरत होती है। इसके अलावा इस परिवार में लगभग 20 किलो फल की भी हर रोज़ खपत होती है। परिवार में इतने सदस्यों के नाम, उनके जन्मदिन और उनके अन्य क्रियाकलापों के बारे में नुनपरलियाना बताते हैं कि परिवार में सब सदस्यों के नाम याद रखना मुश्किल नहीं है। लोग अपने ढेरों दोस्तों के नाम भी तो याद रखते हैं, हम उसी तरह अपने भाई बहनों और अपने तथा उनके बच्चों के नाम याद रखते हैं। हां, जन्मदिन याद रखने में दिक्कत होती है, लेकिन किसी न किसी को याद रह ही जाता है। इलाके की सियासत में भी चाना परिवार का खासा दबदबा है। एक साथ एक ही परिवार में इतने सारे वोट होने की वजह से तमाम नेता और इलाके की राजनीतिक पार्टियां जियोना चाना को अच्छा खासा महत्व देती हैं, क्योंकि स्थानीय चुनाव में इस परिवार का झुकाव जिस पार्टी की तरफ होता है, उसे ढेरों वोट मिलना पक्का है।

लघु कथा

जानवरीयत

वृद्धाश्रम के दरवाजे से बाहर निकलते ही उसे किसी कमी का एहसास हुआ, उसने दोनों हाथों से अपने चेहरे को टटोला और फिर पीछे पलट कर खोजी आंखों से वृद्धाश्रम के अंदर पड़ताल करने लगा।

उसकी यह दशा देख उसकी पत्नी ने माथे पर लकीरें डालते हुए पूछा, 'क्या हुआ?' उसने बुदबुदाते हुए उत्तर दिया, 'अंदर कुछ भूल गया.....'

पत्नी ने उसे समझाते हुए कहा, 'अब उन्हें भूल ही जाओ, उनकी देखभाल भी यहीं बेहतर होगी। हमने फीस देकर अपना फर्ज तो अदा कर ही दिया है, अब चलो यहां से...' कहते हुए उसकी पत्नी ने उसका हाथ पकड़ कर उसे कार की तरफ खींचा।

उसने जबरन हाथ छुड़ाया और ठंडे, लेकिन द्रुत स्वर में बोला, 'अरे! मैं अपना मोबाइल फोन अंदर भूल गया हूँ।'

'ओह!' पत्नी के चेहरे के भाव बदल गए और उसने चिंतातुर होते हुए कहा, 'जल्दी से लेकर आ जाओ, कहीं इधर-उधर हो गया तो? मैं घंटी करती हूं, उससे जल्दी मिल जायेगा।'

वह दौड़ता हुआ अंदर चला गया। अंदर जाते ही वह चौंका, उसके पिता, जिन्हें आज ही वृद्धाश्रम में दाखिला करवाया था, बाहर बगीचे में उनके ही घर के पालतू कुत्ते के साथ खेल रहे थे।

पिता ने उसे पल भर देखा और फिर कुत्ते की गर्दन को अपने हाथों से सहलाते हुए बोले, 'बहुत प्यार करता है मुझे, कार के पीछे भागता हुआ आ गया.... जानवर है ना!'

डबडबाई आंखों से अपने पिता को भरपूर देखने का प्रयास करे हुए उसने थरथराते हुए स्वर में उत्तर दिया, 'जी पापा, जिसे जिनसे प्यार होता है... वे उनके पास भागते हुए पहुंच ही जाते हैं....'और उसी समय उसकी पत्नी द्वारा की हुई घंटी के स्वर से मोबाइल फोन बज उठा। वो बात और थी कि आवाज उसकी पेंट की जेब से ही आ रही थी।

- डॉ. चंद्रेश छतलानी

यात्रा चालू आहे !

जब भी कोई मुझे अंगूठा दिखाता है, मेरे गौरव को ललकारता है या मेरी बयान-कर्मनिष्ठा पर प्रश्न चिह्न लगाता है तब-तब मैं यात्रा पर निकल पड़ता हूँ। मेरा यह मानना है कि जब कभी किसी के अस्तित्व पर संकट आए या परछाई भी डगमगाती नज़र आए तो उसे यात्रा पर निकल जाना चाहिए। यात्रा जीवन को गतिशील रखती है। यात्रा ठुस्स जीवन की जीवंतता है, और मिथ्या सफलता का विश्वास भी। यात्रा कहीं से भी शुरू की जा सकती है। देश में या विदेश में। यात्रा होनी चाहिए। यात्राओं का इतिहास बड़ा लम्बा है

- डॉ. देवेन्द्र इन्द्रेश

या यूँ कहें कि सृष्टि का प्रारम्भ ही मन की नाव में बैठे हिचकोले खाती यात्रा से ही हुआ है। यात्राएँ अपने संतोष के लिए भी होती हैं और दूसरों को भ्रम में डालने के लिए भी।

यात्रा करता हुआ जीव इस संसार में आता है तरह-तरह के अनुभवों की यात्राएँ करता हुआ महायात्रा पर निकल जाता है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान युग तक यात्राओं का ही वर्चस्व रहा है। बिना यात्रा के जीवन की महायात्रा भी पूरी नहीं होती। यात्राओं के विविध रूप हैं। कुछ यात्राएँ ज्ञानार्जन के लिए होती हैं तो कुछ मनोरंजन के लिए। कुछ यात्राएँ अपने लिए होती हैं तो कुछ दूसरों के लिए। किस की यात्रा कब और कहाँ से प्रारम्भ हो और कहाँ खत्म हो जाए कोई नहीं जानता। सभी यह ज़रूर चाहते हैं कि यात्रा शुभ हो, मंगलमय हो लेकिन वह कब अशुभ तथा दंगलमय हो जाए, इसकी भी गारंटी नहीं।

वैसे तो सभी यात्राएँ करते हैं, लेकिन देश के गौरव की रक्षार्थ, देश के नव-निर्माणार्थ, देश की भूखी गरीब जनता को रोटी के जुगाड़ार्थ और इन सबसे अहम और महत्त्वपूर्ण अपनी कुरसी बचावार्थ राजनेताओं को आए दिन-देश-विदेश की यात्राएँ करनी पड़ती हैं।

मानें या ना मानें, वैसे भी आपके मानने या ना मानने से होगा भी क्या। देश का अधिकांश धन राजनेताओं की यात्राओं पर ही खर्च हो रहा है। देश के ये राजहंस देश-विदेश की यात्रा न करें तो देश के गौरव की रक्षा भी इनके मुताबिक संभव भी नहीं। सद्भाव यात्रा न करें तो देश में सद्भाव कैसे कायम होगा ? प्रत्येक राजनेता यात्रा में किसी से पीछे नहीं रहना चाहता। जब विदेश की यात्रा करते हुए उसका गौरव बढ़ता है तो यकीनन देश का गौरव भी बढ़ेगा।

यात्रा पक्ष-विपक्ष दोनों ओर से होती है। दोनों को ही अपने देश तथा राज्य के गौरव को बढ़ाने की चिन्ता तो है ही। उनको भी तो चुनाव लड़ना है। अगली यात्रा के लिए सामान और आसन सज्जित रथ तैयार करना है। एक पक्ष अपना गौरव बढ़ाने की खातिर यात्रा करता है, दूसरा अगले का गौरव घटाने के लिए बैलगाड़ी से निकल पड़ता है। एक का सद्भावना रथ निकलता है तो दूसरा उसकी सद्भावना को दुर्भावना प्रचारित करने के लिए निकल पड़ता है ।

चूँकि अपना देश पार्टी बहुल है। अत: सभी छोटी-बड़ी पार्टियों के नेता देश को बचाने और बढ़ाने के नाम पर यात्राओं के दौरान बीच-बीच में विश्राम के नाम पर यात्रा से अलग होकर उस कुर्सी की देखभाल भी कर आते हैं, जिसे फिर हथियाने के लिए सत्ता के आखरी साल में थकाऊ यात्राएं झेलनी पड़ रही हैं। एक रथयात्रा आगे बढ़ना चाहती है, दूसरी उसे रोकती है। दोनों यात्रा रथियों को चिन्ता होती है कि अगर इसने सारे देश का चक्कर लगा लिया और देश का गौरव बढ़े न बढ़े अपना ग्राफ बढ़ा लिया तो उसका क्या होगा ? क्या वह खड़ताल बजाता ही रह जाएगा। यात्राओं का यह सिलसिला चुनावी मौसम आने पर तो अर्जुन का लक्ष्य बन जाता है। सभी अपना लक्ष्य साधना चाहते हैं। तरह-तरह के मुखौटे पहने वे गिड़गिड़ाते हैं, हमें 'मत' दो। वोटर कहता है देना तो पड़ेगा लेकिन ज़रा थोड़ा रगड़ कर। यात्रा चालू आहे। गौरव बढ़ने-बढ़ाने का हिसाब बाद में।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई

जंग रोधक सीमेंट

SHREE
ULTRA
RED-OXIDE

With Best Compliments from:

SHREE CEMENT LIMITED

A-6, Yudhisthar Marg, Opp. Yojana Bhawan, C-Scheme, Jaipur - 30205
Ph.: 0141-229733,223917,2222864 • Fax No.: 0141-2224841
For more details log on : www.shreecementltd.com

चुनावी वैतरणी पार करने निकला 'गौरव' रथ

राजस्थान की सीएम निकली गौरव यात्रा पर, कांकरोली की सभा में कांग्रेस पर बिफरे शाह-राजे

-डॉ. कुंजन आचार्य

राजस्थान में इस बार फिर कमल खिलाने के लिए मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे की 40 दिन तक चलने वाली 'राजस्थान गौरव यात्रा' का आगाज 4 अगस्त को चारभुजा से हुआ। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह और वसुंधरा राजे ने गढ़बोर चारभुजा मंदिर में दर्शन-पूजन के साथ ही इस यात्रा की विधिवत शुरुआत की। गौरव यात्रा की पहली सभा कांकरोली के बालकृष्ण स्टेडियम में हुई। यहां अमित शाह ने वसुंधरा राजे के काम की प्रशंसा की और कांग्रेस पर जमकर हमले बोले। उन्होंने कहा, 'राजस्थान में जिस तरह से बीजेपी सरकार चली है, उससे मुझे भरोसा है कि जनता एक बार फिर कमल की सरकार बनाकर नया इतिहास रचेगी। शाह ने कहा, 'राहुल गांधी और कांग्रेस हमसे सवाल पूछती है और हमारे चार साल का हिसाब मांगती है, इस देश की जनता तो आपसे आपके चार पीढ़ी का हिसाब मांग रही है।' राजस्थान की राजनीति में मेवाड़-वागड़ का अलग ही सियासी मिजाज रहा है। दक्षिणी राजस्थान का यह इलाका सत्ता किसे मिलने वाली है इसकी दशा और दिशा तय करता है। इसी को ध्यान में रखकर को लेकर सीएम राजे ने रणनीतिक तौर पर दूसरी बार भी यात्रा का आरंभ चारभुजानाथ के चरण छूकर किया। इससे पहले वे 2013 में यहीं से सुराज संकल्प यात्रा शुरूकर चुनावी बिगुल बजा चुकी है। गौरव यात्रा के इस बार के मायने सियासी गलियारों में अलग ही निकाले जा रहे है। कोई इसे कार्यकर्ताओं में जान फूंकने की कवायद बता रहा तो, कुछ लोग राजपूत मतदाताओं को साधने का प्लान। राजसमंद जिला राजपूतों का गढ़ है। यात्रा में वसुंधरा ने महाराणा प्रताप, राणा कुंभा, भामाशाह, पन्नाधाय को बार-बार याद कर अपना मकसद साफ कर दिया। 40 दिनों में 165 विधानसभा सीटों से होकर गुजरने वाली सीएम की गौरव यात्रा 6 हजार किमी का सफर तय करेगी और 135 रैलियों को संबोधित करेगी। उदयपुर संभाग में सीएम की गौरव यात्रा 10 अगस्त को संपूर्ण हुई। इस बीच झाड़ोल और ऋषभदेव के लिए सीएम ने रथ छोडक़र हेलीकॉप्टर से सफर किया। रथ यात्रा के साथ सीएम के नजदीक किरण माहेश्वरी, प्रदेशाध्यक्ष मदन लाल सैनी आदि रहे जबकि अनमने गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया भी साथ दिखे। पहले दिन वे रथ पर नहीं चढ़े लेकिन रथ के उदयपुर जिले में प्रवेश के दौरान वे सारथी की भूमिका में नजर आए। कांकरोली से निकली यात्रा का पहले दिन श्रीनाथजी की नगरी में विश्राम हुआ। अगले दिन श्रीनाथजी, एकलिंगनाथ के दर्शन कर सीएम खमनोर से सीधे गोगुंदा की दूसरी सभा में पहुंची। आदिवासी बहुल गोगुंदा में सीएम ने महाराणा प्रताप को नमन कर फिर से भाजपा को जीताने का आह्वान किया।

इस बार मिशन 180 पर निशाना

यात्रा के जरिये बीजेपी की कोशिश राज्य में 180 सीटें जीतकर फिर से सत्ता हासिल करना है। पिछले चुनाव में भाजपा को 163 सीटें मिली थीं। अब तक राज्य में सिर्फ एक बार बीजेपी लगातार सत्ता में आई है। उस समय पूर्व राष्ट्रपति और बीजेपी के दिग्गज नेता भैरों सिंह शेखावत ने 1990-92 तक शासन करने के बाद 1993 में सत्ता में वापसी की थी। अगर वसुंधरा राजे सफल होती हैं तो यह अलग तरह का रिकॉर्ड होगा, क्योंकि शेखावत की सफलता में 1992-93 तक एक साल का राष्ट्रपति शासन भी शामिल था। इसके बाद से एक बार बीजेपी तो दूसरी बार कांग्रेस सरकार बनाती रही है। कांग्रेस में इन दिनों नेतृत्व को लेकर घमासान मचा हुआ है। बीजेपी इससे चुनावी फायदे की उम्मीद कर रही है।

राजपूतों को साधने की कोशिश

दरअसल, वसुंधरा की इस यात्रा का मकसद राजपूत मतदाताओं का साधना है। राजपूत राज्य की कुल जनसंख्या का 7 प्रतिशत हैं और हाल के दिनों में हुई घटनाओं की वजह से बीजेपी से नाराज चल रहे हैं। वसुंधरा ने पिछले दिनों जोधपुर से राजपूत समुदाय के प्रभावशाली नेता गजेंद्र सिंह शेखावत को राजस्थान बीजेपी का अध्यक्ष बनाए जाने का विरोध किया था। इससे राजपूतों में उनकी छवि और ज्यादा खराब हो गई। यही नहीं राजपूत समुदाय गैंगस्टर आनंद पाल सिंह की कथित फर्जी मुठभेड़ से भी नाराज है। देशभर में 'पद्मावत' के प्रदर्शन को लेकर भी राजपूतों में बीजेपी से नाराजगी बताई जा रही है। राजस्थान सरकार ने जयपुर के शाही परिवार के राज महल पैलेस को पिछले दिनों सील कर दिया था, इससे उनके राजपूत नेताओं से संबंध और भी ज्यादा खराब हो गए। बीजेपी विधायक और शाही परिवार की सदस्य दिया कुमारी ने महल सील करने का खुलेआम विरोध किया था। इसके बाद मजबूर

होकर वसुंधरा सरकार को पैलेस से सील हटानी पड़ी। राज्य सरकार के इस कदम को राजपूतों ने पूरे समुदाय पर हमले के रूप में लिया था। कई राजपूत संगठनों ने तो कांग्रेस को समर्थन देने की घोषणा तक कर दी। इसने बीजेपी नेतृत्व को चिंता में डाल दिया। पिछले महीनों हुए उपचुनाव में भी वसुंधरा सरकार को राजपूत मतदाताओं के कोपभाजन का शिकार होना पड़ा था। बीजेपी को सभी तीन उपचुनावों में कांग्रेस के हाथों मात खानी पड़ी। केंद्र और आरएसएस के साथ अपने संबंधों के कारण वसुंधरा अब कोई रिस्क नहीं लेना चाहती। इसलिए राजपूतों को फिर से साधने के लिए वे यात्रा पर निकल पड़ी है।

भींडर ने किया यात्रा को हाइजेक

वसुंधरा राजे की गौरव यात्रा का भींडर में सबसे चर्चित पड़ाव रहा। जनता सेना विधायक रणधीर सिंह ने भाजपा के विरोध के बावजूद सीएम राजे की सभा करवाकर ही दम लिया। यहां तक की यात्रा के सारथी गृहमंत्री कटारिया की भी नहीं चली। कटारिया और उनके समर्थक सभा में नहीं पहुंचे। इधर, भटेवर में सभा कराने पर अड़े भाजपा कार्यकर्ताओं को सिर्फ स्वागत करने का मौका ही मिल पाया। भींडर में हुई सभा में राजे ने इशारो ही इशारों में रणधीर सिंह भींडर को फिर से जीत दिलाने की अपील की। दूसरी ओर पीडब्ल्यूडी मंत्री यूनुस खान ने भींडर को विकास पुरुष बताया। इस दौरान उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी भी साथ थीं। सभा की खास बात ये रही कि एक तरह से मंच भाजपा का था लेकिन डोम के नीचे जनता सेना थी। भाजपा का चुनाव चिन्ह कही भी नजर नहीं आया। सीएम के दाएं-बाएं रणधीर सिंह भींडर और उनकी पत्नी भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश उपाध्यक्ष दीपेंद्र कुंवर रहे। सभा के बाद कयास लगाए जा रहे है कि चुनाव से पूर्व भींडर फिर से भाजपा में शामिल हो सकते है।

स्वाधीनता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

जय जगदीश

किराणा स्टोर

लोंगी मिर्च, तेजा मिर्च, फटकी मिर्च, फाड़ा मिर्च,
लाल मिर्च, हल्दी, धनिया, बेसन व पिसी शक्कर व सभी
प्रकार के गरम मसाले, तेल, घी के थोक व रिटेल विक्रेता

नोट :- हमारे यहां सभी साबूत मिर्च, मसाले हाथों-हाथ पिसे जाते हैं।

मो. : - 9309359728 फोन :- 0294-2424423

12, शिवमार्ग, तेलीवाड़ा, उदयपुर (राज.)

छोटे-छोटे बदलाव पथरी से बचाव

पानी कम पीने और अस्वस्थ जीवनशैली के कारण शरीर में कुछ ऐसे अपशिष्ट पदार्थ बच जाते हैं जो पेशाब के जरिए पूरी तरह बाहर नहीं निकल पाते, तब वे किडनी में ही एकत्रित होते जाते हैं और पथरी का रूप ले लेते हैं। पथरी प्रारंभ में छोटे कणों के रूप में होती है। उनमें से बहुत से कण तो पेशाब के साथ बाहर आ जाते हैं। जो कण अंदर जमा होते रहते हैं, उनका आकार बढ़ता जाता है।

पथरी कई तरह की होती है। कैल्शियम आक्सलेट, कैल्शियम फास्फेट, यूरिक एसिड और सिस्टेन। कैल्शियम आक्सलेट के स्टोन अधिक होते हैं। कई लोगों को यूरिन इंफेक्शन की शिकायत अधिक रहती है या पेशाब नली ब्लाक होने की। ऐसे मरीजों को पथरी की आशंका अधिक होती है। कुछ बातों को समझ कर अगर हम अपनी जीवनशैली में सुधार ले आएं तो पथरी से बचाव कर सकते हैं ।

नमक कम लें

जो लोग सोडियम का अधिक सेवन करते हैं, उनकी किडनी कैल्शियम को अधिक एब्जॉर्ब करती है, जिससे पेशाब में कैल्शियम की मात्रा बढ़ जाती है। सोडियम अधिकतर डिब्बाबंद भोजन सामग्री में, जंक फूड, नमक, रेडी टू ईंट भोजन और चाइनीज फूड में होता है। भोजन में नमक का सेवन कम करें और जंक फूड, चाइनीज फूड और डिब्बाबंद भोजन से परहेज करें। भोजन में धनिया, नींबू, लहसुन, अदरक, करी पत्ता, काली मिर्च का प्रयोग करें।

पशुओं से प्राप्त प्रोटीन से बचें

गाय, भैंस के दूध और उनसे बने उत्पाद का सेवन कम करें। इनमें प्यूरीन नामक तत्व होता है जो पेशाब में यूरिक एसिड की मात्रा को बढ़ा देता है। इनके अधिक सेवन से पेशाब से अधिक कैल्शियम निकलने लगता है। मीट में भी प्यूरीन प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है। इसके अतिरिक्त चुकंदर, ब्रोकली, भिंडी, पालक, शकरकंद, ब्लैक टी, टमाटर, चाकलेट, सोयाबीन में आक्सलेट की मात्रा अधिक होती है इनका सेवन भी कम कर दें। अगर आप कैल्शियम सप्लीमेंट लेते हैं तो डाक्टर से परामर्श करें।

विटामिन सी का भी सेवन कम करें

विटामिन सी की अधिक मात्रा भी पथरी के खतरे को बढ़ाती है। विटामिन सी खट्टे रसेदार फलों में अधिक होता है। विटामिन सी सप्लिमेंट भी डॉक्टर से पूछ कर लें।

अन्य बदलाव

पेशाब को लंबे समय तक न रोकें। पसीना अधिक और पेशाब कम आता है, तो पेशाब के जरिए बाहर निकलने वाले पदार्थ किडनी में जमा हो जाते हैं इससे पथरी बनती है। पानी अधिक पिएं। कोल्ड ड्रिंक्स, पैक्ड ज्यूस, चाय-कॉफी का सेवन कम से कम करें। अगर आप पानी कम पीते हैं तो हर सप्ताह एक गिलास पानी की मात्रा बढ़ाएं ताकि पानी पीने की आदत में सुधार आ सके।

- डॉ. ओ. पी. महात्मा

बबूल को करें कबूल

रेतीली जमीन में उगने वाला पेड़ है, बबूल। इसकी लकड़ी से बना फर्निचर बहुत मज़बूत होता है। यह जलाने में भी अच्छी मानी जाती है। बबूल के पत्ते, फूल, कली, छाल, लकड़ी तथा गोंद सभी का प्रयोग दवा के रूप में किया जाता है। यह पौष्टिक, रक्तशोधक तथा अन्य रोगों को नष्ट करने में सहायक है।

सूखी खांसी

बबूल का गोंद व शक्कर समान भाग लेकर पीस लें। छोटे बेर के बराबर गोली बनाकर खांसी में एक गोली चूसने से शीघ्र लाभ होता है।

थूक में रक्त आना

बबूल के पत्ते घोंटकर प्रात: व सायं पिलाने से थूक में रक्त का आना बंद होता है।

दंत रोग

बबूल की हरी कोमल टहनी से दातुन करने से दांत मज़बूत व निरोग रहते हैं।

मसूड़े फूलना

बबूल की छाल जलाकर महीन पीस लें। इसमें नमक व काली मिर्च मिलाकर अंगुली से मसूड़ों पर मालिश कर लार टपकाएं। सुबह शाम के प्रयोग से मसूड़ों का बादीपन छंटता है।

बच्चों के दस्त

बबूल की कोंपलें, सफेद जीरा व अनार की कली 1-1 ग्राम लेकर चूर्ण बना लें। पानी में पीसकर छान लें। इस पानी को 2-3 बार पिलाएं। दस्त बंद रहेंगे।

धातु पुष्टि

बबूल की कच्ची कली बिना बीज वाली छाया में सुखा लें। फिर उसका चूर्ण बनाकर समभाग खांड मिला लें। प्रात: खाली पेट 9 ग्राम चूर्ण दूध या पानी से लें। कुछ ही दिनों में प्रमेह, प्रदर रोग दूर होते हैं।

पेशाब बंद होना

बबूल के पत्ते एक तोला, गोखरू एक तोला, कलमी शोरा 6 माशा पानी में घोंटकर पिलाने से रूका हुआ पेशाब खुलकर होने लगता है।

कान में मवाद

बबूल के फूल एक तोला, 2 तोला तिल के तेल में पकाएं। फूल काले होने पर तेल उतार कर छान लें। 2-3 बूंद तेल कान में डालें। कान के जख्म भरने और दर्द मिटाने की अचूक दवा है।

प्रमेह रोग

बबूल का कच्च पत्ता सेवन करने से प्रमेह रोग कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है।

-डॉ. शोभालाल औदिच्य

स्वंतत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

卐 ॐ जय भोलेनाथ 卐

खाली बोतलें, काँच शीशी, पेपर रद्दी, ओल्ड स्क्रेप एवं अन्य डिस्पोजल वस्तुओं के क्रेता एवं विक्रेता

विजय पंजवानी (विजु भाई)
मो. 7737746140, 9950271626
राकेश पंजवानी
मो. 9352524901, 7568267951

श्रीराम ओल्ड स्क्रेप

यूआईटी, शॉप नं. 8-9, आई.ओ.सी. डिपो के सामने, हिरणमगरी सेक्टर 11, उदयपुर

उदयपुर : विकास के कुछ बिंदु

उदयपुर में विकास और विस्तार की अपार संभावनाएं है। उदयपुर की पहचान पर्यटन के बड़े केंद्र की होने से यहां यहां इनोवेटिव काम की कद्र है। शहर के विकास के लिए हम सभी को कटिबद्ध होकर काम करना पड़ेगा। फिलहाल उदयपुर में कई जगहों पर सिवरेज के गड्ढे खोदे जा रहे हैं लेकिन इनको हाथो-हाथ नहीं भरा जा रहा हैं। ऐसे में जरूरत है इंफ्रास्ट्रक्चर के काम में टेक्नॉलोजी के समावेश की। इससे आमजन को सुविधा होगी और विकास के रास्ते निर्बाध रूप से खुलते जाएंगे। साथ ही कोई भी सरकारी संस्थान ये बहाना नहीं कर पाएगा कि इसके लिए अभी माकूल समय नहीं है। राष्ट्रीय राजमार्ग 8 उदयपुर के अंदर से होकर गुजर रहा है और इससे बार-बार जाम लगता है। लेकिन अब कलड़वास औद्योगिक क्षेत्र से होकर गुजरने वाले बाइपास से इस समस्या का स्थाई समाधान होगा।

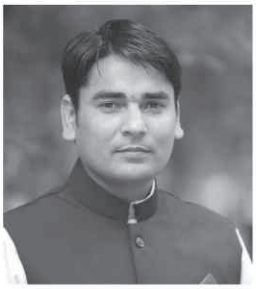

प्रवीण सुथार

फिल्म सिटी के लिए उदयपुर माकुल

फिल्म सिटी के लिए उदयपुर माकूल जगह है। यहां की अर्थव्यवस्था में पर्यटन घुला-मिला है। करीब छोटे-बड़े 500 होटल सैकड़ों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध करवा रहे है। फिल्म शूटिंग और वेंडिंग डेस्टिनेशन के रूप में भी यह शहर विश्व विख्यात बन गया है। ऐसे में सरकार को यहां पर्यटन को आगे बढ़ाने के लिए फिल्म सिटी स्थापित करने की योजना बनानी चाहिए। इससे रोजगार बढ़ेगा और उदयपुर की लोकप्रियता में चार चांद लगेंगे। आयड़ नदी उदयपुर की आत्मा है, इसकी सफाई बेहद जरूरी है। पानी की बूंद-बूंद का महत्व जानने वाले शहरवासियों को भी इसके लिए प्रयास करने होंगे।

उद्यमियों का विकास फोर्टी की प्राथमिकता

फोर्टी उदयपुर की प्राथमिकता उद्यमियों का विकास करना है। इसके लिए संस्था नियमित रूप से विषय विशेष जैसे ई-वे बिल, जीएसटी और विभागों से संबंधित विषयों पर सेमीनार का आयोजन करवाती है। संस्था की योजना इस वर्ष वुमन एंत्रप्रेन्योर को आगे बढ़ाने के लिए सेमीनार आयोजित करना है। साथ ही संभाग व राज्य के छोटे-बड़े उद्यमियों व व्यवसासियों को प्रोत्साहन मिले इसके लिए उन्हें सम्मानित करने की भी योजना है। (लेखक फैडरेशन ऑफ राजस्थान ट्रेड एंड इंडस्ट्रीज के संभागीय अध्यक्ष हैं)

We are grateful & thankful for keeping faith in us,
We will Create and Innovate Bright future for your ward.

CELEBRATING 30 Year of Excellence

A Name with Ample Opportunity in the Field of Education

ABHINAV
Senior Secondary School

Nursery to XII

(Hindi & English Medium)

SCIENCE COMMERCE ARTS

-: Campus :-
9, Adarsh Nagar, Behind Police Line,
Udaipur (Raj), 9413762552

www.udaipurabhinavschool.com

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लि.

(Retail Revolution)

शुद्धता --- विश्वसनीयता --- गुणवत्ता

उदयपुर भण्डार को सहकारी क्षेत्र में उत्तरी भारत का सर्वश्रेष्ठ भण्डार का गौरव प्राप्त है।

सुपर मार्केट की नियमित स्कीमें

समस्त उत्पाद (M.R.P.) से कम दरों पर

- 101 रुपए का सामान प्रतिमाह जीवन भर मुफ्त
  (10 हजार जमा योजना अन्तर्गत जमा कराने पर)
- 1 किलो शक्कर आधी कीमत पर 1500.00 रु. की खरीद पर
  या
  1 किलो शक्कर मुफ्त 2500-00 रु. की खरीद पर
  या
  1 लीटर खाद्य तेल मुफ्त 3500-00 रु. की खरीद पर
- 5 प्रतिशत की छूट समस्त नहाने के साबुन पर/ समस्त कपड़े धोने के साबुन पर/ समस्त डिसवॉश बार पर/ समस्त बिस्किट पर
- भण्डार की सदस्यता गृहण कर अधिक से अधिक लाभ उठावें
  1 प्रतिशत की छूट सदस्यता पर।
- www.thokbhandar.com वेबसाइट पर ऑनलाईन शॉपिंग सुविधा उपलब्ध है।

(पी.पी. माण्डोत)
प्रशासक

(आशुतोष भट्ट)
महाप्रबन्धक

* (शर्तें लागू)

जावर की पहाड़ियों में मूषाओं के मकान

मूषाओं के मकान के लिए दीवार के अवशेष जिसमें मूषाओं को आड़ा प्रयोग किया गया है (इनसेट) अमेरिकन सोसायटी ऑफ मेटल्स की ओर से दी गई मान्यता का पाषाण पर उत्कीर्ण प्रमाणन जिसमें यूरोप की औद्योगिक क्रांति में जावर की भूमिका को रेखांकित किया गया है।

दस साल पहले जब मैं 'समरांगण सूत्रधार' ग्रंथ पर काम कर रहा था तो उसमें भवन में मूषाओं के प्रयोग के संबंध में कई निर्देश थे और मैं 'मक्षिका स्थाने मक्षिकाम्' की तरह की मूल शब्द का ही प्रयोग करके एक बार तो आगे से आगे अर्थ करता चला गया। बाद में जो अर्थ होना चाहिए था, वह पुनर्स्थापित किया किंतु उदयपुर जिले के जावर में तो मूषाओं के प्रयोग को देखकर फिर कोई नया अर्थ सामने आ गया। जरूर भोजराज के समय, 10वीं सदी तक जावर जैसा प्रयोग लुप्त हो गया होगा। जावर दुनिया में सबसे पहले यशद देने वाली खदान के लिए ख्यात रहा है। यशद या जिंक का प्रयोग होने से पहले इस धातु को जिन लोगों ने खोजा और वाष्पीकृत होने से पहले ही धातुरूप में प्राप्त करने की विधि को खोजा- वे भारतीय थे और मेवाड़ के जाये जन्मे थे। सामान्य घरों में रहने वाले और जिस किसी तरह गुजारा करने वाले। जावर की खदान सबसे पहले चांदी के लिए जानी गई और ये पहाड़ों में होने से इनको 'गिरिकूप' के रूप में शास्त्र में जाना गया। पर्वतीय खानों में उत्खनन के लिए पहले ऊपर से ही खोदते-खोदते ही भीतर उतरा जाता था। शायद इसी कारण यह नाम हुआ हो। यहां 'मंगरियो कूड़ो' या 'डूंगरियो खाड़' कहा भी जाता है।

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

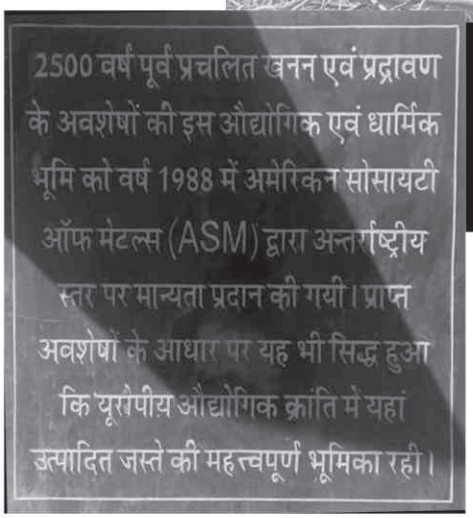

तो, करीब ढाई हजार साल पहले यहां धातुओं के लिए खुदाई ही नहीं शुरू हुई बल्कि अयस्कों को निकालकर वहीं पर प्रदावण का कार्य भी आरंभ हुआ। जरूर यह समय मौर्यपूर्व रहा होगा तभी तो चाणक्य ने पर्वतीय खदानों की पहचान करने की विधि लिखी है और आबू देखने पहुंचे मेगस्थनीज ने भी ऐसी जगहों को पहचान कर लिखा था।

यहां प्रदावण का कार्य इतने विशाल स्तर पर हुआ कि यदि कोई जावर देख ले तो आंखें पलक झपकना भूल जाए। हर कदम पर रोमांच लगता है। कदम-दर-कदम मूषाओं का भंडार और उनमें भरा हुआ अयस्क चूर्ण जो जब पिघला होगा तो धातु की बूंद बनकर टपका होगा। धातु तत्काल हथिया लिया गया मगर मूषाओं का क्या करते ? एक मूषा एक ही बार काम में आती है। इसी कारण बड़े पैमाने पर यहां मूषाओं का निर्माण भी हुआ और उनका प्रदावण कार्य में उपयोग भी। प्राचीन भारतीय प्रौद्योगिकी का जीवंत साक्ष्य है जावर, जहां कितनी तरह की मूषाएं बनीं, यह तो उनका स्वरूप देखकर ही बताया जा सकता है मगर 'रस रत्न समुच्चय' आदि ग्रंथों में एक दर्जन प्रकार की मूषाएं बनाने और औषधि तैयार करने के जिक्र मिलते हैं। इनके लिए मिट्टी, धातु, पशुरोम आदि जमा करने की अपनी न्यारी और निराली विधियां हैं मगर, रोचक बात ये कि अयस्क का चूर्ण भरकर उनका मुख कुछ इस तरह के छिद्रित ढक्कन से बंद किया जाता था कि तपकर द्रव सीधे आग में न गिरे अपितु संग्रहपात्र में जमा होता जाए। प्रदावण के बाद बची, अनुपयोगी मूषाओं का क्या उपयोग होता ? तब यूज़ एंड थ्रो की बजाय, यूज़ आफ्टर यूज़ का मन बना और मूषाओं का उपयोग कामगारों ने अपने लिए आवास तैयार करने में किया। कार्यस्थल पर ही आवास बनाने के लिए मूषाओं से बेहतर कोई वस्तु नहीं हो सकती थी। जिस मिट्टी से मूषाओं को बनाया जा रहा था, उसी मिट्टी के लौंदों से मूषाओं की दीवारें खड़ीकर चौकोर और वर्गाकार घर बना दिए गए। ये घर भी कोई एक मंजिल वाले नहीं बल्कि दो-तीन मंजिल वाले रहे होंगे। है न रोचक भवन विधान।

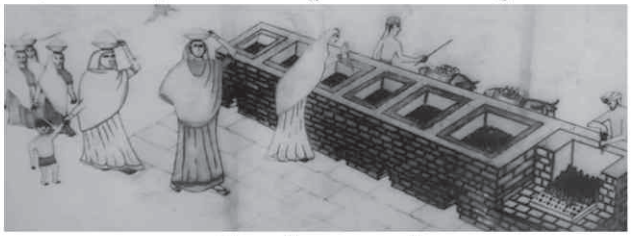

प्राचीन भट्टी का एक प्रादर्श।

ये बात भी रोचक है कि हवा के भर जाने के कारण वे समताप वाले भवन रहे होंगे। अंधड़ के चलने पर और बारिश के होने पर उन घरों की सुरक्षा का क्या होता होगा, मालूम नहीं। उनमें रहने का अनुभव कैसा रहा होगा, हममें से शायद ही किसी को ऐसे हवादार घर में रहने का अनुभव हो।

मगर, जावर की पहाड़ियां ऐसे मूषामय घरों की धनी रही हैं। आज केवल उनके अवशेष नजर आते हैं। कोई देखना चाहे तो जावर उनको बुला रहा है। अनुज श्रीनटवर चौहान को धन्यवाद कि वह इस नवरात्र में मुझे जावर ले गया और मैं पूरे दिन इन मूषाओं के स्वरूप और मूषाओं के मकानों को देख देखकर हक्का-बक्का रहा। हम सबके लिए अनेक आश्चर्य हो सकते हैं, मगर मेरे लिए जावर भी एक बड़ा आश्चर्य है जहां आंखें जो देखती है, जबान उसका जवाब नही दे सकती। हां, कुछ वर्णन जरूर मैंने अपनी 'मेवाड़ का प्रारंभिक इतिहास' में किया है।

गजानन को लगाएं लड्डूअन का भोग

13 सितम्बर : गणेश चतुर्थी गणेश मंदिरों और घरों में विशेष पूजन-अनुष्ठान होंगे। भक्त भजन मण्डलियों की ताल पर गजानन को रिझाएंगे। गजानन 'मोदकम् प्रियम्', उन्हें प्रसन्न करने के लिए उनके मनपसंद और बनाने में आसान मोदक घर में ही बनाएं और पूर्ण भक्तिभाव से लगाएं रिद्धि-सिद्धि प्रदाता प्रथम पूज्य गणेशजी को भोग।

चूरमे के लड्डू

सामग्री : आटा आधा किलो, घी-आधा कप मोयन के लिए, मावा-200 ग्राम, इलायची पाउडर-आधा छोटा चम्मच, काजू-बादाम-पिस्ता(कटे हुए)-आधा कप, दरदरी खांड(शक्कर)-250 ग्राम। **यूं बनाएं :** सबसे पहले आटे में मोयन मिलाकर आटा गूंथ लें, फिर धीमी आंच पर उसके मोटे-मोटे परांठे सेक लें। इन परांठों को हाथों से मसल लें या मिक्सी में पीस लें। यदि परांठा न बनाएं तो गूंथे हुए आटे की बाटी बनाकर कण्डों की मझरी आंच में अच्छी तरह सेक लें। बाद में कपड़े से पोंछ कूट कर या मिक्सी में बारीक पाउडर बना सकते हैं। उसके बाद मावा सेक कर मिला लें। फिर ठंडा होने दें। उसके बाद मेवा, इलायची पाउडर और खांड मिला दें और लड्डू बना लें। यदि आप दरदरी खांड नहीं मिलाना चाहतीं तो बूरा मिला दें।

मावा लड्डू

सामग्री : मावा - एक किलो, बूरा-200 ग्राम, इलायची पाउडर-आधा इलायची पाउडर, कटे हुए मेवा - आधा कप(मिले-जुले)।

यूं बनाएं : मावा हल्का सा सेक लें और फिर ठंडा करें, फिर इसमें सारी सामग्री मिला दें। आप चाहें तो इसमें सेक कर और कूट कर सफेद तिल भी मिला सकती हैं।

मूंग दाल का मोदक

सामग्री : मूंग की धुली दाल-एक कप, सूजी-दो छोटे चम्मच, चीनी-एक कप, पानी-पौन कप, इलायची पिसी-एक छोटा चम्मच, बादाम-पिस्ता, दो बड़े चम्मच, देशी घी-एक कप।

यूं बनाएं : मूंग की धुली दाल को धोकर साफ करें। इसे दो-तीन घंटे के लिए पानी में भीगने दें और फिर पानी निथार कर मिक्सी में एकदम महीन पीस लें। अब चीनी में पानी डालकर डेढ़ या दो तार की चाशनी बना कर अलग रख लें। अब एक मोटे पैंदे वाली कड़ाही में घी गर्म कर इसमें दाल की पिट्ठी और सूजी डालकर एकदम धीमी आंच पर लगातार हाथ चलाते हुए पकाएं। जब मिश्रण सुनहरी रंग का होने लगे ओर साथ ही सौंधी खुशबू ओन लगे तो इसमें तैयार चाशनी व पिसी इलायची डालकर तेजी से हाथ चलाते हुए पकाएं। जब मिश्रण किनारे छोड़ने लगे तो गैस बंद कर दें। मनचाहे आकार के लड्डू बनाएं।

बूंदी के लड्डू

सामग्री : बेसन-एक कप, चीनी-डेढ़ कप, केसर-आधा छोटा चम्चम, हरी इलायची-5 से 7, तेल-तलने के लिए। **यूं बनाएं :** सबसे पहले चीनी में पौन कप पानी मिलाकर इसे गैस पर रखें। चीनी से एक तार की चाशनी तैयार कर लें। अब बेसन में दो छोटे चम्मच तेल, केसर, इलायची के दाने व आवश्यकतानुसार पानी मिलाकर पतला घोल बना लें। कड़ाही में तेल गर्म करें। तैयार घोल को झारे में डालते हुए सीधे तेल में बूंदी छोड़ें। बूंदी जब तलकर तेल के ऊपर आ जाए तो इसे निकालकर गर्म चाशनी में आधे से एक घंटे के लिए छोड़ें, जिससे बूंदी चाशनी को अच्छी तरह सोख ले। अब इस मीठी बूंदी से मध्यम आकार के लड्डू बनाकर भोग लगाएं।

- रेणु शर्मा

कुत्ते को मारने के लिए 48 लाख की 'सुपारी'

बागोटा। दक्षिणी अमेरिकी देश कोलंबिया में ड्रग माफियाओं ने एक कुत्ते को मारने के लिए 70 हजार डॉलर(48 लाख रुपये) की सुपारी दी है। कोलंबिया में एंटी नारकोटिक्स पुलिस बल से जुड़े जर्मन शेफर्ड नस्ल के इस कुत्ते का नाम सोंबरा है। सोंबरा कार और हवाई अड्डों पर छुपा कर रखे गए कोकीन को खोजने में माहिर है। कोलंबिया की उड़ाबेन्यॉस गैंग ने इस कुत्ते को मारने पर इनाम देने की घोषणा की है। सोंबरा ने गैंग के 10 टन कोकीन को पकड़वाया था जिसके बाद उस पर इनाम रखा गया। उड़ाबेन्यॉस को कोलंबिया का सबसे ताकतवर आपराधिक संगठन माना जाता है। सोंबरा को अब गैंग के गढ़ से हटाकर बोगोटा एयरपोर्ट पर ड्यूटी पर लगा दिया गया है।

उड़ाबेन्यॉस गैंग

कोलंबिया में ड्रग तस्करी को उड़ाबेन्यॉस गैंग नियंत्रित करता है। इस गैंग को गल्फ क्लान के नाम से भी जाना जाता है। उड़ाबेन्यॉस गैंग के रास्ते में आने वाले लोगों को हटाने के लिए पैसा देना कोई नई बात नहीं है। गैंग ने पुलिसकर्मियों को मारने के लिए भी 500 डॉलर का इनाम रखा था।

245 गिरफ्तारियां करा चुका

कोलंबिया के काउंटर नारकोटिक्स पुलिस में सोंबरा जब छोटा था तब से काम कर रहा है। वह ड्रग की खोज में अब तक 245 संदिग्धों को गिरफ्तार कर चुका है।

पुलिस अफसर तैनात

अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर तैनाती से सोंबरा पर खतरा कम हुआ है। क्योंकि काउंटर नारकोटिक्स बल कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहता था। पुलिस का कहना है कि सोंबरा के साथ रहने वाले एक हैंडलर के अलावा उसके साथ अतिरिक्त पुलिस अफसरों को लगाया गया है ताकि तैनाती के दौरान उसकी सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।

पनडुब्बी, कार के पुर्जों में छिपाकर कोकीन तस्करी

प्रशांत तट बंदरगाह पर छह वर्षीय सोंबरा को तैनात किया गया था। ये वह जगह जहां पर स्पीडबोट और कभी-कभी पनडुब्बी के जरिए मध्य अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में टनों कोकीन भेजा जाता है। टर्बो में सोंबरा ने 5.3 टन कोकीन पकड़ा था। जबकि हाल में कार के पुर्जों में छिपाकर चार टन कोकीन भेजा जा रहा था जिसे भी सोंबरा ने ही पकड़वाया था।

जानकारी

बुढ़ापे की रफ्तार को ब्रेक

वैज्ञानिकों ने दावा किया दवा बनाने का, झुर्रियां गायब, बाल रहेंगे काले

आदमी अपनी जवानी बरकरार रखने के लिए सौ-सौ जतन करता है। मगर उम्र का असर नजर आ ही जाता है। वैज्ञानिकों ने ऐसी एंटीबायोटिक दवा बनाने का दावा किया है, जिससे उम्र का असर कम किया जा सकेगा। यह अध्ययन यूनिवर्सिटी ऑफ अलबामा के शोधकर्ताओं ने किया है। चूहों पर किए अध्ययन में विशेषज्ञ झुर्रिया और बालों की सफेदी दूर करने में सफल रहें। बर्मिंघम स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ अलबामा में शोधकर्ताओं ने इसके लिए एक खास तरह की एंटीबायोटिक दवा बनाकर उसका चूहों पर परीक्षण किया। इस दवा के जरिये वैज्ञानिकों ने चूहों की कोशिकाओं में मौजूद माइटोकॉन्ड्रिया में बदलाव किया। उन्होंने पाया कि उनका प्रयोग सफल रहा।

चूहों पर किया गया प्रयोग सफल रहा

अध्ययन के दौरान चूहों को भोजन में मिलाकर डॉक्सीसाइक्लीन एंटीबायोटिक दवाएं दीं, जिससे ऐसे एंजाइम प्रभावित हुए जो माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए की प्रतिकृति बनाने में मदद करते हैं। इससे कोशिकाओं को मिलने वाली ऊर्जा की आपूर्ति बाधित हुई। चार हफ्तों तक डॉक्सीसाइक्लीन की डोज देने के बाद चूहों में झुर्रियां दिखने लगी और बाल सफेद होने लगे। उनमें उम्र से संबंधी शिथिलता और थकावट भी देखने को मिली।

इलाज में मदद मिलने की उम्मीद

प्रमुख शोधकर्ता प्रोफेसर केशव सिंह का कहना है कि इस शोध से भविष्य में उम्र से जुड़ी बीमारियों के इलाज में मदद मिलने की उम्मीद है। यह अध्ययन सेल बायोलॉजी में प्रकाशित हो चुका है।

कोशिका निर्माण में माइटोकॉन्ड्रिया अहम

इस मामले में शोधकर्ताओं का कहना है कि कोशिकाओं का पावर हाउस कहा जाने वाला माइटोकॉन्ड्रिया का सामान्य कामकाज प्रभावित होने लगता है। जीवित रहने के लिए जरूरी 90 फीसदी ऊर्जा कोशिकाओं का निर्माण माइट्रोकॉन्ड्रिया करता है। इसलिए उसके असामान्य काम करने से उम्र से जुड़ी बीमारियां इंसान को अपना शिकार बनाने लगती है। शोधकर्ताओं ने बताया कि इनमें हृदय संबंधी और कैंसर जैसी बीमारियों का नाम लिया जा सकता है।

अलविदा कहें डैंड्रफ को

-निष्ठा शर्मा

डैंड्रफ हेल्दी बालों को दुश्मन होता है। जरा सी लापरवाही से जड़ें कमजोर हो जाती हैं और बाल गिरने लगते हैं। डैंड्रफ का मुख्य कारण है बालों की ठीक से सफाई न करना और शरीर में पोषक तत्वों की कमी का होना। डैंड्रफ होने पर सिर में खुजली होती है, अधिक खुजलाने से सिर की त्वचा पर घाव भी हो जाते हैं।

क्यों होता है डैंड्रफ

मुख्य कारण हैं सिर की त्वचा की देखभाल में कमी, हार्मोनल असंतुलन, समुचित पोषणता की कमी, मानसिक तनाव, किसी विशेष शैंपू से एलर्जी होना, हेयर कलर, मौसम में बदलाव, प्रदूषित वातावरण इसकी मुख्य वजह है।

डैंड्रफ होने पर क्या करें

- संतुलित व पौष्टिक आहार लें। विटामिन-ई, प्रोटीन, कैल्शियम युक्त आहार लें।
- सप्ताह में दो से तीन बार बालों में शैंपू करें।
- खुजली डैंड्रफ के कारण हो रही हो तो बालों में नीम का तेल लगाएं।
- बाल धोने से पूर्व बालों पर हल्की कंघी या ब्रश करें।
- सिर पर अतिरिक्त तेल आने से पूर्व बाल शैंपू कर लें।
- खुजली होने पर तेज कंघी या ब्रश न करें।
- तनाव से बचें। मेडिटेशन करें।
- खाने में अधिक ऑयली फूड न खाएं, मसाले भी कम से कम खाएं।
- सिर की त्वचा पर तेल मालिश करने के बाद हॉट टॉवल थेरेपी लें, बाद में शैंपू करें।
- बालों में हर्बल एंटी डैंड्रफ शैंपू का प्रयोग करें, बाद में कंडीशनर का भी प्रयोग करें।
- गीले बालों पर कंघी न करें।

इसे भी आजमाएं

आलिव ऑयल बालों के लिए अति उत्तम है। इससे बालों को उचित नमी मिलती है। जिससे बाल चमकदार बनते हैं और डैंड्रफ भी दूर होता है। ऑलिव ऑयल गुनगुना कर बालों में लगाएं। बालों में शहद का प्रयोग लाभदायक हैं शहद में विटामिन्स व मिनरल्स होते हैं जो बालों को पौष्टिकता प्रदान करते हैं। शहद में एंटी एलर्जिक और एंटी बैक्टीरियल गुण भी होते हैं। इससे डैंड्रफ दूर होता है।

आधा कप शहद में एक छोटा चम्मच आलिव आयल डालें और मिश्रण को बालों में लगाएं और बालों को तौलिये से आधे घंटे तक ढक कर रखें। डैंड्रफ के लिए यह नुस्खा बहुत अच्छा है। शैंपू आधे घंटे बाद करें।

THE BANSWARA CENTRAL CO-OPERATIVE BANK LTD

Head Office, College Road, Banswara-327001

द बांसवाड़ा सेन्ट्रल कॉ-ओपरेटिव बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय, कॉलेज रोड, बांसवाड़ा 327001 फोन :- (02962) 243784

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

बैंक एवं लेम्प्स से संबंधित समस्त सदस्यों से निवेदन है कि सहकारी फसली ऋण माफी योजना 2018 का लाभ लेने हेतु कार्यक्षेत्र की लेम्प्स में ऋण माफी सूचियों का एक बार आवश्यक रूप से अवलोकन कर पुष्टि करें, जिन सदस्यों द्वारा आज दिनांक तक ऋण माफी प्रमाण पत्र प्राप्त नहीं किया गया है, वे समिति व्यवस्थापक से संपर्क कर प्रमाण पत्र प्राप्त करें, जिन ऋणी सदस्यों की मृत्यु हो चुकी हैं, उनके विधिक उत्तराधिकारी मृत्यु प्रमाण पत्र/ अन्य दस्तावेज समिति में जमा करवाएं।

प्रशासक

प्रबंध निदेशक

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

सितम्बर का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ है, किन्तु इसके बाद अड़चनों के साथ कार्य सम्पादित होंगे। परेशानियों के बारे में सोचते रहने एवं बातों को बढ़ा-चढ़ा कर व्यक्त करने की आदत आपको मानसिक रूप से कमजोर बना देगी। आर्थिक पक्ष सामान्य, स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव, जीवन साथी से तनाव की स्थिति, कार्य प्रभार का बोझ भी इस माह कुछ ज्यादा ही रहेगा।

वृषभ

नये विचार एवं नये कार्यों का सृजन होगा। आर्थिक पक्ष की मज़बूती के लिए नए स्रोत बनेंगे। त्वचा सम्बन्धित समस्या उत्पन्न होगी, व्यवसाय एवं नौकरी पेशा लोगों के लिए स्थान परिवर्तन के संकेत हैं। मित्र लाभदायक सिद्ध होंगे, दाम्पत्य स्थिति सामान्य, शिक्षा में अभिरूचि बढ़ेगी।

मिथुन

यह माह आर्थिक समस्याओं से जूझने का है। आंखों की समस्या परेशान कर सकती है, कॅरियर एवं व्यवसाय में बाधा अनुभव करेंगे, नौकरी पेशा आराम महसूस करेंगे। विवाद, मतभेद एवं दूसरों की कमियाँ निकालने की प्रवृत्ति को नज़रन्दाज करें।

कर्क

ऑफिस के कार्यों में सावधानी की आवश्यकता है, आर्थिक पक्ष एवं रूके हुए कार्यों से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, अध्यापन करने वालों को लाभ मिलेगा, थोक व्यापार में कोई बड़ा लेन-देन न करें। बाहरी लोगों के हस्तक्षेप से वैवाहिक जीवन में परेशानी सम्भव, सावधान रहें। सन्तान पक्ष से मनमुटाव सम्भव।

सिंह

सिंह : माह का उत्तरार्द्ध कष्टकारी संभव है, जमीन-जायदाद के विवाद में फसे जातकों को राहत मिल सकती है, किसी को भी उधार न दें। प्रतियोगी परीक्षा के लिए उत्तम समय, धन के मामले में समय सामान्य, अत्यधिक व्यस्तता के कारण आकस्मिक थकान महसूस करेंगे। पति-पत्नी में किसी विषय को लेकर तकरार रहेगी, नौकरी पेशा लोगों पर काम का भार अधिक होगा।

कन्या

यह माह श्रेष्ठ फल देगा, मनमुताबिक कार्य सम्पादन होंगे और मित्रों के साथ मनोरंजन का अवसर प्राप्त होगा। राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं में सफलता की शुरुआत, धार्मिक कार्यों में मन लगेगा, नौकरी एवं पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, भौतिक सुविधाओं पर अत्यधिक खर्चा होगा, आर्थिक पक्ष श्रेष्ठ, स्वास्थ्य भी उत्तम।

तुला

यह माह उत्तम फल देने वाला है, नौकरी, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में लगे जातकों को श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त होंगे और कोर्ट कचहरी के मामले पक्ष में रहेंगे। आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी, स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी। जीवन साथी के साथ सामंजस्य की पूरी कोशिश करें। अच्छे विचारों से काम बनते जाएंगे।

वृश्चिक

माह सामान्यफल दायी, बेवजह की यात्रा परेशान कर सकती है। कमर की पीड़ा आंशिक सुधार, बेवजह के विचार एवं तिल का ताड़ करने की आदत परेशानियां बढ़ा सकती है। आमदनी मनवांछित नहीं होने से कुछ परेशानी होगी। दाम्पत्य जीवन श्रेष्ठता लिए रहेगा।

धनु

माह उत्तम है। पिता का सहयोग जीवन में परिवर्तन लाएगा, प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उत्तम समय है, परिवार में हर्ष एवं मांगलिक कार्य हो सकते हैं, आर्थिक स्थिति अच्छी रहे, स्वास्थ्य उत्तम कोटि का रहेगा। नौकरी की तलाश कर रहें जातकों की चाह पूरी होगी, व्यवसाय में निवेश का समय उचित है, दाम्पत्य जीवन श्रेष्ठ।

मकर

मित्रों का सहयोग काम आएगा, शत्रुओं से सावधान रहने की आवश्यकता है, अन्तःकरण की आवाज सुनकर ही कोई निर्णय लें, सन्तान की ओर से मन चिन्तित रह सकता है, आर्थिक प्रगति में बाधाएँ उत्पन्न होंगी, मधुमेह वाले जातक विशेष रूप से सावधानी रखें, व्यवसाय में कोई नया प्रयोग न करें।

कुम्भ

वाहन मकान आदि की मुरादें पूरी हो सकती हैं, कोई महिला सहयोगी बन सकती है, नैतिकता के प्रति मन आकर्षित रहेगा, मित्रों की मदद से वित्तीय कठिनाइयाँ दूर होंगी। व्यवसाय में परिवर्तन के योग बनेंगे, नौकरी पेशा सहकर्मियों से मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखें, तन एवं मन दोनों से स्वस्थ रहेंगे।

मीन

माह आपके लिए सामान्य है। कोई भी कार्य पूर्ण सोच-विचार के साथ करें। गुस्से में कोई कदम नहीं उठायें, आपसी सम्बन्धों पर विशेष ध्यान दें। दूसरों को प्रभावित करने के लिए जरूरत से ज्यादा खर्च न करें, शेयर मार्केट हानि पहुँचा सकता है, वैवाहिक जीवन में कटुता के संकेत है, संतान से भी मनमुटाव संभव।

बिरला सीमेंट उत्तम

मंगलम् सीमेंट लिमिटेड

बिरला उत्तम परिवार की ओर से
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

जल कम...जलन कम

954 954 6655
www.mangalamcement.com

प्रो. सारंगदेवोत कार्यकारी अध्यक्ष

उदयपुर। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ(डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत को ऑल इंडिया एसोसिएशन ऑफ वाइस चांसलर एवं एकेडमिशन्स का कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। नई दिल्ली में आयोजित एसोसिएशन की तीन दिवसीय बैठक में उनके निर्वाचन के साथ ही कई

महत्वपूर्ण निर्णय हुए। सेमीनार में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह ने एकेडमिक अवेकनिंग त्रैमासिक पत्रिका का विमोचन भी किया। पत्रिका के मुख्य सम्पादक प्रो. सारंगदेवोत ने बताया कि पत्रिका में यूजीसी, एआईसीटी, एमएचआरडी की ओर से उच्च शिक्षा में हुए निर्णयों, नियमों, उपनियमों की क्रियान्विति के बारे में समीक्षात्मक विवरण पेश किए गए हैं।

डॉ. अरविन्दर का आईआईएएम में चयन

उदयपुर। अर्थ डायग्नोस्टिक के डॉ. अरविन्दर सिंह इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्बिटेशन व मीडिएशन में चयनित हुए हैं।

उन्होंने बताया कि 40 घंटे की ट्रेनिंग व परीक्षा उत्तीर्ण कर इंटरनेशनल निगोशिएसन व मीडिएशन(मध्यस्थ) करने वाले राजस्थान के पहले डॉक्टर बने हैं। वह लॉ की पढ़ाई कर रहे हैं और इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (उदयपुर चैप्टर) के लीगल एडवाइजर हैं।

सहयोग दर्पण का विमोचन

उदयपुर। व्यापार मंडल हिरण सेक्टर 5 एवं 6 के समारोह में टेलीफोन निर्देशिका 'सहयोग दर्पण' का विमोचन हुआ। बतौर अतिथि सांसद अर्जुनलाल मीणा, महेन्द्र टाया, संजय भंडारी एवं चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष पारस सिंघवी ने निर्देशिका का विमोचन किया। मंडल सचिव कुलदीप मेहता ने बताया कि मंडल अध्यक्ष मनोज जैन ने अतिथियों का स्वागत किया। संचालन जयेश मेघनानी ने किया।

बड़ी में बैंक ऑफ बड़ौदा का एटीएम

उदयपुर। बैंक ऑफ बड़ौदा जयपुर अंचल के प्रमुख एवं महाप्रबंधक नवीनचन्द्र उप्रेती, उदयपुर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रमुख एवं उपमहाप्रबंधक अशोक डंगायच व पद्मश्री कैलाश

एटीएम का शुभारम्भ करते महाप्रबन्धक नवीनचन्द्र उप्रेती, डीजीएम अशोक डंगायच, पद्मश्री कैलाश 'मानव' एवं प्रशांत अग्रवाल।

मानव ने नारायण सेवा संस्थान के लियो का गुड़ा स्थित परिसर में बैंक के एटीएम का संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। उप्रेती ने संस्थान में दिव्यांगों के लिए चलाए जा रहे व्यवसायोन्मुखी प्रशिक्षणों का भी अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि बैंक ऑफ बड़ौदा दिव्यांगो की सेवा के इस मिशन में जो भी संभव होगा, मदद करेगा। विशिष्ट अतिथि जयपुर कार्यालय के निरीक्षण एवं अंकेक्षण विभाग जयपुर के उप महाप्रबंधक संजय भगोलीवाल, सहायक महाप्रबंधक एवं डीआरएम प्रजीत कुमार तथा पूर्व महाप्रबंधक विपिन पारीक ने भी विचार व्यक्त किए। आरंभ में संस्थापक कैलाश मानव ने स्वागत करते हुए कहा कि बैंक द्वारा स्थापित एटीएम से यहां देश के विभिन्न भागों से पोलियो करेक्टिव सर्जरी के लिए आने वाले दिव्यागों एवं उनके परिजनों को काफी सहूलियत मिलेगी। अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि इस एटीएम से आस-पास के गांवों को भी सुविधा होगी। संचालन ओमपाल सीलन एवं महिम जैन ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के लेखाधिकारी अम्बालाल श्रोत्रिय व जितेन्द्र गौड़ ने किया।

डॉ. धींग परामर्शक नियुक्त

उदयपुर। अणुव्रत महासमिति, नई दिल्ली की इकाई अणुव्रत लेखक मंच का परामर्शक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को नियुक्त किया गया है। महासमिति अध्यक्ष अशोक संचेती ने बताया कि अणुव्रत आन्दोलन में डॉ. धींग के योगदान को देखते हुए सत्र 2018-19 के लिए यह नियुक्ति की गई है।

महिला अरबन बैंक ने 23वां स्थापना दिवस मनाया

स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शामिल उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी, बैंक अध्यक्ष पुष्पा सिंह, वाइस चेयरपर्सन सोनल अजमेरा, पी.पी. मांडोत व आशुतोष भट्ट ।

उदयपुर। दी उदयपुर महिला अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि. की अध्यक्ष पुष्पासिंह ने बताया कि बैंक की शाखाओं की संख्या जल्दी ही 11 होंगी। चार नई शाखाएं खोलने पर काम चल रहा है। यह घोषणा उन्होंने पिछले दिनों बैंक के 23वें स्थापना दिवस पर की। उन्होंने बताया कि बैंक से 4500 शेयरधारक जुड़े हुए हैं और हिस्सा पूंजी 1.51 करोड़ रुपए हैं। स्थापना समारोह की मुख्य अतिथि राज्य की उच्च शिक्षा मंत्री किरण माहेश्वरी व विशिष्ट अतिथि मेयर चन्द्रसिंह कोठारी थे। जिन्होंने बैंक के प्रथम 25 खाताधारकों एवं श्रेष्ठ शाखाधिकारियों को सम्मानित किया। मुख्य कार्यकारी अधिकारी मीनाक्षी नागर ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। जबकि संचालन प्रीति झामरिया ने किया।

रायन में इन्टरेक्ट क्लब

उदयपुर। रोटरी क्लब हेरिटेज ने गोवर्धनविलास स्थित रायन इन्टरनेशनल स्कूल में इन्टरेक्ट क्लब का गठन कर बच्चों में सेवा की नींव डालने की शुरुआत की। पदस्थापना अधिकारी एवं क्लब ट्रेनर दीपक शर्मा ने इन्टरेक्ट क्लब के नवनियुक्त अध्यक्ष मेघना तलदार, सचिव सोन्दाली राठौड़ एवं कार्यकारिणी को शपथ दिलाई। मुख्य अतिथि जिला सैनिक बोर्ड के सचिव गुमानसिंह राव ने कहा कि रोटरी अन्तर्राष्ट्रीय द्वारा बच्चों में सेवा की भावना पैदा करना सराहनीय है। रोटरी क्लब हेरिटेज के अध्यक्ष जयेश पारीख ने कहा कि क्लब समाज सेवा कार्यों में बच्चों को जोड़ेगा। समारोह में क्लब सचिव राहुल शाह, क्लब की इन्टरेक्ट कमेटी के चेयरमैन शैलेन्द्र सोमानी, राहुल भटनागर, दीपक सुखाड़िया, आशीष बांठिया, धीरेन्द्र सच्चान सहित अनेक सदस्य मौजूद थे।

राज्यपाल ने किया 18 विभूतियों का सम्मान

उदयपुर। मेवाड़ क्षत्रिय महासभा की ओर से पिछले दिनों चित्रकूट नगर स्थित मीरा मेदपाट भवन में शिक्षा, साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले 18 समाजजनों को पंजाब के राज्यपाल वी पी सिंह, संरक्षक मनोहर सिंह कृष्णावत, महासभा अध्यक्ष बालूसिंह कानावत, तेजसिंह बांसी, जौहर संस्थान के संरक्षक उम्मेद सिंह धोली ने माला, पगड़ी, उपरणा एवं स्मृति पत्र देकर सम्मानित किया। शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डिम्ड टू बी विवि के कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत को भी सम्मानित किया गया।

उपाध्याय ने नया पदभार संभाला

उदयपुर। भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी जितेन्द्र कुमार उपाध्याय ने राजस्थान के खान एवं भू विज्ञान विभाग के निदेशक का पदभार संभाल लिया। उपाध्याय इससे पूर्व देवस्थान विभाग के आयुक्त थे। वे उदयपुर में खान एवं भू विज्ञान अतिरिक्त निदेशक, अतिरिक्त संभागीय आयुक्त, अतिरिक्त जिला कलक्टर सहित अन्य जिलों के प्रशासनिक एवं महत्वपूर्ण विभागों में वरिष्ठ पदों पर सेवाएं दे चुके हैं।

डॉ. कुमावत रेल मंत्रालय में निदेशक मनोनीत

उदयपुर। आलोक स्कूल के निदेशक डॉ. प्रदीप कुमावत को रेल मंत्रालय में गैर आधिकारिक तौर पर स्वतंत्र निदेशक के रूप में मनोनीत किया गया है। रेलवे बोर्ड (पीसीओ) निदेशक राजीव गुप्ता के अनुसार उनकी नियुक्ति 3 साल के लिए है। विभिन्न संगठनों व समाजों द्वारा कुमावत का स्वागत किया गया।

डॉ. पोसवाल नए अधीक्षक

उदयपुर। राज्य सरकार के आदेश पर प्रोफेसर डॉ. लाखन पोसवाल ने एमबी हॉस्पिटल के नए अधीक्षक के रूप में पद भार संभाल लिया। निवर्तमान अधीक्षक डॉ. विनय जोशी 62 वर्ष की आयु पार कर चुके हैं। इस आयु के बाद कोई डॉक्टर प्रशासनिक पद पर नहीं रह सकता। हालांकि डॉ. जोशी चिकित्सालय में 65 वर्ष की आयु तक सेवाएं देते रहेंगे।

इन्दिरा आईवीएफ वरदान

उदयपुर। इन्दिरा आईवीएफ ग्रुप ने देशभर में अपने सेंटरों की संख्या 50 कर ली है। 48वां सेंटर बेंगलूरु के इंदिरा नगर में, 49वां कोलकाता के ठाकुरपुकर में और 50वां सेंटर हरियाणा के गुरुग्राम में आरम्भ किया गया है। ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया ने बताया कि देश में नि:संतानता/बांझपन की दर 10-15 फीसदी तक है। इस समस्या से सर्वाधिक ग्रामीण दम्पती पीड़ित हैं। उन्होंने बताया कि इन्दिरा आईवीएफ देशभर में ज्यादा से ज्यादा सेंटर खोलकर बांझपन की दर को कम करने का लगातार प्रयास कर रहा है। संतान के अभाव में अमूमन दम्पती मानसिक-भावनात्मक

तनाव में चले जाते हैं। इसके समाधान के तौर पर इन्दिरा आईवीएफ पिछले आठ साल में रिकॉर्ड 32000 परिवारों को संतान की सौगात दे चुका है।

भण्डारी अध्यक्ष, मेहता सचिव

उदयपुर। उदयपुर जिला बैडमिन्टन संघ के अध्यक्ष पद पर कमल भण्डारी निर्वाचित किए गए हैं। सचिव पद पर ललित मेहता को चुना गया। राजस्थान बेडमिन्टन संघ पर्यवेक्षक के के शर्मा, ओलम्पिक संघ पर्यवेक्षक अर्जुन राजोरा, जिला क्रीड़ा परिषद् पर्यवेक्षक रमेश माहेश्वरी व निर्वाचन अधिकारी सुखराम डिडेल की देखरेख में 8 अगस्त को चुनाव लवकुश स्टेडियम में हुए। कार्यकारिणी में कोषाध्यक्ष सुधीर बक्षी, संयुक्त सचिव योगेश पोखरना, उपाध्यक्ष राजेन्द्र गलुण्डिया, सुशील चोर्डिया, सुरेन्द्र नाहर, उमेश मनवानी, विरेन्द्र डांगी को चुना गया।

कमल भण्डारी

ललित मेहता

विद्यार्थियों व अभिभावकों का सम्मान

उदयपुर। अग्रवाल समाज के उच्चतर शिक्षा, आईआईटी, पीएचडी, सीनियर सेकेण्डरी और सेकेण्डरी मेरिट से उत्तीर्ण होने वाले 54 विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों का सम्मान समारोह पिछले दिनों हुआ। श्री अग्रसेन सहायता कोष ट्रस्ट की ओर से सार्वजनिक अग्रवाल धर्मशाला के पीपी सिंघल सभागार में विद्यार्थियों के साथ माता-पिता, भाई-बहन को मंच पर बुलाकर ट्रॉफी, सर्टिफिकेट, नकद राशि, गुलदस्ता, उपरणा व फूल-मालाओं से सम्मान किया गया। मुख्य संयोजक डॉ. आर. के. गर्ग व सचिव ओम बंसल ने बताया कि ट्रस्ट की ओर से राजस्थान के प्रथम गैस शवदाह का आठ वर्षों से संचालन किया जा रहा है और 5 करोड़ की लागत से वृद्धाश्रम निर्माण प्रारंभ किया गया है, जिसका संचालन 2020 से शुरू हो जाएगा।

जोशी का सर्वसमाज ने किया अभिनंदन

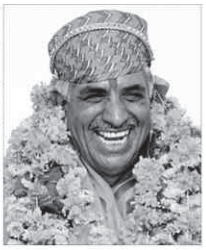

उदयपुर। जब तक इन्सान के प्रति प्रेम, सद्भाव और सहयोग का व्यवहार नहीं होगा, तब तक समाज सुधार की बड़ी बातें करना व्यर्थ है। समाज में सुधार के लिए पहले व्यक्ति को अपने कर्मों का आत्म विश्लेषण करना होगा। यह बात 12 अगस्त को मेवाड़ राजघराना के महेन्द्र सिंह मेवाड़ ने विप्र फाउण्डेशन के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मनारायण जोशी के सर्वसमाज की ओर से आयोजित अभिनन्दन समारोह में कही। उन्होंने कहा कि विप्र समाज हमेशा से समाज को शिक्षित करता आया है और उसे ही समाज में शांति और सद्भाव की शिक्षा के प्रसार का बीड़ा उठाए रखना है।

निशा भाटी चेरिटेबल ट्रस्ट का लोकार्पण

छात्रा पूजा मीणा को पुरस्कृत करते डॉ. जे.पी. मीणा व उनकी पुत्री मनीषासिंह

उदयपुर। श्रीमती निशा भाटी चेरिटेबल ट्रस्ट शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सेवा क्षेत्र में जरूरतमंदों की मदद करेगा। शिक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने वाले ऐसे विद्यार्थियों को जो आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण आगे पढ़ नहीं पाते, ब्रेस्ट कैंसर से पीड़ित ऐसी महिला और युवतियां जो पैसों के अभाव में अपना इलाज नहीं करा पाते, उन्हें ट्रस्ट आर्थिक रूप से मदद करेगा। यह घोषणा 15 अगस्त को कस्तूरबा मातृ मंदिर डॉ. आत्मप्रकाश भाटी हॉस्पिटल में आयोजित श्रीमती निशा भाटी चेरिटेबल ट्रस्ट के लोकार्पण समारोह में संस्थापक एवं चेयरमैन डॉ. जयप्रकाश भाटी ने की। इस मौके पर सुश्री पूजा मीणा को हायर स्टडीज के लिए पांच हजार रुपए तथा शकुंतला सरूपरिया को पत्रकारिता के लिए पांच हजार रुपए का चेक भेंट किया गया। मुख्य अतिथि कैंसर विशेषज्ञ डॉ. सचिन अर्जुन जैन थे। अध्यक्षता तेजसिंह बांसी ने की। इस मौके पर लक्ष्मी लाल वर्मा, शांतिलाल पामेचा, डॉ. जगदीश भाटी, विष्णु शर्मा हितैषी, विपिन गांधी डॉ. गिरिराज गुंजन ने भी विचार वक्त किए। भाटी परिवार की पुत्र मनीषा सिंह, दोहित्र आर्यन भी उपस्थित थे।

नवजात के पेट का ऑपरेशन

उदयपुर। जीवन्ता चिल्ड्रन हॉस्पिटल के चिकित्सकों ने 12 दिन के 520 ग्राम वजनी नवजात के पेट की सफल सर्जरी की। विशेषज्ञ डॉ. सुनील जांगिड़ ने बताया कि मगरौनी(मध्य प्रदेश) निवासी उमेश-मदनलाल आर्य दंपती को शादी के 29 साल बाद संतान हुई। शिशु का पेट फूलने लगा था। बारहवें दिन उसका पेट एकदम फूल गया और शरीर ठंडा एवं नीला पड़ने लगा। धड़कन व ब्लड प्रेशर भी कम होने लगे। जांच में पता चला कि उसकी आंतें फूल गई हैं और जहर पूरे शरीर में फैल गया है। डॉ. प्रवीण झंवर, डॉ. सुरेश आदि ने सफल सर्जरी की।

बड़वा जयन्ती पर पांच दिवसीय आयोजन

उदयपुर। मेवाड़ के प्रधानमंत्री रहे ठाकुर अमरचन्द बड़वा स्मृति संस्थान की ओर से बड़वा जी की 297वीं जयंती पर 24 से 28 जुलाई तक पांच दिवसीय समारोह आयोजित किया गया। जिसका आगाज शोभागपुरा-पुलां लिंक रोड स्थित ठाकुर अमरचन्द बड़वा चौराहा से रैली के रूप में हुआ। यह वाहन रैली महासतिया स्थित बड़वा स्मारक पर सम्पन्न हुई। रैली को संस्थान अध्यक्ष प्रो. के. एस. गुप्ता, डॉ. मोहनलाल श्रीमाली, नटवरलाल शर्मा और मोतीलाल शर्मा ने झण्डी दिखाकर रवाना किया। संस्थान के महासचिव डॉ. अनिल शर्मा के अनुसार 25 जुलाई को सेन्ट्रल पब्लिक स्कूल में बड़वा स्मृति चित्र कला प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। प्रतियोगिता के समन्वयक प्रो. विमल शर्मा थे। 26 जुलाई को प्रात: 8 बजे तोप माता बुर्ज पर 'सेनापति को सैनिक सलाम' कार्यक्रम आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि शौर्य चक्र सम्मानित कर्नल गोपीलाल पानेरी तथा विशिष्ट

अतिथि कर्नल महेश गांधी, वीरचक्र सम्मानित दुर्गाशंकर पालीवाल तथा नटवरलाल शर्मा थे। अध्यक्षता कर्नल गुमानसिंह राव ने की। सायं 7 बजे हाथीपोल चौराहे पर भवन निर्माण से जुड़े लोगों ने मेवाड़ के प्रथम वास्तुकार बड़वा जी को भवन निर्माण के औजारों की रंगोली पर दीपमाला प्रज्ज्वलित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। 27 जुलाई को राजस्थान कृषि महाविद्यालय प्रसार शिक्षा विभाग सभागार में 'ठाकुर अमरचन्द बड़वा : सृजनात्मक व्यक्तित्व' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पेसिफिक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. पी. शर्मा थे। गोष्ठी में प्रो. गिरिश माथुर, डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित, डॉ. देव कोठारी, डॉ. ममता पूर्बिया, डॉ. कैलाश जोशी, डॉ. हेमेन्द्र चौधरी आदि ने विचार व्यक्त किये। संचालन डॉ. अनिल शर्मा ने किया। पांच दिवसीय समारोह का समापन श्रमजीवी महाविद्यालय के सोमानी सभागार में हुआ। मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष दिनेश भट्ट तथा विशिष्ट अतिथि जमनालाल तिवारी, डॉ. मोहन श्रीमाली व नटवरलाल शर्मा थे। अध्यक्षता प्रो. के. एस. गुप्ता ने की। कार्यक्रम में चित्रकला प्रतियोगिता के विजयी विद्यार्थियों तथा संगोष्ठी में शोधपत्र वाचन करने वालों का सम्मान किया गया।

प्रतिभावान छात्रों को मिलेगी एक करोड़ 11 लाख की छात्रवृत्ति

उदयपुर। एसेंट कॅरियर प्वॉइंट इंस्टीट्यूट ने प्रतिभावान छात्रों को प्रोत्साहन देने के लिए परीक्षा एसेंट रेस-2019 की घोषणा की। निदेशक मनोज बिसारती और मुकेश बिसारती ने परीक्षा की बुकलेट परीक्षा सामग्री, पोस्टर का विमोचन एसेंट सक्षम भवन, सेक्टर 3 में किया। बिसारती ने बताया कि कक्षा 5 से 10 के साथ 11वीं एवं 12वीं विज्ञान के छात्रों के लिए एसेंट रेस का पंजीयन शुरू किया जाएगा। पंजीयन के लिए ऑफलाइन आवेदन छात्र एसेंट कॅरियर प्वॉइंट हिरणमगरी के सक्षम, समर्थ एवं सर्वथा कैम्पस में करवा सकते हैं। परीक्षा के लिए चार तारीख निर्धारित की गई है। उदयपुर में 7 अक्टूबर और 28 अक्टूबर को परीक्षा होगी। उदयपुर के आस-पास के संभागों में 16 सितम्बर और 25 नवम्बर को होगी। छात्रों की सुविधा के लिए बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सागवाड़ा, खेरवाड़ा, चित्तौड़, प्रतापगढ़, धरियावद, जोधपुर, पाली, जालोर, सिरोही, आबू रोड, राजसमंद और भीलवाड़ा के अतिरिक्त गुजरात एवं मध्यप्रदेश के कुछ शहरों में भी परीक्षा केन्द्र बनाए जाएंगे। श्रेष्ठ छात्रों को 1.11 करोड़ के पुरस्कार दिए जाएंगे। वर्ष 2019-20 के अकादमिक सत्र के लिए 100 प्रतिशत तक छात्रवृत्ति दी जाएगी।

शोक समाचार

प्रो. विजय श्रीमाली का निधन

उदयपुर। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय के कुलपति, शिक्षाविद् **प्रो. विजय श्रीमाली** का 21 जुलाई, 2018 को आकस्मिक निधन हो गया। वे 59 वर्ष के थे। यूआईटी चेयरमैन रवीन्द्र श्रीमाली के अग्रज प्रो. विजय ने पूर्व सांसद स्व. भानुकुमार शास्त्री के नेतृत्व में उदयपुर संभाग में जनसंघ और आरएसएस को मज़बूत बनाने का अथक परिश्रम किया। वे अनेक विश्वविद्यालय के प्रबंध मण्डलों में सदस्य रहे। सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के प्रबंध मण्डल में तो 11 बार चुने गए। वे श्रीमाली समाज संस्कार भवन के अध्यक्ष थे। अन्याय और शोषण के खिलाफ हमेशा उनकी आवाज बुलंद रही। वे अपने पीछे पुत्र जतिन व पुत्री श्वेता सहित भाई भतीजों का वृहद एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर राज्यपाल कल्याण सिंह मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सहित विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं ने भी गहरा शोक व्यक्त किया है।

उदयपुर। सेवानिवृत्त नर्सिंग अधीक्षक **श्री देवीशंकर जी पुरोहित(गुड़ला)** का 1 अगस्त, 2018 को गोलोकवास हो गया। वे 90 वर्ष के थे। अन्तिम समय तक वे वनवासी कल्याण परिषद् से सम्बद्ध होकर आदिवासी बहुल क्षेत्रों में नि:शुल्क चिकित्सा सेवाएं दे रहे थे। वे अपने पीछे अपने जैसे ही सेवाभावी पुत्र नरोत्तम, रमेश, कैलाश, राकेश व बसंत पुरोहित तथा पुत्रियां विद्या देवी, दुर्गा देवी व उषा देवी तथा पौत्र-प्रपौत्र, दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। लिबर्टी ग्रुप ऑफ कम्पनीज के डायरेक्टर **श्री लक्ष्मणजी मनवानी** का 1 अगस्त, 2018 को देहावसान हो गया। विकास अधिकारी के पद से सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने अपने परिवार की इस कम्पनी को आगे बढ़ाया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती पद्मा देवी, पुत्र भारत व नरेश मनवानी सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रियों का विशाल समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री गोपाल प्रसाद जी व्यास डिकेन वाला की धर्मपत्नी **श्रीमती राजकुमारी** का 28 जुलाई, 2018 को देहान्त हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पति, पुत्र चेतन, नितेश एवं पुत्री शिवानी सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई है।

उदयपुर। श्रीमती मोहन बाई(102) धर्मपत्नी स्व. कालूलाल जी नावेड़िया रामावाले का 2 अगस्त, 2018 का स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र नंदलाल व शांतिलाल तथा पुत्री श्रीमती भंवर बाई सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई है।

उदयपुर। श्री भंवरलाल जी लुणदिया साकरोदा वालों का 5 अगस्त 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र रंगलाल, जयंतिलाल, सुरेश कुमार तथा पुत्रियां कांता देवी, सरोज बेन, सरोज सिंघवी, अनिता कुमावत, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। शहर के प्रमुख उद्योगपति **श्री भगवान लाल जी साहू** का 17 अगस्त को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे पत्नी श्रीमती देऊबाई, पुत्र जमनालाल, कमलेश, चांदमल, श्याम सुन्दर एवं पुत्रियां भंवरी देवी एवं सुमित्रा सहित पौत्र-पौत्रियों एवं दोहित्र-दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। साहू के निधन पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने भी गहरा दु:ख व्यक्त किया है।

उदयपुर। श्री रोशनलाल जी लोढ़ा नाथद्वारा वाले का 6 अगस्त 2018 को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती कमला देवी, पुत्र राजेन्द्र, पुत्रियां सुमन सहदेव व संगीता कोठारी तथा पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

कृपया ध्यान दें

प्रत्यूष हिन्दी मासिक पत्रिका हमारे कार्यालय से निश्चित दिनांक पर प्रेषित कर दी जाती है, लेकिन किसी परिवार, संस्था, कार्यालय को पत्रिका नहीं मिल रही है तो कृपया मोबाइल नम्बर 75979-11992, 94141-57703 या Email id :- pankajkumarsharma2013@gmail.com पर सूचित करें।

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

हमारे अन्य उत्पाद

- डिसाइड वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
- डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
- एडवाइस वाशिंग पाउडर
- एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड डिशवाश बार
- डिसाइड डिशवाश टब
- डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड नमक
- डिसाइड बाथ सोप

AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
RIICO Industrial Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India

FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at **aadharproducts@rediffmail.com**

www.aadharproducts.in

The Gurukul School

हॉस्टल सुविधा उपलब्ध

Play Group To VIII

दी गुरुकुल कॉलेज

MLSU से सम्बद्धता प्राप्त

B.A. B.Com. B.C.A.

बालिका शिक्षा प्रोत्साहन हेतु कला वर्ग की फीस मात्र रू 11000/-

गाँव बुढ़ल, लालपुरा, कुराबड़ उदयपुर (राज.) Mo. 7610982730, 9660569205

St. Jyoti Ba Phule Public School

बस सुविधा उपलब्ध

बालिका शिक्षा प्रोत्साहन हेतु
कला वर्ग की फीस मात्र रू 11000/-

PLAY GROUP TO VIII

Jyoti Ba Phule Girls College

B.A. B.Com. B.C.A.

मादड़ी पुरोहितान, अग्निशमन केन्द्र के सामने, हाइवे बाईपास, उदयपुर Mo. 9414168050, 9772740999

दी उदयपुर अरबन को–ऑपरेटिव बैंक लि.

THE UDAIPUR URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD.

Head Office: 9C-A Madhuban, 1st Floor, Udaipur, Rajasthan – 313 004 ☎ 0294-2560783

A Leading Urban Co-operative Bank of Rajasthan

Financial Position as on 31st March 2018

Deposits – ₹ 62360.43 Lacs Loans & Advances – ₹ 28971.50 Lacs Profit before Tax – 1117.34 Lacs

Core Banking System (CBS) & Lockers available in all branches

Facilities Available at all Branches

- **RTGS-NEFT**
- NACH Facility
- **RuPay** Debit Card
- **ATMs**
- **SMS Facility**
- **Aadhar Based Payment Facility**
- PM Jeevan Jyoti Beema Yojna
- **PM Jeevan Suraksha Beema Yojna**
- **Mobile Banking**
- IMPS

Attractive Loan Schemes

- **UUCB Trade**
- UUCB Business Development
- **UUCB Housing Loan**
- UUCB Mortgage Loan
- **UUCB Vehicle Loan**
- UUCB Vidhya-Education Loan

Cash Deposit & Passbook Printing Kiosk Facility at selected branches

Vehicle Loan available at 8.50% till 31st December 2017 *T&C

Our Branches

Pannadhay Marg	☎ 0294-2421237	Krishi Upaj Mandi	☎ 0294-2481490
Dhanmandi	☎ 0294-2422276	Sukher Ind. Area	☎ 0294-2442708
Bada Bazar	☎ 0294-2420429	Ambamata Scheme	☎ 0294-2430053
Fatehpura	☎ 0294-2452780	Pratapnagar	☎ 0294-2490127
Hiranmagri	☎ 0294-2460893	Fatehnagar	☎ 02955-220316
Madhuban	☎ 0294-2423542	Salumber	☎ 02906-233250

Rajsamand ☎ 02952-224022

website: www.uucbudaipur.com

Banking, You can bank upon.

Qutbuddin Shaikh
Acting Chief Executive Officer

Fida Hussain Safy
Chairman

इन्दिरा आईवीएफ ग्रुप के 50 हॉस्पीटल पूरे होने के अवसर पर

नि:संतानता नि:शुल्क परामर्श

अपोइन्टमेन्ट के लिए सम्पर्क करें - 7665009957 / 61 / 64 / 65

50

IVF HOSPITALS

49
ठाकुरपुकुर
(कोलकाता)

50
गुरुग्राम
(हरियाणा)

शुभारंभ के उपलक्ष्य में

ठाकुरपुकुर (कोलकाता) :
545, स्ट्रीट नं. 5, वार्ड 124 डायमण्ड
हार्बर रोड, HDFC बैंक के ऊपर, PO & PS ठाकुरपुकुर, कोलकाता

गुरुग्राम (हरियाणा) :
पिजा हट के पास, सेक्टर-14 कमर्शियल मार्केट
पुरानी दिल्ली रोड, गुरुग्राम (हरियाणा)

INDIRA IVF
Fertility & IVF Centre

इन्दिरा आईवीएफ हॉस्पीटल प्राइवेट लिमिटेड

उदयपुर
44 अमर निवास, एम.बी. कॉलेज के सामने
कुम्हारों का भट्टा, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर

जयपुर
दूसरी मंजिल, मोनिलेक हॉस्पीटल,
सेक्टर–4, जवाहर नगर, जयपुर

जोधपुर
पिज्ज़ा हट के उपर,
11th C रोड, सरदारपुरा, जोधपुर

कोटा
अमन बिजनेस सेंटर, विज्ञान नगर
झालावाड़ रोड, कोटा

उपलब्ध सेवाएं : फर्टिलिटी जाँच • IUI • IVF • ICSI • लेज़र हेचिंग • ब्लास्टोसिस्ट • हिस्ट्रोस्कोपी • लेप्रोस्कोपी • डोनर सर्विसेज़

- 50 Centres PAN India
- Treatment protocol as per individual need
- Patient friendly treatment options

'बेटी बचाओ/बेटी पढ़ाओ' अभियान में सहयोग करें। भ्रूण लिंग परीक्षण करवाना जघन्य अपराध है, यह कार्य हमारे यहां नहीं किया जाता है। Prenatal Sex Determination & Sex Selection is illegal and not done here.